10, I

※ 'श्रीस्वाध्याय' भारतीय विचक्षणवर्गकी दृष्टिमें ※

'श्रीस्वाध्याय' पर भारतके प्रायः सभी गण्यमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्चराज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओंने अपना अभिमत व्यक्त किया है। कुछ विशिष्ट महानुभावोंके अभिमतका संक्षिप्त भाग गत वर्षोंके अङ्कोंमें हमने प्रकाशित भी किया था। अभी इस मासमें जिन महामान्य विद्वानोंके शुभ-सन्देश प्राप्त हुए उनमें से चार पत्र अविकल रूपमें नीचे दे रहे हैं।

पंजाब विश्वविद्यालयके उपकुलपति श्रीयुत माननीय दीवान आनन्दकुमारजी महोदय—

Vice Chancellor,
Punjab (India) University

Bud-rukhan House,
Solan 5, Oct. 50.

I have been receiving copies of the 'Shri Swadhyaya' a quarterly in Hindi and 'Shri vishvavijaya Panchang' an almanac for some years. The quarterly is very literary production and maintains his standards of scholarship.

One particular feature of the journal is the "Bhavishya Vani." One can't help being struck by the accuracy of appraisal of events of the coming quarter. The Swadhyaya deserves all the patronage that the public can give. It helps to maintain our ancient culture to a remarkable degree. Pandit Hardev Sharma Trivedi Shastri deserves to be congratulated for his labours. His almanac is well known for its accuracy.

Diwan Anand Kumar

मैं कुछ वर्षोंसे हिन्दीके त्रैमासिक पत्र 'श्रीस्वाध्याय' और 'विश्वविजय-पंचाङ्ग' को बराबर देख रहा हूँ।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रखे हुए है। पत्रमें 'भविष्यवाणी' नामसे एक स्तम्भ रहता है। इसमें आगामी तीन मासकी घटनाओंके सम्बन्धमें जो भविष्यवाणी की जाती है उनकी यथार्थतासे कोई भी पाठक विस्मयान्वित हुए बिना नहीं रह सकता। 'श्रीस्वाध्याय' को जनताका जितना भी अधिक सहयोग व समर्थन प्राप्त हो सके, वह सर्वथा उपयुक्त ही होगा। पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व सम्वर्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है। इसके सम्पादक पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी शास्त्री अनवरत श्रमके लिए धन्यवादके पात्र हैं। उनका पंचांग अपनी शुद्धता तथा प्रामाणिकताके लिए प्रसिद्ध हो गया है।

(ह०) दीवान आनन्दकुमार

वायसचान्सलर पंजाब यूनिवर्सिटी।

भारतीय संसद (लोकसभा) के सचेतक और केन्द्रीय भारत-सरकारके राज्यमंत्री श्रीयुत माननीय सत्यनारायणसिंहजी महोदय—

15, Council House,
New Delhi.
१० अक्टूबर, १९५०

पंडित हरदेव शर्मा त्रिवेदी शास्त्रीको कुछ समयसे मैं जानता हूं। ये ज्योतिषके बड़े अच्छे विद्वान् हैं। ये हिंदीमें 'श्रीस्वाध्याय' नामका एक त्रैमासिक पत्र निकालते हैं और 'श्रीविश्व-विजय-पंचांग' भी। श्रीस्वाध्यायमें एक खास खूबी यह है कि इसमें भविष्यवाणी भी निकलती है जो बहुत हद तक ठीक हुआ करती है। आजकलके समयमें जब कि लोगोंका विश्वास भविष्यवाणीमें कम हो गया है, 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' की भविष्यवाणी उनके विश्वासको दृढ़ बनाता है।

मैं हृदयसे 'श्रीस्वाध्याय' तथा 'श्रीविश्व विजय पंचांग' की शुभकामना चाहता हूं।

(ह०) सत्यनारायणसिंह

राज्यमंत्री केन्द्रीय सरकार

❀ ❀ ❀ ❀

राजस्थानके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० हनुमान् शर्माजी चौमू—

"·········इन दिनों की पत्र-पत्रिकाओंमें 'श्रीस्वाध्याय' ही एक ऐसा पत्र है जो समाचारपत्र पढ़नेके अनुरागी लिखे पढ़े लोगोंके अतिरिक्त करस्पर्श तक न करने वाले दुकानदारों, व्यापारियों और निरक्षर भट्टाचार्यों से लेकर विद्वानों तकका समानरूपेण प्रियपात्र बन गया है। यह उसके सर्वविषय सम्पन्न सम्पादन होनेका फल है। ईश्वर करे ऐसे पत्र उत्तरोत्तर उन्नत होते रहें और उसके संचालक तथा सम्पादक निरामय प्रसन्न रहें।"

(ह०) हनुमान् शर्मा

❀ ❀ ❀ ❀

भारतके ख्यातिप्राप्त साहित्यमर्मज्ञ वयोवृद्ध विद्वान् भू० पू० सौरभ-सम्पादक विद्या-वारिधि श्री पं० रामनिवासजी शर्मा ब्रजनगर—

'श्रीस्वाध्याय' वस्तुतः भारतकी अपनी आत्मा है। इसके प्रत्येक लेखमें भारत अपने वास्तविक रूपमें मिलता है। इसके सभी लेख मौलिक तत्त्वपूर्ण और अपने विषयके अनूठे होते हैं, साथ ही ज्ञान-विज्ञानके धरातलको ऊँचा करने वाले हैं। पुरातत्त्वकी भांति ही साहित्यिक गवेषणासे भी नव-नव्य तथ्योंका आविष्कार-परिष्कार इसमें रहता है।·········इसका ज्योतिष-विभाग और विशेषकर 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' स्तम्भमें राष्ट्रीय भविष्यकथनकी विद्वान् सम्पादककी अनूठी शैली सबको चमत्कृत और 'स्वाध्याय' की ओर आकृष्ट किये बिना नहीं रहती।

(ह०) रामनिवास शर्मा

श्रीस्वाध्याय

[शरदङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहीयाच्चिकीर्षु: स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष १० | सोलन, आश्विन शु० १० शुक्रवार सं० २००७ वि० | संख्या १

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

ॐ श्रीस्वाध्याय संवर्द्धनम् ॐ

[श्री १०८ स्वामी विष्णुदेवानन्द जी महाराज महामण्डलेश्वर]

प्रसादयन् धर्मभृतां मनांसि प्रबोधयन्नज्ञजनाननेकान् ।
विस्तारयन् विज्ञजनेषु कीर्तिं 'स्वाध्याय' एष प्रथतां पृथिव्याम् ॥१॥
विविधधर्मरहस्यमनावृतं विरचयन् वचनैरतिमञ्जुलैः ।
अथ च दिव्यमनागतमप्ययं कतिपयं कथयन्नतिराजते ॥२॥
हिमाचलादाविरभूद्य एष 'स्वाध्याय' नामा किल कल्पवृक्षः ।
धर्मार्थकामाञ्जनयञ्जनानां विचारधाराभिरजस्रमिन्धाम् ॥३॥

❀ दशमवर्षमें पदार्पण ❀

जगज्जननी श्री महामायाकी अपार अनुकम्पासे 'श्री-स्वाध्याय' अपनी आयुके नौं वर्ष समाप्तकर दशमवर्षमें पदार्पण कर रहा है। स्वाभाविक रूपसे बाल्यावस्थामें अनेक विघ्न बाधाएँ आया ही करती हैं। पर हिन्दी पत्र पत्रिकाओंके पावन-पयःप्रवाहके लिए मरुस्थल--प्रायः पंजाब प्रदेशमें तो किसी भी उच्चकोटिके सांस्कृतिक पत्रका पनपना नितान्त असंभव था। संभवतः 'श्रीस्वाध्याय' ही अखिल भारतीय ख्यातिप्राप्त एक ऐसा पत्र है जो पंजाबसे नौ वर्षसे निरन्तर निकल रहा है। यों तो भारत भरके विद्वान् नेता, धर्माचार्य, श्रीमन्त, साधु सन्यासी तथा सुकवि कलाकारोंका प्रोत्साहन सदा श्रीस्वाध्यायको सुलभ रहा है। इसके साथ ही पत्रको निरन्तर अभिवृद्धिका सबसे बड़ा हेतु 'श्रीस्वाध्याय'के संस्थापक बीतराग तपो-निधि श्री १०८ पूज्यपाद आचार्य अमृतवाग्भवजी महा-राजके शुभाशीर्वाद हैं। आपकी प्रबल प्रेरणामयी दिव्य शक्ति ही का यह प्रभाव एवं प्रसाद है कि 'श्रीस्वाध्याय' सरीखा स्वल्प साधन सम्पन्न पत्र उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर होता हुआ अधिकाधिक लोक प्रियता व प्रतिष्ठा प्राप्तकर आज दशम वर्षमें पदार्पण कर रहा है। आर्थिक संकट एवं महर्घताके इस भयंकर कालमें भी आजतक आपका यह प्रिय पत्र अपनी सत्ताको स्थिर बनाए रख सका इसका बहुत कुछ श्रेय सम्मान्य संरक्षक एवं सहायक वर्गको भी है। किन्तु बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि अधिकांश संरक्षकोंने कई वर्षोंसे अपनी सहायता भेजनी बन्द कर दी। बार बार लिखने पर भी उनका मौन टूटा नहीं और कुछ महानुभावोंने बचन देकर भी उसका पालन अभी तक नहीं किया है। ऐसे महान् सांस्कृतिक ज्ञानयज्ञमें एक आहुति वे लोग यदि डालते रहते तो सर्वविध राष्ट्रका हित ही था। अस्तु।

इस सांस्कृतिक यज्ञको अखण्डरूपसे चालू रखनेमें बघाटमहीमहेन्द्र राजर्षि धर्ममार्तण्ड श्री १०९ मन्महाराज दुर्गासिंह जी महोदयने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। यदि आरम्भ ही से आपकी संरक्षकताकी वरद छाया श्री-स्वाध्यायको प्राप्त न होती तो संभवतः इस पत्रके द्वारा ऐसी सेवाएं न हो पाती। एतदर्थ भारतका विज्ञवर्ग एवं श्रीस्वाध्याय परिवार उक्त राजर्षिका चिरंकृतज्ञ है। गत वर्ष से जण्डवालके रईस श्रीमान् चौ० गगनसिंहजी तथा सोलनके सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्रीमान् लाला भगवानदास जीके सुपुत्र श्रीयुत ला० शिवचरणदासजीने कुछ आर्थिक सहयोग देकर अपनी गुण ग्राहकताका परिचय दिया अतः आप दोनों महानुभाव विशेष धन्यवादके पात्र हैं।

जिन ग्राहकोंने अपना मूल्य अभी तक नहीं भेजा है, वे अब शीघ्र ही भेजनेकी कृपा करें और नये ग्राहक तथा समर्थ सज्जनोंको संरक्षक सहायक बनाकर सक्रिय सहयोग देवें तो हम शीघ्र ही इसे मासिक रूप देकर राष्ट्रकी अधिक सेवा कर सकेंगे। मासिक बनानेकी योजना आरम्भमें दी गई है।

पत्रकी उन्नति विद्वान् लेखकों और ग्राहकों पर ही अवलम्बित है, अतः हम अपने उन सभी सम्मान्य विद्वान् लेखकों और प्रेमी ग्राहकोंके भी आभारी हैं जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाएँ भेजकर तथा ग्राहक बनकर सहयोग दिया है।

'श्रीस्वाध्याय' पर इस नौ वर्षके बाल्यकालमें अनेक असह्य आपत्तियां आईं, किन्तु उन सबको साहसपूर्वक सहन करता हुआ यह अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होता रहा। देशकी परिवर्तित परिस्थितिके कारण गत तीन चार वर्षोंसे अधिकांश संरक्षक सहायकोंकी सहायता बिलकुल प्राप्त न होनेसे भयंकर आर्थिक सङ्कटमें फंस जाने पर भी हमने भगवान् श्रीकृष्णके "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु-कदाचन" इस महावाक्य पर दृढ़ विश्वास रखते हुए सेवाव्रत का निरन्तर पालन किया है और हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि जगदम्बाकी कृपासे इस दशमवर्षमें भी हम जनता जनार्दनकी सेवा अधिक अच्छे रूपमें कर सकेंगे।

विनीत—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादकीय विचार

यह कैसा परिवर्तन ?

भारतमें १५ अगस्त सन् १९४७ तक 'कांग्रेस' और 'राष्ट्रीयता' ये दोनों शब्द प्रायः पर्याय वाचक समझे जाते व जन सामान्यमें एक विशेष भावनाका संचार करते रहे। विदेशी शासनका अन्त करना ही तब तक कांग्रेसका एक सीधासा लक्ष्य था। इसी लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए विभिन्न विरुद्ध प्रवृत्तियों व रुचियों वाले विरोधी तत्त्व भी कांग्रेसके रूपमें परस्पर संगठित होकर एकाकारसे हो गये थे। अंग्रेजका प्रभुत्व समाप्त करनेके लिए सभी भारतीय सदा कांग्रेसका समर्थन ही करते रहे। कांग्रेस भी सभी प्रमुख शक्तियोंको अपने साथ रखकर ही ब्रटिश साम्राज्यसे लोहा लेनेमें सशक्त हो सकती थी। किन्तु इधरके तीन वर्षोंमें परिस्थिति सर्वथा परिवर्तित ही नहीं प्रत्युत विपरीत भी हो गई है। कांग्रेस 'राष्ट्र' से 'राज्य' का रूप ग्रहण कर बैठी। प्रजा नहीं, प्रत्युत प्रजाका एक अत्यन्त पीड़ित वर्ग 'राजा' बन गया। इस प्रकारके परिवर्तनकी क्रिया प्रतिक्रियाके परिणाम स्वरूप स्वाभाविक रूपेण नवीन प्रवृत्तियां भी प्रत्यक्ष लक्षित होने लगी हैं। कांग्रेस पार्टी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सत्ताधिरूढ़ हो गई। अतः अब उसे पहलेके समान सभी वर्गों व विचारोंके व्यक्तियों एवं संस्थाओंके सहयोगकी आवश्यकता ही नहीं रही। प्रभुत्वको पाकर सर्वविध सरकारी संचालनमें वह स्वयं ही 'प्रभ विष्णु' हो गई। 'रंक' से 'राजा' बनकर उसने जन सामान्यसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। उधर जनताने भी इस राजकीय शक्ति सम्पन्न कांग्रेसको श्रद्धा व प्रेमके स्थान पर एक भय मिश्रित उपेक्षासे देखना आरम्भ कर दिया। नासिक कांग्रेससे हमारे इस मन्तव्य का प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होता है। कांग्रेसके जीवनमें यह पहला ही ऐसा अधिवेशन हुआ जिसमें जन-सामान्य दर्शकोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। इससे दोनों बातें स्पष्ट हो जाती है, एक ओर तो कांग्रेसके सर्वेसर्वाको यह भली भांति अनुभव हो चुका था कि जनताकी उपेक्षा के कारण इस बार लाख प्रयत्न करने पर भी इस बार कांग्रेसके मेलेमें विभिन्न प्रान्तोंके लाखों नर-नारी एकत्रित नहीं हो पायेंगे। अब जनताके लिए कांग्रेसके अधिवेशन और उसके नेता नामधारी 'पंडों' के दर्शनोंमें कोई आकर्षण नहीं रह गया है। यही सोचकर इस वर्ष जन-सामान्य को निमंत्रित नहीं किया गया। इसके साथ ही अब इन शासकोंको जनतासे सीधा सम्पर्कमें आना भी अरुचिकर सा लगता था। नासिक अधिवेशनमें स्वयं सेवकोंसे कई गुना अधिक पुलिस फौज और उसके आफीसरोंकी उपस्थिति ने इस बातको और भी स्पष्ट कर दिया। यह कैसा विलक्षण परिवर्तन है ? एक समय वह था जबकि भारतके सिंह महामेधावी स्वर्गीय श्री विट्ठल भाई पटेलने भयंकर आतंक व प्रतिहिंसासे परिपूर्ण ब्रटिश राज्यके विषैले वातावरण में भी तत्कालीन एसेम्बली भवनके द्वारों परसे पुलिस का पहरा यह कहकर उठवा दिया था कि "हम जनसेवकोंको किसीसे कोई भय नहीं है, अतः इस प्रजाके भवनका द्वार सबके लिए उन्मुक्त होना चाहिए।" किंतु आज उसके सर्वथा विपरीत दरिद्रनारायणका प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करने वाली राष्ट्रीय महासभा नामधारिणी कांग्रेसका अधिवेशन ही पुलिस और फौजके कड़े पहरेमें हो रहा है। इस अपूर्व परिवर्तनको देख कर कौन आश्चर्यान्वित होकर अवाक् नहीं हो जायगा। श्री पं० नेहरूजी यह घोषणा करते करते नहीं थकते कि इन परिवर्तित परिस्थितियोंमें भी बिना रत्ती भर टससे मस हुए अपने पुराने आदर्शोंसे चिपटे रहना चाहिए। क्या कांग्रेसका यही प्राचीन आदर्श है ? हम तो समझते हैं कि साम्प्रदायिक दृष्टिकोणके अतिरिक्त कांग्रेसमें शेष सब कुछ ही परिवर्तित हो गया है। बात तो यह है कि शक्ति व वैभवको पाकर प्रत्येक व्यक्ति आत्मीयजनोंके प्रति भी संदेह शील हो जाया करता है। तदनुसार कांग्रेसके सर्वेसर्वा भी अपने विश्वस्त कुछ इने गिने व्यक्तियोंको छोड़कर शेष सब अपने सहयोगियोंको पराया समझने लगे हैं। आवश्यकताके समय तो वे लोकमान्य तिलक, श्री लाला लाजपतराय व महामना मालवीय

जी सरीखे भारतीय संस्कृतिके परमोपासक हिन्दू तत्त्व प्रधान नेताओंको भी बड़े-से-बड़े पद पर प्रतिष्ठित करनेमें भी गौरवका अनुभव किया करते थे। पर अब सत्ताको हस्तगत करते ही वे राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन सरीखे तपे हुए कांग्रेस-निष्ठ नेताका भी प्रधान-पद पर आसीन होना सह नहीं सकते। एड़ी चोटीका पसीना एक कर विरोध करने पर भी जब उनकी एक न चली, और टण्डनजी एक भारी बहुमतसे निर्वाचित हो गए तो उनके विरुद्ध खुला विद्रोह खड़ा करनेमें भी कोई कसर नहीं उठा रखी गई। यह तो टण्डनजीकी अवसरको पहचानने वाली दूर दृष्टि व गांधी वादी समझौता नीतिका ही परिणाम व प्रसाद है कि नासिक कांग्रेसमें ऐतिहासिक विस्फोट होते होते बच गया। अन्यथा अब तक कांग्रेस व उसके साथ ही साथ समग्र देशका भविष्य न जाने कौन सा रूप ग्रहण कर बैठता।

वैभवकी प्राप्तिका दूसरा अनिवार्य परिणाम है पारस्परिक वैमनस्य। यह तो त्रिकालासंभव है कि प्रत्येक व्यक्तिको समकालमें ही समान रूपसे सत्ता जन्य वैभव व ऐश्वर्य प्राप्त हो जाय। फलतः वैभवसे वंचित वर्ग विद्रोह कर बैठता है। परिणाम स्वरूप कोई भी रीति नीति फलवती नहीं हो सकती। मतभेद तो पहले भी कांग्रेसमें रहे अवश्य थे। पर वे मतभेद सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर आधारित होते थे। तबके कांग्रेसजनोंमें पारस्परिक ईर्ष्या होती थी जनसेवाके बल पर तपःपूत होनेके लिए। किन्तु, तीन वर्ष पूर्वका सेवक स्वामी बनते ही पद पानेके प्रयत्नमें पारस्परिक वैमनस्यसे परिपूर्ण हो उठा है। पंजाब, बंगाल, मद्रास, मध्यभारत, राजस्थान आदि प्रान्तोंमें जो प्रति दिन मन्त्रिमण्डलोंमें परिवर्तन होते रहते हैं क्या उनका कारण सैद्धान्तिक मतभेद है? कदापि नहीं। बात तो यह है कि कांग्रेसका प्रत्येक 'नेता' नामधारी प्राणी तत्काल मन्त्रिमण्डल पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना चाहता है। फलतः शासनचक्र डाँवाडोल सा बना रहता है। कांग्रेसजनों या यों कहें कि शासकदलमें ही जब इस प्रकारकी आपाधापी पड़ी हुई हो,तो नीचेके कर्मचारी पदाधिकारी आफीसर तो जो कुछ भी कर डालें वही थोड़ा है। कांग्रेसके इस आन्तरिक असमंजसने भारतीय शासन चक्रको विशृंखला बना रखा है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। ऐसा लगता है कि यह जर्जर नौका अभी भग्न हुआ ही चाहती है। इस संस्थाके पुराने विज्ञ विद्वान् प्रधान डा० पट्टाभि सीतारमय्याने तो अपना समय ज्यों त्यों पारकर सचमुच ही सुखकी सांस ली और साथ ही इसके संदिग्ध भविष्यकी स्पष्ट सूचना भी दे दी।

यह तो हुई कांग्रेस और उसकी शासन रीति नीति की बात। अब हमें रंचक प्रजा पक्षकी भी परीक्षा करनी चाहिये। शासक दलके प्रति असन्तोषका ही दूसरा नाम प्रजातन्त्र है। राज्यतन्त्रमें प्रजा राजासे कभी कभी असन्तुष्ट हो जाया करती है और उसका प्रतीकार भी यथावसर यथानुरूप ही होजाया करता है, पर 'प्रजातन्त्र' में तो प्रजाको सन्तोष क्वचित् ही सम्भव है। शासनारूढ़ पार्टीके प्रति विक्षोभका बना रहना एक नियम सा है। और जनता सदा नई पार्टीका प्रभुत्व चाहती है। तदनुसार हमारे यहां भी वर्तमान शासक पार्टी कांग्रेसके प्रति सामान्यतया जनतामें एक प्रकारका असंतोष सा है ही। और वह चाहे कोई भी पार्टी पदारूढ़ हो जाय, बना ही रहेगा। अपनी ही सरकारके प्रति जनतामें जो एक प्रकारका असंतोषसा दिखाई देता है, उसके कारणका विश्लेषण करते हुए हम देखते हैं कि—

१. शरणार्थी समस्या
२. व्यापक मंहगाई
३. भ्रष्टाचारकी वृद्धि
४. पाकिस्तान परस्ती
५. साम्यवादियोंके घातक हथकण्डे

आदि इस असन्तोषके मुख्य कारण हैं। सरकार इन सब कारणोंको जानती है और इनका निराकरण करना भी चाहती है, पर कर नहीं पाती। शरणार्थियोंको पूर्ण रूपेण संतुष्ट करना उसकी शक्तिके बाहरकी बात दिखाई देती है। व्यापक मँहगाई और भ्रष्टाचार वास्तवमें एक ही चित्रके दो पक्ष हैं। बात तो यह है कि जनताको कष्टोंकी अपेक्षा सरकारके प्रतिरोष अधिक है। क्योंकि यह प्रजाकी पुकारको अनसुनी करके सदा पाकिस्तान और उसके समर्थक भारतीय मुसलमानोंके साथ अनावश्यक रूपसे अत्यन्त उदार व्यवहार करती है और कम्यूनिस्ट कार्य-

बाहियोंकी रोकथामके लिए कोई दृढ़ पग नहीं उठाती। शासकोंका यह कथन कि "दूसरी सरकारके साथ सम्बन्ध निर्धारण करनेका कार्य जनताको अपने हाथमें नहीं लेना चाहिए, अतः पाकिस्तानियोंके प्रति जैसी चाहे नम्र नीति हम बर्तते रहें जनताको उसमें कुछ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।" कुछ भी अर्थ नहीं रखता। क्योंकि जो देश यहांकी जनताके सुख साधनोंमें कोई प्रत्यक्ष बाधा उपस्थित नहीं करते उनके साथ हमारी सरकार जैसे चाहे राजनैतिक सम्बन्ध रख सकती है। जनता उसके लिए सरकार को कभी किसी प्रकार बाध्य नहीं करती। 'इजराइल' को संसार के बहुमत और राष्ट्र-संघके स्वीकार कर लिए जाने पर भी भारतने मध्यपूर्व अरब राष्ट्रोंको प्रसन्न रखनेके लिए ही एक लम्बे समय तक मान्यता नहीं दी। जनता ने भी इस सम्बन्धमें कभी कुछ नहीं कहा। पर पाकिस्तान का प्रश्न तो भारतीय प्रजाको प्रतिदिन पीड़ित करता रहता है। उनके साथ हो रहे दया व्यवहारको भला कैसे सहा जा सकता है? और जनताको उसके लिए कब तक चुप रखा जा सकेगा? जनता जानती है कि संक्रमणकाल या नवनिर्माणकालमें आरम्भमें अनेकविध कष्ट सहने ही होते हैं। किसानको पहले तो अपने सब बीज मिट्टीमें मिलाकर गला देने पड़ते हैं, फिर अत्यन्त कठिन परिश्रम के साथ तप-कष्ट सहन करना पड़ता है। फिर जाकर कहीं उसे फल प्राप्त होता है। तदनुसार जनताको भी कष्ट सहनसे घबराना नहीं चाहिए और वह इसके लिए प्रस्तुत हो भी सकती है, पर जनताको सर्वविध कष्ट सहन करनेको उद्यत करनेके लिए आवश्यक है कि शासकवर्ग उसकी भावनाओंका आदर करना सीखें। किंतु इस समय तो जनताकी भावना पर व्यक्तिकी शक्ति ही प्रभुत्व पूर्ण है अतः अभी तो दिल्ली दूर ही दिखाई देती है।

भारतका मुकुट काश्मीर

'काश्मीर' शब्दके श्रुतिगोचर होते ही सहृदयके हृदयमें एक अपूर्व भावशबलताका संचार हो उठता है। विश्व शोभाके शृंगार, गुणोंके आगार, विद्याके भण्डार, विलासियोंके क्रीड़ागार, भारत हृदयके सार इस काश्मीर के भविष्यकी ओर सारा संसार उत्सुकता भरी आंखोंसे निहार रहा है। उसके भविष्यका विचार आते ही मनमें अनेक प्रकारके संस्कार साकार हो उठते हैं। कुछ ही वर्ष पूर्व जो संसारका विहाराराम था, वही आज अनेक आन्तरिक और बाह्य अत्याचारोंका शिकार बनकर भारतीय परिवारोंके आचार विचार व संस्कारोंका संहारस्थल बन रहा है।

इस समय सामान्यतया काश्मीरका नाम लेते ही सारे संसारका ध्यान बाह्य पाकिस्तानी सरकारके आक्रमण जन्य अत्याचार व उसके प्रतिकारकी ओर ही जाता है। पाकिस्तानी आक्रमण व अत्याचारके वास्तविक सूत्रधार तो 'एंग्लो अमेरिकन' परिवार ही है। वह पाकिस्तानकी सरकारको पुचकार पुचकार कर प्रोत्साहित कर रहा है। सुरक्षापरिषद्को इस प्रश्न पर विचार करते करते लगभग तीन वर्ष बीत गये पर अभी तक पाकिस्तानके अत्याचार को रोकनेका कोई सफल प्रयत्न तो दूर रहा उल्टे चोर को भी साहूकारके समानान्तर ला बैठाया है। भारत व पाकिस्तान दोनोंको एकसे अधिकारका प्रचार किया जा रहा है। यह तो भाग्यसे एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय घटनाने सहसा उपस्थित होकर इस 'एंग्लो अमेरिकन' परिवारको यत्किंचित न्याय पक्षके आधार पर विचार करनेके लिए बाध्य कर दिया। अन्यथा दक्षिणी कोरिया पर कम्युनिस्टोंके करारे प्रहारसे पूर्व तो सुरक्षा परिषद् या उसके द्वारा नियुक्त कमीशनोंका कोई भी सदस्य पाकिस्तानको 'आक्रान्ता' तक नहीं कहना चाहता था। पर जब अमेरिकाको स्वयं आंच लगी—अमेरिका अधिकृत कोरियाको साम्यवादियोंने चुपचाप ही अपने अधिकारमें कर लेना चाहा तो इधर काश्मीरके सम्बन्धमें भी प्रत्यक्ष सत्यको इतनेसे अंशमें स्वीकार करनेके लिए बाध्य होना पड़ा कि पाकिस्तानने काश्मीरमें अपनी सेनाओं का प्रवेश कराकर अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंके विरुद्ध कार्य किया है। फिर भी स्पष्ट शब्दोंमें उसे आक्रमणकारी अथवा अपराधी अतएव दण्डका अधिकारी नहीं कहा गया और न उसके विरुद्ध कोई क्रियात्मक पग उठानेके लिए ही कहा गया। इसके विपरीत यह कह दिया गया कि इनको आपसमें निपट लेने दो। यह तो ऐसी बात हुई कि कोई डाकू किसीके घर पर डाका डाल दे, लूट खसोट कर

नष्ट-भ्रष्ट करदे और उसके घरके एक भाग पर अपना अधिकार भी जमा ले। इस पर पीड़ितकी पुकारको सुन कर न्यायाधीश यह कह दे कि 'यह तो ठीक है कि तुम पर आक्रमण कर इसने ठीक नहीं किया, पर अब हम इसे कुछ कह नहीं सकते तुम आपसमें निपट लो' यदि सुरक्षा परिषद् अपराधीका अपराध स्वीकार करती हुई भी कुछ कहने तकका साहस नहीं रखती तो ऐसी ढोंगी और निकम्मी संस्था के बने रहनेकी क्या आवश्यकता है और क्यों भारत उसको सहयोग देता रहे। क्या इसी दब्बू विदेशी नीतिके भरोंसे हमारे प्रधान मन्त्री पं० नेहरू विश्व के इन लुटेरोंसे भारतकी रक्षा कर सकेंगे? यदि सुरक्षा परिषद् और राष्ट्रसंघ अपनी सत्यता और निष्पक्षता प्रमाणित करना चाहता है तो जैसा कि शेख अब्दुल्लाने कहा है सुरक्षा परिषद्को पाकिस्तानके साथ भी तत्काल वही व्यवहार करना चाहिए जो कोरिया के साथ किया है। अन्यथा यह संस्था स्वार्थियोंका अखाड़ा मात्र ही बनी रहेगी। यह तो हुई बाह्य पाकिस्तानी आक्रमण जन्य अत्याचार और प्रतीकारकी कथा। अब हम पाठकोंका ध्यान स्थानीय सरकारके अत्याचारोंकी ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। यह एक प्रकट सत्य है कि काश्मीरमें हिन्दुओंकी ठीक वही दशा है जो पूर्वी पाकिस्तानमें योगेन्द्रनाथ मण्डलने पाकिस्तान मंत्रिमण्डलसे अपना त्यागपत्र देते हुए पूर्वी पाकिस्तानके हिंदुओंके लिए जिन शब्दोंमें जो तीन मार्ग शेष बताए हैं ठीक उन्हीं शब्दोंमें वे ही मार्ग हमारे एक सहयोगी मित्रने अपने व्यक्तिगत पत्रमें काश्मीरी हिन्दुओंके लिए बताए हैं। वे लिखते हैं कि—

"काश्मीरकी दशा प्रतिदिन बिगड़ रही है। शेख अब्दुल्लाकी गवर्नमेंण्ट कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं कर रही। केन्द्रकी सरकार किसी प्रकारका हस्तक्षेप करती नहीं। मृच्छकटिकमें जिस प्रकार 'पालक'के शासनका वर्णन आता है वैसा ही शासन इन दिनों काश्मीरमें चल रहा है।... हिन्दू नवयुवक तो सभी देश त्याग कर रहे हैं।...... पहले तो हिन्दुओंको नौकरी मिलती ही नहीं, यदि मिले भी तो अयोग्य और अमानुष लोगोंकी अधीनता करनी पड़ती है। तिस पर भी नौकरीसे गुजारा नहीं चलता। ग्रामोंमें रहने वाले हिंदुओंकी दशा अधिक शोचनीय है। वहांके हिन्दू भूमि पर गुजारा करते थे या व्यापार आदि किया करते थे। भूमि तो काश्तकारोंको दी जा रही है और व्यापार सारा सरकारने अपने हाथमें ले लिया है। नए कानूनके अनुसार ऋणदाता किसीसे रुपया मांग नहीं सकता। यदि दूकानदारसे किसीने माल उधार लिया है, उससे भी वह मूल्य नहीं मांग सकता। सब प्रकारसे वृत्ति-च्छेद हो रहा है। नागरिक नवयुवक तो कुछ पढ़े-लिखे होते हैं, वे देश त्यागकर गुजारा कर सकते हैं पर ग्रामोंके अपढ़ लोग तो बाहर जाकर भी कुछ नहीं कर सकते। वे या तो धर्मभ्रष्ट होकर गुजारा कर सकते हैं या दारिद्रय में धीरे-धीरे नष्ट हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देशमें आर्य संस्कृति अधिक देर ठहर नहीं सकती। चारों ओर एक हिन्दी पाकिस्तानकी झलक दीख पड़ती है। सरकार में चोरी घूंस स्वार्थ आदि दोष इतने बढ़ रहे हैं कि सारी प्रजा संत्रस्त हो रही है। मुसलमान भी ऐसी परिस्थितियोंसे तंग आ रहे हैं।"

यह है काश्मीरकी आन्तरिक स्थितिका चित्र। भारत की राज्यभाषा 'हिन्दी' का तो वहां पाकिस्तानसे भी बढ़कर मूलोच्छेद किया जा रहा है। इस प्रकार स्पष्ट सिद्ध होता है कि काश्मीर की वर्त्तमान सरकार सर्वथा अयोग्य, भ्रष्टाचार एवं साम्प्रदायिक पक्षपातसे पूर्ण कट्टर मुस्लिम पन्थी सरकार है। उसमें पाकिस्तान व भारत दोनोंके दुर्गुण द्विगुणित होकर फलफूल रहे हैं। किन्तु इधर बाह्य विभीषिका इतनी भीषण है कि उक्त आन्तरिक घातक विकारोंकी ओर किसीका ध्यान ही नहीं जाता। क्या यह आशा की जाय कि हृदयको कम्पा देने व चित्तको चकित कर देने वाले ये तथ्य भारतीय जनता व शासकोंकी आंख खोल सकेंगे। शासकवर्ग से किसी प्रकारकी आशा रखना तो दुराशा मात्र है। क्योंकि क्या काश्मीरकी शेख अब्दुल्लाकी सरकार और क्या भारतीय नेहरू गवर्नमेंट, दोनोंही राजनैतिक स्वार्थ साधनके मोहजाल में पड़कर जनहितकी ओरसे आंखों पर पट्टी बांधे हुए हैं। वे देखकर भी कुछ देखते नहीं। ऐसी दशा में भारतीय जनताका ही यह कर्तव्य रह जाता है कि काश्मीरको भारत का पाकिस्तान बननेसे बचानेके लिए कटिबद्ध हो जाय। इसके लिये ठोस रचनात्मक कार्यक्रम क्या हो इस सम्बन्धमें

विद्वान् विचारकोंको अपने सुझाव देने चाहिएँ। यह भी विधिकी कैसी विडम्बना है कि आज 'भारतके मुकुट काश्मीर' को 'भारतका पाकिस्तान' के नामसे सम्बोधित करनेके लिए बाध्य होना पड़ रहा है।

प्रजातन्त्रका प्रारम्भ

आशा है आगामी विक्रमाब्द सं० २००८ के आरम्भके साथ ही साथ भारतमें आधुनिक प्रजातन्त्रका आरम्भ करनेके लिए नवनिर्वाचन सम्पन्न हो जाय। तब तक तो प्रजातन्त्रके नामसे व्यक्तितन्त्रका ही प्राधान्य रहेगा।

हां, तो निर्वाचन तो होगा ही, दो चार मास पूर्व हो या पश्चात् इससे कुछ प्रयोजन नहीं। पर विचारणीय प्रश्न यह है कि तब जनता अपने प्रतिनिधियोंका निर्वाचन किस आधार पर कर पाएगी। जब तक कांग्रेस अंग्रेजसे संघर्ष करती रही तब तक तो भावुक जनता आंख मीचकर कांग्रेसके पक्षमें अपना मत दे देती थी। और इस संस्था की ओरसे खड़े किए गए एक डंडेको भी सफलता मिल जाती थी। पर अब स्थिति वैसी नहीं रही। अतः जनता को आगामी निर्वाचनोंमें भावुकताके स्थान पर विवेकसे काम लेना पड़ेगा। हित और अहितके निर्णय करने वाली बुद्धिका नाम विवेक है। हमारी समझमें आगामी निर्वाचनों में मुख्य प्रतिद्वंद्विता पूर्वीय और पश्चिमीय विचारोंमें होगी। जनताको निर्णय करना होगा कि वे भारतको भारत बनाए रखना चाहते हैं या यूरोप। इसका परिणाम चाहे कुछ भी हो, अभी हम एक बात अवश्य कह देना चाहते हैं कि सर्वथा निरक्षर ऐसे कोटि-कोटि मतदाताओं से जिन्होंने अभी तक नगर पालिका या ग्राम पंचायतके चुनावका भी मुख नहीं देखा सहसा संसदके प्रतिनिधिके लिए अपना मत देनेके लिए कहना और यह आशा करना कि वे अपने मतका ठीक उपयोग करेंगे एक कल्पना मात्र है। फिर भी हम कहेंगे कि आगामी निर्वाचनोंको सफल बनानेके लिए सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा सम्बद्ध संस्थाएँ अभीसे ग्राम-ग्राममें घूमकर जनताको निर्वाचन प्रणाली के सिद्धान्त उनकी उपयोगिता आदि बताना आरम्भ कर दें। ताकि आगामी वर्ष रचे जाने वाले भारतीय प्रजातन्त्रके नाटकमें कुछ तो स्वाभाविकता व सजीवता आ जाय।

राष्ट्रभाषा हिन्दीका भविष्य

विधान परिषद् द्वारा १५ वर्षके निवासनके पश्चात् हिन्दीको राजभाषा बनानेका निर्णय हो जाने पर मानो हिन्दीका आन्दोलन सदाके लिए समाप्त हो गया। अब सभा संस्थाओंके भाषणोंके सिवा हिन्दीके लिए कोई कुछ कार्य करता धरता दिखाई नहीं देता। हमें तो भय है कि मा० टंडनजीके कांग्रेसपति बन जानेसे भी हिन्दीके हितमें विशेष लाभ होनेके स्थान पर कुछ व्यवधान ही उपस्थित होगा। क्योंकि अब तक उनकी जो शक्ति थोड़ी बहुत हिन्दीके लिए लगती थी वही अब राजनैतिक दाव पेचोंको सुलझाने में व्यय हो जाया करेगी। नेताओंकी बातको छोड़कर जनसामान्य व संस्थाओंकी ओर जब ध्यान देते हैं तो हमारी निराशा और भी बढ़ जाती है। जनता अपने दैनिक व्यवहारमें हिन्दीको अपनानेका कोई प्रयत्न नहीं कर रही। कचहरियोंमें प्रायः अभी तक अंग्रेजी उर्दूका ही बोलबाला है। यही नहीं राजस्थान, मध्यभारत आदि जिन प्रान्तोंमें पहले हाईकोर्टका कार्य हिन्दी में चलता था वहां भी अब उल्टे अंग्रेजी आरम्भ हो गई है। पिछले दिनों राजस्थानकी अनेक कचहरियोंको अंग्रेजी में ही कार्य करने के लिए मन्त्रि महोदयका विशेष आदेश हुआ था, ऐसा पत्रोंमें पढ़नेको मिला है। केन्द्रीय सरकारके व्यवहारमें तो हिन्दीका नाम भी नहीं दिखाई देता। आफिसीयल कार्यवाहीकी बात तो दूर रही राशन फार्म जैसे जनताके दैनिक उपयोगके फार्म भी हिन्दीमें नहीं छप रहे। दो चार स्थानों पर हिन्दीमें तार देनेकी व्यवस्था हो जाने पर भी पोस्ट आफिसोंमें हिन्दीके पते वाले पत्रोंके साथ दुर्व्यवहार यथापूर्व बना हुआ है। रजिस्ट्री मनीआर्डर आदि अब भी हिन्दीमें कठिनतासे लिए जाते हैं। कोई भी दैनिक पत्र हिन्दीमें पूरा पता लिखकर अपने पत्र ग्राहकोंको ठीक समय पर नहीं भेज पाता।

शिक्षा क्षेत्रमें भी अंग्रेजीका प्रचार कुछ कम नहीं हुआ। बिहारके पटना विश्व-विद्यालयने सन् ५३ से मैट्रिक में हिन्दी माध्यम स्वीकार किया था, पर वहांकी सरकारने उसे सन् ५१ से कर दिया। इस प्रकार निकट भविष्यमें उच्च कक्षाओंके लिए हिन्दीको माध्यम प्राप्त होनेकी कोई

संभावना नहीं । सुना है राजस्थान सरकार अपने पुराने कर्मचारियोंकी स्थायी नियुक्तिके लिए जो कमीशन नियुक्त कर रही है वह कर्मचारियोंसे अंग्रेजी माध्यमके द्वारा ही बातचीत करेगा । राजस्थान जैसे पिछड़े प्रान्तमें 'इण्टरव्यू' का माध्यम अंग्रेजी होगा, यह जानकर किसको दुःख व आश्चर्य न होगा । सरकारी कार्योंमें जहां कहीं प्रदर्शनके रूपमें हिन्दीको स्थान दिया भी जा रहा है, तो वहां उसकी शुद्धिकी ओर कोई ध्यान नहीं देता । देहली रेलवे स्टेशन पर ही—'कृप्या मुझे प्रयोग किजिये' 'सुचनालय' जैसे महा अशुद्ध वाक्य लिखे दिखाई दे जाएँगे, तो दूसरे स्थानोंका तो कहना ही क्या ।

इधर जनता भी हिन्दीके प्रति सर्वथा उपेक्षा दिखा रही है । बात तो यह है कि जनताकी उपेक्षाके कारण ही सरकार भी हिन्दीके प्रति उदासीन है । यदि जनतामें हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेकी रुचि जागृत हो जाय तो १५ के स्थान पर ५ ही वर्षमें हिन्दीको राज्य भाषाके पद पर प्रतिष्ठित होनेसे संसारकी कोई शक्ति नहीं रोक सकती । इसके विपरीत जनसाधारण हिन्दीको नहीं अपनाएगा और उसके लिए आन्दोलन नहीं करेगा तो सरकार १५ क्या ५० वर्षमें भी हिन्दीको राज्य भाषा नहीं बना पाएगी । अतः जनता व हिन्दी हितैषी संस्थाओंका कर्तव्य है कि वे हिन्दीके लिए अपनी सारी शक्ति लगा दें ।

विजयादशमी

वीरावलीहृदयसारसजागरायै मार्त्तण्डभैरववपुर्जगति प्रसिद्धा ।
सम्प्रेरयेदखिलराष्ट्रजनाऽवनाय सम्पादनाय विजया दशमीजयस्य ॥

वीर पुरुषोंके हृदयरूपी कमलोंको जगानेके लिए प्रचण्ड सृष्टि-स्थितिप्रलयकारी मार्त्तण्डका रूप धारण करने वाली, संसारमें अति प्रसिद्ध, यह विजयादशमी सम्पूर्ण राष्ट्र और राष्ट्रीय लोगोंके रक्षणके लिए तथा संसारमें विजय सम्पादनके लिए भली भांति प्रेरणा करे ।

—अ० वा० आचार्य

कौमुदी—महोत्सव

राका-शशाङ्क-शरदङ्क-मृगाङ्कमेत्य
स्वाध्यायमातनुत मा कुरुत प्रमादम् ।
ज्योत्स्नोत्सवोऽस्य रचयेत् कमपि प्रकाशं
श्रीराष्ट्रजीवनपथं जनजागरायै ॥

सोलहों कलाओंसे परिपूर्ण राका (पूर्णमासी) के चन्द्रमाके समान इस 'शरदङ्क' रूपी चन्द्रमाको प्राप्त कर स्वाध्याय करिए, तथा इसका विस्तार करिए, इसमें कहीं प्रमाद न करना । इस शरदङ्करूपी चन्द्रमाका यह कौमुदी महोत्सव उस अनिर्वचनीय अत्यन्त प्रकाशमान राष्ट्रको जगानेके मार्गका लोगोंको उद्बुद्ध करनेके लिए निर्माण करेगा ।

— अ० वा० आचार्य

दीपावली

दीनाऽवनीयदयनीयदशादिशाना-
मालोचनाय कमनीयदृशं दिशन्ती ।
श्रीपूजनाय निजराष्ट्रसमृद्धिवृद्ध्यै
दीपावली दिशतु शाश्वतिकं प्रकाशम् ॥

दरिद्री भिखारी लोगोंकी दयनीय परिस्थितिकी दिशाओंको विचार पूर्वक देखनेके लिए, समुचित सुन्दर कामना पूर्ण करने वाली दृष्टिको देनेवाली लक्ष्मीका पूजन करनेके लिए, अपने राष्ट्रकी समृद्धिकी वृद्धिके लिए यह दीपावली चिरस्थायी सनातन प्रकाशको देवे ।

— अ० वा० आचार्य

शैव नागार्जुन

[ले०—श्री बलजिन्नाथ पंडित शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०]



अभी तक संसारमें नागार्जुनका नाम या तो इसलिए प्रसिद्ध है कि वह बौद्धदर्शनका एक आचार्य था, या इस लिए कि वह आयुर्वेदकी रसायन विद्याको जानता था। राजतरङ्गिणीमें हमें कल्हण बता रहा है कि —

बोधिसत्वश्च देशेऽस्मिन्नेको भूमीश्वरोऽभवत्।
स च नागार्जुनः श्रीमान् षडर्हद्वनसंश्रयी ॥

अर्थ—महाराज कनिष्कके समयमें काश्मीर देशमें दो बोधिसत्व थे। एक तो महाराज स्वयं और दूसरे षडर्हद्वन (हारवन) में रहने वाले श्रीमान् नागार्जुन।

बौद्ध दर्शनके आचार्य नागार्जुनके ग्रन्थ भी हमें मिल रहे हैं। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि नागार्जुन बौद्ध दर्शनके एक बड़े भारी आचार्य थे। नागार्जुनके विचार और सिद्धांत वेदांतके बिल्कुल समीप पहुँच जाते हैं। नागार्जुनको प्रच्छन्न वेदान्ती कहा जा सकता है या गौड-पाद और शंकरको ही प्रच्छन्न बौद्ध कहा जा सकता है। इतनी कुछ समता दोनोंमें है। दोनोंके सिद्धांतोंमें जो अन्तर है वह बहुत सूक्ष्म है। सूक्ष्मदर्शी विद्वान् और अनुभवी महापुरुष ही बौद्धोंके शून्यवाद और वेदान्तके ब्रह्मवादमें भेदको समझ सकते हैं।

नागार्जुनकी रसायन विद्याकी कथाएं बहुत मिल रही हैं। परन्तु इस विषयमें कोई दृढ़ प्रमाण नहीं मिल रहा है। हो सकता है कि आयुर्वेदका मर्मज्ञ नागार्जुन और हो और दार्शनिक नागार्जुन उससे भिन्न हो। महाराज कनिष्कके समयमें आयुर्वेदशास्त्र बहुत उन्नति पर था। हो सकता है कि एक ही नागार्जुन आयुर्वेद और दर्शन-विद्या दोनोंका मर्म जानता हो। नागार्जुनको कोई लोग दाक्षिणात्य मानते हैं, परन्तु कल्हणने उसे श्रीनगरके समीप डलझीलके तट पर हारवन ग्रामका निवासी माना है।

इस लेखमें पाठकोंको एक ऐसे नागार्जुनका परिचय दिया जाएगा जो न तो शून्यवादी बौद्ध ही था और न रसायनशास्त्रज्ञ ही था। वह तो स्वातंत्र्यवादी शैव था। यह नागार्जुन एक सिद्ध था और उस सम्प्रदायका अनु-यायी था जिसे आचार्य सोमानन्द और वसुगुप्तने काश्मीर में चलाया। इसे त्रिक् सम्प्रदाय या काश्मीरिक शैव-सम्प्रदाय कहते हैं। यह दक्षिणके पाशुपत सम्प्रदायसे भिन्न है। पाशुपत द्वैत शैव सम्प्रदाय है, परन्तु सोमानन्द-का सम्प्रदाय पूर्ण अद्वैत सम्प्रदाय है। इसीके साथ हमारे नागार्जुनका सम्बन्ध है।

हमें नागार्जुनके दो ग्रन्थोंकी हस्तलिखित प्रतियां मिली हैं। एक का नाम है "चित्त संतोषत्रिंशिका" और दूसरे का नाम है "परमार्चन त्रिंशिका"। दोनोंमें तीस-तीस पद्य और एक-एक उपसंहार श्लोक है। दोनोंके अंत पर "इति महामाहेश्वराचार्य नागार्जुन विरचिता ..." इस प्रकारके शब्द हैं। दोनोंके उपसंहार श्लोक ये हैं—

निरावरणचिद्-व्योम परमामृत निर्भरः।
नागाभिधो व्यधादेनां चित्तसन्तोषत्रिंशिकाम् ॥
अनवच्छिन्न चिद्-व्योम परमामृतबृंहितः।
नागाभिधो व्यधादेनां परमार्चनत्रिंशिकाम् ॥

'निरावरण चिद्व्योम' और 'अनवच्छिन्न चिद्व्योम' शब्दोंसे इसने यह बताया है कि वह आचार्य सोमानन्दके मार्ग पर चल रहा है।

नागार्जुन केवल सिद्ध और शैव आचार्य ही नहीं है, एक प्रतिभाशाली कवि भी है। इसकी दोनों पुस्तकोंको काव्य भी कहा जा सकता है और शास्त्र भी। इनको दार्शनिक काव्य कहना अधिक उचित होगा। अब दोनों में से कुछ एक पद्योंको यहां दे देते हैं, जिससे पाठक

समझ जाएं कि नागार्जुनके सिद्धान्त क्या थे और इनमें कवित्व शक्ति कितनी थी।

चित्तसन्तोषत्रिंशिका उन्होंने तब लिखी है जब ये जीवन्मुक्त दशा पर पहुंचे। इस दशामें अपने चित्तकी अवस्था की तुलना बन्धनकी दशाके साथ कर रहे हैं कि पहले बन्धनकी अवस्थामें मेरा चित्त कैसा था और अब प्रत्यभिज्ञाकी अवस्थामें इसकी दशा कैसी है—

यत्नेन वांछितमनल्पविकल्पजाल-
विघ्नैस्तिरस्कृतमवाप न यत् प्रवेशम्।
दुर्भेदभग्नविषमार्गलभिन्न मार्गं
चेतस्तदद्य रमते शिवमन्दिरान्तः॥

अर्थ—जो चित्त पहले शिवके मन्दिरमें प्रवेश करना तो चाहता था, परन्तु अनेक विकल्पोंके जाल विघ्न बन कर उसे भीतर जाने नहीं देते थे; उसी चितने इन कठोर और दृढ़ अर्गलोंको छिन्न-भिन्न कर दिया और उसका मार्ग खुल गया, तो अब शिवके मन्दिरके बीचमें आनन्द से खेल रहा है। यह शिवका मन्दिर जीवन्मुक्त दशा है जिस दशामें जीवको साक्षात्कार हो जाता है कि "मैं शिव हूं।"

कन्दर्पबाण विषमं हरिणेक्षणाभिः
पीतं हृतं कवलितं मुषितं यदासीत्।
तत् पात्रतामुपगतं परमोक्षलक्ष्मी—
प्रेमामृताप्लुतकटाक्षपरम्पराणाम्॥

अर्थ—जो चित्त पहले कामदेवके बाणोंसे पीड़ित हो रहा था और जिसे सुन्दर स्त्रियां वश कर रही थीं; कोई तो जिसे पी गई थी, कोई मार ही गई थी, किसीने जिसे ग्रास कर लिया था और किसीने चुरा ही लिया था; उसी चित्तको अब सर्वोत्तम सुन्दरी मोक्ष-लक्ष्मी प्रेमामृत से भरे नेत्रों द्वारा लगातार कटाक्ष करती रहती हैं।

आचार्य उत्पलदेव शिवस्तोत्रावलीमें कहते हैं—

न योगो न तपो नार्चाक्रमः कोऽपि प्रणीयते।
अमाये शिव मार्गेऽस्मिन् भक्तिरेका प्रशस्यते॥

अर्थ—इस शिवमार्ग में एक अद्वैत भक्तिकी प्रशंसा की जाती है। यहां योग, तप, बाह्यपूजा आदिका आदर नहीं किया जाता। क्योंकि योग आदि मायामय उपाय हैं। हमारा मार्ग मायासे रहित है।

ठीक इसी प्रकारके भावको नागार्जुन इस पद्यमें प्रकट कर रहे हैं—

क्लिष्टं यदेतदभवज्जप कष्टयोग—
प्राणप्रवाहविनिरोध कदर्थनाभिः।
चेतस्तदद्य परमामृतसामरस्य—
संजातसम्मदरसासवमत्तमास्ते॥

अर्थ—जिस चित्त को पहले जप, प्राणायाम, आदि कठिन योगोंकी विडम्बनाओंसे पीड़ा हो रही थी, वही चित्त अब परमेश्वररूप अमृतमें एक होकर समरसता को प्राप्त करके एक अपूर्व आनन्दमें मग्न होकर मस्ती में बैठा है।

परमार्चन त्रिंशिकामें पारमार्थिक अद्वैतपूजाका वर्णन है। यह पूजा शैव शास्त्रकी भावना और समावेशकी दशा ही है और कुछ नहीं। देखिये एक पद्यमें कहते हैं—

विश्वसंहृतिरसैकतत्परो,
लेलिहानरसनाकुलो यमः।
यत्र चिच्छिखिशिखासु हूयते
लीलयैव न किमेतदर्चनम्॥

संसारको संहार करने में ही लगे हुए और चाटती हुई चंचल जिह्वाका व्यापार करते हुए महाकालको भी जहां संविद् अग्निकी ज्वालाओंमें अनायास ही आहुति बना कर स्वाहा नहीं किया जाता वह पूजा कौनसी पूजा है, अर्थात् वह सच्ची पूजा नहीं।

अद्वैत पूजाके द्वारा उदान ज्योतिके स्पर्शसे प्राप्त हुई तुर्य दशाका वर्णन इस पद्य में है—

स्तब्धमन्थरमनोहरेक्षणः
प्रोल्लसत् पुलकलम्बिताननः।
मध्यमां भुवमनल्प सम्पदं
यत्र नाश्रयति किं तदर्चनम्।

अर्थ—जिस पूजा में पूजकके नेत्र निश्चल शिथिल और मनोहर न बनें, मुख रोमांचोंके उल्लाससे भर न जाए और परापर विभूतियोंसे भरी हुई तुर्य दशाकी प्राप्ति न हो, जोकि मध्यम ऊर्ध्व मार्गमें जाने वाले उदान वह्निमें ठहरनेसे प्राप्त होती है; वह पूजा पूजा नहीं।

अद्वैत पूजा द्वारा शिवस्वरूपके साक्षात्कार का वर्णन इस पद्यमें करते हैं—

मानमेयमिति कल्पनोज्झितो
निर्विकारमनिकेतनः शिवः।
गाढ़गाढ़-व ह्यते क्षणाद्
नैव यत्र ननु किं तदर्चनम्॥

अर्थ—जिस पूजामें प्रमाण प्रमेय प्रमाकी कल्पनासे ऊपर, निर्विकार, निराश्रय भगवान् सच्चिदानन्दकन्द शिव का गाढ़-गाढ़ साक्षात्कार अनायास ही नहीं होता वह पूजा पूजा नहीं।

दोनों स्तोत्र बड़े ही सुन्दर हैं। दोनोंके सूक्ष्म विचार से यही प्रतीत होता है कि नागार्जुन सचमुच महा-माहेश्वर ही थे। हो सकता है कि शैव नागार्जुन हारवन के नागार्जुनसे भिन्न हो। या यह भी हो सकता है कि बौद्ध नागार्जुन दाक्षिणात्य ही हो और हारवनका नागार्जुन यही नागार्जुन हो तथा कल्हणने भ्रमसे इसीको बौद्ध समझ लिया हो।

इस शैव नागार्जुनने अपने विषयमें अपने नामके अतिरिक्त कुछ कहा नहीं है। शैव शास्त्रके अन्य प्रधान ग्रन्थोंमें भी नागार्जुनका कोई भी उल्लेख अभी तक नहीं मिला। इसलिए इस नागार्जुनका समय सर्वथा संदिग्ध है। देशके विषयमें भी निश्चय रूपसे कुछ कहा नहीं जा सकता। अधिक यही सम्भावना है कि यह आचार्य काश्मीरी था। क्योंकि काश्मीरमें ही इसकी पुस्तकें मिली हैं और इसके विचार काश्मीर के त्रिकशास्त्रका अनुसरण करते हैं। शिवमस्तु।

भविष्य की एक झलक !

[लेखक—श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य]

पंजाबके हत्याकांडके बाद बंगालका हत्याकाण्ड और उसके बाद आसामके प्राकृतिक विनाश, और प्रलयंकर बाढ़ोंको देखते हुए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि समय ही नहीं, प्रकृति भी हमारा साथ नहीं दे रही है। महासमरके काले बादल हमारे सर पर मंडरा ही रहे हैं, ऐसी स्थितिमें विवश होकर हमें वही स्मरण आता है कि १५ अगस्त ४७ को जिस कुसमयमें हमने इतने बड़े राष्ट्रकी बागडोर हाथमें ली है, यह बड़ी भयानक भूल ही हुई है। ग्रहोंको शासन न माने, इससे उसके परिणामोंसे तो बचाया नहीं जा सकता। कोई 'आर्सेनिक' पर विश्वास न करे तो वह प्राण नहीं ले सकता, यह सम्भव नहीं। ग्रहयोग यह कोई धार्मिक विश्वास, अथवा अन्धःश्रद्धाका विषय नहीं, यह एक स्पष्ट और प्रत्यक्ष विज्ञान है। विज्ञान की अवमाननासे उसके परिणामोंसे बचा नहीं जा सकता। ग्रहोंकी गतिविधि जानने वाला उसके विपरीत गमनागमन-युति आदिसे वातावरणकी दूषितावस्था बननेकी कल्पना कर सकता है। उसके परिणामकी परम्परा हमारे सिद्धांतोंने सूचित की है, उसकी उपेक्षा करके भी उसके शिकार हुए बिना नहीं रहते। अपनेको 'धर्मनिरपेक्ष' घोषित करने वाले स्यात् ज्योतिष जैसे प्रत्यक्ष शास्त्रको धर्म या अन्ध आस्थाकी वस्तु समझनेमें असाधारण भूल करते हैं। इस शास्त्रका अवलंबन आस्था नहीं शुद्ध ग्रहोंकी गतिविधिसे सम्बन्धित खगोल विज्ञान ही है। कोई व्यक्ति या शासन केवल पुरातन विषय होनेके कारण ही उसको विज्ञान न मान कर आस्थाका विषय समझनेकी भूल करे तो यह उसकी अज्ञानता ही कहना होगा।

१५ अगस्तके परिणामोंकी पूर्व सूचना जितनी गम्भीरताके साथ सावधानीके लिए हमने दी थी, आज उसे तीन वर्ष बीत जाने पर भी असत्य बतलानेका साहस नहीं किया जा सकेगा। देशकी जिस कारुणिक दशा होने का चित्र बतलाया था, आज उससे कौन नकार कर सकता है। इसी तरह मध्यभारत संघ बनते ही उसके अंतकी सूचना हमने प्रथम दिन की थी। ठीक उसी मासमें प्रथम मंत्रिमण्डल भंग हो गया, यह सभी इस प्रांतके निवासियोंको ज्ञात है, उसी प्रकार दूसरी बार के शासनकी दशा भी हुई, यह अनेकोंको ज्ञात है।

पिछले जुलाई मासमें ही हमने स्पष्टरूपसे बतलाया था कि आने वाले सितम्बरमें प्रस्तुत शासनकी समाप्ति हो जाने वाली है, ठीक इसी सितम्बरके अंतमें पुनः नया मंत्रिमंडल बननेका अवसर आ गया। इन स्पष्ट सत्योंमें वैयक्तिक विश्वास, या श्रद्धाका क्या प्रश्न उठता है? क्या हमारे धर्मनिरपेक्ष राज्य, विज्ञान निरपेक्ष भी बनना चाहते हैं, कि इन प्रत्यक्ष सत्योंको न मानेंगे?

अब यह षड्ग्रही अक्टूबरके मध्यमें हुई है। आगे देखें कि इससे हम किस विनाशके निकट जाने वाले हैं। शनिके कन्या राशि पर जानेके कारण भी हम देखेंगे कि हमारा यह काश्मीर क्या नया रंग लाने को है? किस तरह उस पर तबाही उतरती है। और मार्च ५१ आने दीजिये कि मन्त्री वर्गोंकी कौनसी स्थिति सामने आती है। हमारी तो स्पष्ट आशंका है कि केन्द्रीय शासनमेंसे एक महती शक्तिको उठ जाते, लोप होते देखेंगे। और देखेंगे कि प्रधानामात्य, और मुंशीजी ऊपर उठ कर चमकने लगते हैं, नई स्थितिका सामना करेंगे। नये उत्तरदायित्वको सहन करनेके लिए विवश होंगे। परिवर्तनका काल इसी अक्टूबरसे ही आरम्भ हो जाएगा, और विभिन्न शक्तियोंका समावेश होकर एक नया अध्याय भी आरम्भ होता दिखाई देगा। नया संगठन, नया स्वरूप, और नई समस्या समक्ष उपस्थित होंगी। प्रधानामात्यके लिए तो जनता अभीसे समक्ष रखे कि २०१० के बाद अत्यन्त चिन्ता उपस्थित है। उनका कार्यकाल एक प्रकारसे पूर्ण बननेकी स्थितिमें होगा। राजेन्द्र बाबू अपने कमजोर स्वास्थ्यको लेकर भी मार्चसे आगे अधिक महत्वके उत्तरदायित्वसे श्रमग्रस्त रहेंगे। विश्व-युद्ध निकट आ रहा है, समस्यायें संसार को बुरी तरह उलझाती ही हैं। एक छेदको बंद करने पर दूसरी दरार देखने का अवसर आएगा। अन्दर ही अन्दर घुटने वाली आग कभी इधरसे और कभी उधरसे फूट कर विवश करती रहेगी। और एक दिन उसका विस्फोट सारे देशको तूफानमें पटके बिना नहीं रहेगा, जबकि उसे संभालना भी सम्भव न होगा। विज्ञान पर भी विश्वास न करने वालोंको इन सब बातोंको देखनेके लिए सन्नद्ध रहना चाहिए, और ग्रहोंकी गतिविधि पर विश्वास रख कर उनके परिणामों को प्रत्यक्ष देखा करते हैं, वे तो सावधान रहेंगे ही।

———

हमारा जीवन और उसका आदर्श

[लेखकः—श्री सरयूप्रसाद जी भट्ट 'मधुमय']

हमारे जीवनका आदर्श, यह कितना परिशुद्ध वाक्य है, इसकी ध्वनि-मधुरतामें एक सन्देश प्रवाहित हो रहा है। आधुनिक वातावरणमें उक्त वाक्यका प्रयोजनीय व्यवहार कहां तक हो रहा है, यह सब समझ रहे हैं। युगानुकूल यह वाक्य-योजना भी आजके मानसे पुरानी व्यवस्था ही हो सकती है। पाश्चात्योंका अन्धानुकरण भी तो आज हमें उक्त नियम-बंधनसे दूर ले जा रहा है। जीवनके सर्वाङ्गीण वर्धनके हेतु हमें अपने जीवनोपयोगी उपकरणों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, मूलाधार ही यदि क्षीण-प्राय है, तो निर्मित भित्ती (दीवार) का अस्तित्व भी क्षीण ही रहेगा, हम अपने देशकालके अनुरूप वही पाश्चात्य आदर्श अपनावें जिससे हमारा पुरातन पूतादर्श क्षीण-द्युति न हो सके, हमारी सभ्यताका उद्गम आर्योंकी अतुल अन्वेषणकी गहराई हो है। चिरन्तन-चिन्तनका सत्व है, कृत्रिमताके परिवेष्टनमें हमारा रूप कुछ हास्यास्पदसा बन गया है। हम इस प्रकार-प्रकृतिसे कोसों दूर चले गए हैं, हमारी प्रवृत्तियां, शून्य तत्त्व रहित जगत्की ओर बढ़ रही हैं। हमारे मन-मस्तिष्कमें कोई अज्ञात नियंत्रण कर रहा है। वह अज्ञात हमारा अनुकरणका भूत है। हमारे मन मस्तिष्क में विचारको स्थान नहीं रह गया है। तब हम अपने पूर्वादर्शको समझ ही कैसे सकते हैं। व्यक्तिकी बुराई समष्टि के लिए पाप-रूप है। और वैसा ही हम कर रहे हैं, समष्टि के प्रतिनिधि अथवा प्रभावशाली, अपने पतनके पथ पर जा रहे हैं। तब समाज पतनके गर्तमें गिरनेसे कैसे बचेगा, हम स्वतन्त्र होकर भी मन मस्तिष्क और आचरण के दास बने हुए हैं। यह दोष तो हमारा ही है। हमारे विनाशकोंका नहीं। यदि हमने अपनी बौद्धिक, नैतिक, परवशता पर विचार किया होता तो मन, बुद्धिके दास हम न रहते, सर्वाङ्गीण उन्नतिके आधारों पर तो हमने पुनराघात ही किया है। ऐसी दासता पुरुष-वर्ग तक ही सीमित हो तो वैसा भी नहीं, जागृतिके नाम पर हमारा महिला समाज भी मन बुद्धिका दास है। इस प्रकार हम दासतामें आबद्ध हैं। हमारा महिला-वर्ग भी यदि मदालसा, सीता, दुर्गावती आदि आर्य-धर्म परायण वीर-प्रसवा जननियोंके शुचि आदर्शोंको मनन करता तो हमारी सर्वाङ्गीण नैतिक, मानसिक दासता बहुत शीघ्र दूर हो जाती, क्या भारतीय तरुणियां अनुकरण-प्रियताके कारण उपहासास्पद नहीं हो रही हैं। हमने अपनेको बहुरूपिया सा बना लिया है। उस बहुरूपियापनसे हम अपने समाजको ही ठग रहे हैं, धोखा दे रहे हैं। हमारा जीवन कृत्रिम साधनों-उपकरणों पर कितना अवलम्बित है? हम अपने देशके सबल, स्वस्थ्य, प्रबुद्ध नागरिक हों, क्या ऐसा हो सकेगा! आज समाजमें वर्ग-भेदकी भावना ऊंच, नीच, छोटे, बड़े, विभेदको लेकर वर्तमान है। निम्नवर्गीय लोगों को समाजमें कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। यह असमानता हमारी बढ़ती हुई कृत्रिमताकी ही है, इस जीवनमें बनावटी प्रकरणका ही अध्ययन कर रहे हैं, जिसका हमारे आदर्श से कोई मेल नहीं, इससे सामंजस्यकी पूत भावना लुप्त हो जाती है। और हम अपने आदर्शोंसे दूर चले जाते हैं। हमारा रहन-सहन आचार व्यवहार खान, पान, सभी एक अलग सभ्यतामें रंगे हुए हैं, जबकि हमारे समाजमें उसका कोई स्वागत नहीं होना चाहिए, इस बनावटीपनमें हम भारतीय सभ्यतासे च्युत तो हो ही रहे हैं, इसके अतिरिक्त हमारा शारीरिक पतन भी हो रहा है। हमारे खान, पानके लिए होटल, मेस, आदि प्रस्तुत हैं, जहां सभी खाते पीते हैं। और तब संसर्गज दोष इस प्रकार संक्रमणमें बढ़ते हैं, यह अभारतीय अशुद्ध रीति है। इसके विपरीत हमारे विशुद्ध ऋषि महर्षियोंके तत्त्व-ज्ञानमें धार्मिकतासे विशिष्ट चरित-शुद्धि और व्यवहार शुद्धिकी ही महत्ता है। आजका आकर्षक (दिखाऊ) तत्त्व-ज्ञान रहित विज्ञान हमें भले अपनी ओर आकर्षित करे पर उसके तत्त्वमें उक्त विशिष्ट-शुद्धि नहीं। आजका नव सभ्य

मानव यह कहे कि पुरातन रूढ़ि परम्परा आजके युगमें सम्भव नहीं, तो उसे ज्ञात होना चाहिए कि उसका उत्तर आजके युगमें कृत्रिमता परिवेष्टित मानवका कोई अस्तित्व भी नहीं है। नव-युगका मानव चटकीली सभ्यता-प्रिय है। परन्तु उसका आधार क्या है और वह हमारे जीवनमें कहां तक सम्भव है, इसपर विचार नहीं करता। किसी वस्तुको एकाएक अपना लेना एक साधारणसी बात हैं, परन्तु उस पर गम्भीरतासे विचारकर तत्त्व निष्कर्ष निकालना, तदनुसार नीति निर्धारण करना यही असाधारण है, और हमने ऐसा ही किया है—सदा अनुकरण तो किया है, परन्तु उस अनुकरणका तत्त्व निष्कर्ष निकालनेका प्रयत्न नहीं किया।

हमारे जीवनके लिए यह अभिशाप है। तब उसमें हमारे समाजके टुकड़े-टुकड़े होना अनिवार्य है। क्योंकि दीन-हीन त्रस्त मानव तो इन सभी आधुनिक सुखोंसे वंचित ही रहता है। तब आजके जाग्रत विश्वमें, वह ऐसी असमानता कैसे स्वीकार कर रकता है। तब फिर हमें अपने जीवन-क्रमका पृष्ठ पलटना होगा, हम अपने रहन-सहन आहार विहारादि आचरणकी पवित्रता साम्यकी भावनाओं पर दृष्टि-पात करें, क्योंकि समाजके अच्छे बुरेके, यही कुछ प्रमुख उपकरण हैं। जिनसे समाज अपने पवित्र आदर्श पर स्थिर रहकर असमानता और विनाशक अनुकरण-प्रियताका मूलोच्छेद कर सकनेमें समर्थ रहें। हमारा जीवन और हमारे जीवनका आदर्श शुद्ध भारतीय होना चाहिए।

दीपमाला का सन्देश—

विजयकी कुञ्जी—ज्ञान और कर्म

[लेखकः—श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत,- विद्यावागीश, विद्याभूषण; विद्यानिधि]

दीपमाला किसकी विजय पर मनाई जाती है? कहते हैं कि भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी विजयके उपलक्ष्यमें दीपमालाका जन्म हुआ। आजकल भी युद्धादिमें विजय होनेपर दीपमाला की जाती है; इस प्रकार जब दीपमाला विजयका परिणाम है; तब यह प्रश्न स्वभावतः उठता है कि विजय कैसे मिलती है? विजयकी कुंजी क्या है? अर्थात् विजयकी कुंजी पूछना एवं बताना ही दीपमाला का सन्देश है। आइये पाठकगण! हम आप भी मिलकर 'दीपमाला' के इस सन्देश-विजयकी कुंजी पर विचार करें।

विजयकी कुंजी—संजयने धृतराष्ट्रको संसार प्रसिद्ध भगवद्गीता के अन्तिम निष्कर्षमें बताई है। वह है—

'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ [१८।७८]

जिस पक्षमें योगेश्वर कृष्ण हैं, तथा जिस पक्षमें धनुर्धर अर्जुन है, उसी पक्षमें विजय, लक्ष्मी तथा अटल नीति हुआ करती, यह मेरी बुद्धि है। यहांपर विजयके मूलकारण योगेश्वर कृष्ण तथा धनुर्धर अर्जुन बताये गये हैं।

यहांपर किसी पक्षमें भगवान् श्रीकृष्णके रहनेसे विजयकी बात तो समझमें आ जाती है, पर उसमें अर्जुनके रहनेसे विजयकी बात समझमें नहीं आती। श्रीकृष्ण तो परमात्मा होनेसे त्रिकालमें सर्वत्र रह सकते हैं; कहीं विशेष रूपसे भी रह सकते हैं; पर अर्जुन तो मनुष्य हैं, वह अब नहीं है। तब वह अब किसी पक्षमें किस प्रकार रह सकता है। अथवा इस पद्यको केवल महाभारतके युद्धसे सम्बद्ध मानें, इसी प्रकार 'भगवद्गीता' को भी केवल महाभारत-युद्धसे सम्बद्ध मानें, तब 'भगवद्गीता' व्यापक वस्तु नहीं ठहरती। फिर उसका प्रभाव सारे संसार पर नहीं हो सकता। पर अब जब उसका प्रभाव सारे संसार पर पड़ा है, तब मानना पड़ेगा कि उसका व्यापक अर्थ भी है। वह यह है कि ज्ञान और कर्म दोनों जिस पक्षमें होंगे, उसीकी विजय भी होगी।

उक्त गीताके अन्तिम पद्यमें योगेश्वर कृष्ण ज्ञानके सजीव प्रतिनिधि हैं, तथा धनुर्धर अर्जुन कर्मके सजीव प्रतिनिधि हैं। महाभारत-युद्धमें भगवान् कृष्णने ज्ञानकी पूर्णता कर दी है। श्रीकृष्णने युद्धमें कर्मका भाग नहीं लिया, किन्तु ज्ञानका भाग लिया। उन्होंने अर्जुनको उक्त युद्धमें ऐसे कठिन समयोंसे और इस प्रकारसे बचाया है कि—इससे बढ़कर ज्ञानका उदाहरण मिलना दुर्लभ है। कर्णने ऐसा दिव्य बाण धनुष पर चढ़ा दिया था कि—जिससे अर्जुनका गला अवश्य कट जाना था, पर भगवान्‌ने घोड़ोंको इस प्रकार घुटनेके बल बैठा दिया कि रथके आगेसे झुक जानेसे छूटा हुआ बाण केवल अर्जुनके मुकुटके ऊपरसे होता हुआ निकल गया।

एक वीर घातिनी शक्तिसे कर्णने अर्जुनको अवश्य मार देना था, पर भगवान्‌ने उसका प्रयोग घटोत्कच पर करवा दिया। घटोत्कचको न मरवाया होता तो उस राक्षसने पाण्डव-पक्षके होते हुए भी अपने राक्षसी स्वभावसे पाण्डवोंको भी मार देना था। तभी तो दुर्योधन और कर्णने घटोत्कच द्वारा नाकमें दम आने पर, अर्जुनके लिए सुरक्षित रखी हुई शक्तिसे घटोत्कचको मार कर उस शक्तिको खोना स्वीकार कर लिया। पर इससे कर्ण वा दुर्योधनको प्रसन्नता नहीं हुई। घटोत्कचके मरनेसे भ्रातृ-पुत्रताके कारण युधिष्ठिरको अवश्य शोक हुआ, पर श्रीकृष्ण उस समय हँस रहे थे; यह हँसना उनके ज्ञानतत्वका परिचायक था। उन्होंने ज्ञान और कर्म (अर्जुन) को बचाना था। ज्ञान-कर्मके समुच्चय होनेसे विजय होनी थी। फलतः उक्त गीता-पद्यमें श्रीकृष्णका 'योगेश्वर' विशेषण तथा अर्जुनका 'धनुर्धर' विशेषण व्यापक अर्थ-ज्ञान-कर्मके समुच्चयसे विजयको बता रहा है। तब 'विजय'की कुंजी ज्ञान और कर्म दोनोंका सामंजस्य ही सिद्ध हुआ।

केवल 'भगवद्-गीता' ही यही बात नहीं कहती, किन्तु भगवान्‌का ज्ञान वेद भी यही कहता है कि--

अन्धं तमः प्रविशन्ति ये अविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया ँ रताः॥
(यजु० वा० सं० ४०।१२)

जो केवल कर्ममें लगे रहते हैं, वे अन्धेरेमें हैं। जो केवल ज्ञानमें रत हैं, वे उससे भी अधिक अन्धेरेमें हैं। 'अविद्या' कर्मका नाम इसलिए है कि इसमें बिना सोचे-विचारे दूसरेकी कही बात पर चलना पड़ता है। ज्ञानका नाम 'विद्या' तो स्पष्ट है। अस्तु।

वेदका उक्त कथन भी ठीक है। कर्मिष्ठ यद्यपि अज्ञानमें रहते हैं, तथापि केवल ज्ञानियोंसे वे अधिक लाभमें रहते हैं। आजकल मुसलमान जाति केवल कर्म-तत्पर हैं, और हिन्दू-जाति केवल ज्ञान-प्रवण है। उक्त बात दोनोंमें घटा लेनी चाहिये। इस प्रकार वेद केवल कर्मपरककी तथा केवल ज्ञानपरककी हानि बताकर ज्ञान-कर्म दोनोंका समुच्चय स्वीकार करता है। जैसे कि—'विद्यां चाविद्यां च' (यजुः ४०।१४) यहांपर कर्म (अविद्या) द्वारा संसारका पार करना बताकर ज्ञान (विद्या) से मुक्तिका प्राप्त होना कहा है।

इसी कर्म और ज्ञानको सब व्यवहारों—शास्त्रीय वा लौकिकोंमें घटाइये, घट जाएगा, और विजयका कारण सिद्ध होगा। हां, कर्म चाहिये बहुत. और ज्ञान हो उसकी अपेक्षा कम। हिन्दूधर्म-सनातनधर्मको ही ले लीजिए, इसमें ७५ वर्ष तक कर्मकाण्डकी उपासना कही है। शेष २५ वर्ष ज्ञानकाण्डके लिए रखे गये हैं। इसीसे अभ्युदय एवं निःश्रेयसकी सिद्धि कही गयी है। वेदके एक लाख मन्त्र माने गये हैं। उसमें अस्सीहजार कर्मकाण्ड, सोलह हजार उपासनाकाण्ड, चार सहस्र ज्ञानकाण्ड रखा गया है। हमारा यज्ञोपवीत ९६ चव्वेका बनाया जाता है। उसे ७५ वर्ष तक—कर्म-उपासना तक पहिरा जाता है। संन्यासाश्रममें उसे छोड़कर ४ सहस्र ज्ञानकाण्डके मन्त्रोंका क्रम प्राप्त होता है। इस प्रकार करनेसे ऐहिक सुख तथा पारलौकिक सुख प्राप्त होता है।

कर्मसे ज्ञानको थोड़ा रखना पड़ता है। पर इससे ज्ञान निम्न नहीं हो जाता। ज्ञान कर्मकाण्डकी अपेक्षा चाहिये भी कम ही। युद्धोंमें सेना 'कर्म' होती है, सेनापति 'ज्ञान' होता है। सेनाकी अपेक्षा सेनापति होते भी कम ही हैं। यदि सारी सेना सेनापति हो जाय, तो पराजय भी अवश्य हो जाय। लोकमें भी कर्मनिष्ठोंकी अपेक्षा

ज्ञानियोंके अधिक होनेपर 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' के अनुसार किसीकी सम्मति परस्पर न मिलनेसे वे जनताको एक पथ पर चला भी नहीं सकते, जिससे अव्यवस्था होकर पराजय निश्चित हो जाती है। इस प्रकारके कर्म और ज्ञानके समुच्चयका पाण्डव सेनामें सामंजस्य होनेसे ही उनकी न्यून संख्या होनेपर भी विजय हुई। कौरव सेनामें कर्म ही था ज्ञान नहीं, अतः उनकी अधिक संख्या होनेपर भी विजय नहीं हुई।

युद्धोंमें शस्त्रबल वा सेनाबल 'कर्म' होता है, नीति-पालिसी 'ज्ञान' होता है। जिस पक्षमें दोनोंका सामंजस्य हुआ करता है, वहीं विजय हुआ करती है। केवल पालिसी वाला पक्ष तथा केवल युद्धदक्षता विजयके कारण नहीं हुआ करते। अब इसे परीक्षोत्तीर्णता आदिमें घटाइये। अध्ययनके समय जो पाठ कण्ठाग्र किया जाता है जिसे घोषण वा घोखा-घोटा कहा जाता है, यह 'अविद्या' या 'कर्म' है। इसमें जो 'समझ' रखी जाती है वह 'ज्ञान' है। जिसमें दोनों होंगे, वह परीक्षोत्तीर्णता रूप विजय प्राप्त करेगा। केवल समझ वालोंकी अपेक्षा घोखने वाले अधिक लाभमें रहते हैं। जैसे कि—केवल ज्ञान वाली आजकलकी हिन्दू-जातिकी अपेक्षा केवल कर्मरत मुसलमान जाति अधिक लाभमें रहती है।

अब इसी ज्ञान-कर्मको सब व्यवहारोंमें घटाइये—समाचारपत्र चलाना है, उसमें रुपया लगानेवाले सेठजी 'कर्म' हैं, सम्पादक महोदय 'ज्ञान' हैं। दोनोंके सामंजस्यसे लाभ होता है। इस प्रकार जनता 'कर्म' है, नेता 'ज्ञान' है। दोनोंके सामंजस्यसे देशका लाभ है। वक्तृता और लेखको ले लीजिये—इसमें वक्तृताको कर्मस्थानीय तथा लेखको ज्ञानस्थानीय समझिए। दोनों जिसमें हों, विजय उसीकी होती है। यदि कर्म न हो, कर्मिष्ठ जनता न हो तो ज्ञानी नेता व्यर्थ हो जाता है। कुछ भी नहीं कर सकता। अबतक 'हिन्दू-धर्म' सनातनधर्म क्यों स्थिर रहा, उसके प्रभावको घटानेके लिए बहुत प्रयत्न किए गए, पर सुधारकोंको सफलता न मिली। इसमें कारण क्या? कारण स्पष्ट है—ज्ञान कर्मका समुच्चय। कर्मको अधिक रखना, ज्ञानियोंकी संख्या थोड़ी होनी—इसमें कारण है। हिन्दूधर्ममें कट्टर लोग कर्मस्थानीय हैं, ब्राह्मणादि उपदेश ज्ञानस्थानीय हैं। ज्ञानियोंके इङ्गितको पाकर ही कट्टर लोग उस उपदेश पर आचरण करते हैं, उसमें आई हुई रुकावटको दूर करनेके लिए मरने-मारनेमें भी तत्पर रहते हैं, पर अब हिन्दूधर्ममें ज्ञान-कर्मका सुन्दर समुच्चय प्रत्येक बातमें नष्ट हो रहा है। तभीसे हिन्दू-जाति ठोकरें खा रही है, स्थान-स्थान पर पराजित हो रही है। यह अपने पुराने सिद्धान्तोंको भुला रही है, पर विजयकी प्रतिनिधि 'दीपावली' इसे प्रतिवर्ष प्रोद्बोधित करने आ उपस्थित होती है। अब फिर स्वतन्त्र-भारतकी 'दीपावली' आई है, उसका भारत वा भारतीयोंको यही आदेश वा उपदेश है कि दीपावलीको--विजयकी प्रतिनिधिको--याद रखो। उसके साधन-ज्ञान कर्मके समुच्चयको भी याद करो। तभी---

'विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेद उभयँ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया मृतमश्नुते'॥
(यजु० ४०।१४)

मृत्यु हट कर अमृत मिलेगा। नहीं तो
:'अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्या-मुपासते'।
(वा० यजु० ४०।१२)

अन्धेरे या गहरे अन्धेरेमें गोता लगाना पड़ेगा। आशा है--भारत दीपावलीके इस सन्देशको विजयकी कुंजी ज्ञान-कर्मको--याद रखेगा, अपने पास रखेगा, तब उसकी विजय ही विजय है।

सूक्ति-सुधा

यावद् भ्रियते जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्ड महंति॥
मृगोष्ट्रखरमर्काखुसरिसृप्खगमक्षिकाः।
आत्मनः पुत्रवत् पश्येत् तैरेषामन्तरं कियत्।

जितनेसे अपना पेट भर जाय उतने ही धन पर जीवों का अधिकारहै। जो इससे अधिक धनको अपना मानता है वह चोर है, उसे दण्ड मिलना चाहिए।

हरिन, ऊंट, गधा, बंदर' चूहा, सर्प, पक्षी तथा मक्खीको भी अपने पुत्रकी तरह देखे। भला इन जीवों में और पुत्रों में अन्तर ही कितना है।

शिक्षाप्रद कहानी—

—: आदर्श-मिलन :—

[भारतमें ब्रह्मचर्यके ह्राससे दिनोंदिन अनैतिकता—अनाचार—आदि अनेक दुर्गुणों की वृद्धि होती जा रही है। पाश्चात्योंका अन्धानुकरण, धार्मिक शिक्षाका अभाव, कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन—फैशन—सिनेमा और सहशिक्षा भी चरित्रहीनताको प्रश्रय दे रहे हैं। सुकुमार नवयुवतियोंको पथभ्रष्ट करनेमें नवयुवकोंका विशेष हाथ रहता है। यदि आजका नवयुवक अपने कर्तव्यको समझकर चरित्रबल—ब्रह्मचर्यव्रत-पर आरूढ रहे तो युवतियां कभी पथभ्रष्ट हो नहीं सकतीं। जो युवक और धर्मध्वजी लोग अपनी माता बहनों एवं पत्नीको सीता सावित्री मदालसाके रूपमें सती साध्वी पतिव्रता बननेका उपदेश बघारते हैं वह अपने हृदयको टटोलें कि क्या कभी उन्होंने भी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम, लक्ष्मण, भीष्मपितामह और अर्जुनादि वीर-पुङ्गवोंके आदर्शपर चलते हुए एक पत्नीव्रत धर्मका पालन किया है? यदि पुरुष ब्रह्मचर्यके बलसे अपने चरित्रको ऊंचा उठा लें तो स्त्रियां अपने आप ही पुरुषोंसे अधिक दृढ़व्रता होकर वास्तवमें गृहलक्ष्मी—देवियां—बन सकेंगी। एक नैतिकबलसम्पन्न नवयुवक अपनेपर आसक्त नवयुवति कन्याको किस प्रकार सुमार्गमें लगा सकता है, यह आपको इस कहानीमें प्रो० देवेन्द्रके चरित्रसे विदित होगा।
—सम्पादक]

स्नेहलता श्री बद्रीनाथजीकी षोडश वर्षीया सुकुमारी कन्या है, इस वर्ष उसने एफ०ए०के द्वितीय वर्ष (2nd Year) की परीक्षा देनी है, उसे अपनी योग्यताके साथ साथ अपनी सुन्दरता पर भी गर्व है। जब वह कालिज जाती है, तो उसकी चालसे स्पष्ट प्रतीत होता है, कि वह अपने जैसा संसारमें किसीको नहीं समझती। कई युवक उसकी ओर टकटकी लगाए निःश्वास छोड़ते ही रह जाते हैं। पर उससे दृष्टि मेल होनेका सुअवसर उन्हें प्राप्त नहीं होता। अपनी भ्रूभंगियों द्वारा सहस्रों युवकोंको उसने घायल किया, पर किसी भी भाग्यवान्को उसके हृदय मन्दिरमें स्थान प्राप्त करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

एक दिन कुमारी लता कालिजसे साईकिल पर आ रही थी, जब साईकिल चौकमें मोड़ी, तो अकस्मात् एक युवककी साईकिलसे उसकी टक्कर हो गई।

"क्षमा करना आपको चोट तो नहीं आई" प्रोफैसर साहबने कहा। "बेवकूफ अन्धे होकर साईकिल चलाते हैं। गोअवे (Go Away) लताने झल्लाते हुए उत्तर दिया। "क्या हुआ लता?" मालतीने साइकलसे उतरते हुए पूछा।

"इस नेत्रविहीन महोदयकी कृपासे यह दशा हुई बहन"—चलो लताने कहा।

कूपररोड परसे जाते हुए मालतीने व्यंगात्मक शकल बनाकर पूछा "आज फिर लताकी टक्कर प्रोफैसर देवेन्द्र से हो गई। बहन, कहीं हृदयको आघात तो नहीं पहुंचा" Shutup "मालती! ऐसी बातें मुझे नहीं भाती" लताने क्रोधपूर्ण उत्तर दिया।

"समझ नहीं आता प्रोफैसर देवेन्द्र मेरे हृदयसे क्यों नहीं उतरते। उनकी छवि चित्तमें बस रही है। उनसे पुनर्मिलनकी इच्छा बलवती होती जा रही है—न जाने वे कहां मिलेंगे। यदि मिले भी मैंने तो उनके लिये कटुवचन... क्या करूं, समझ नहीं आता, क्या होगा?

"वही होगा जो मैं समझ रही हूं" लता चौंक पड़ी, उसकी विचारधारा अचानक टूट गई। "कौन मालती?" हां मालती! चलो सैरको चलें" मालतीने लताका कन्धा दबाते हुए कहा।

जब सैरसे लौट रहे थे, तो देवेन्द्र महोदय अकस्मात् मार्गमें मिल गए। मालतीने नमस्ते की और साइकलसे

उतरकर कहा "प्रोफैसर साहब परसों बहन लताका जन्म दिन है। क्या आप इस मंगल अवसर पर पधारनेका कष्ट करेंगे ?"

"प्रोफैसर देवेन्द्र ! मेरे मुखसे जो उस दिन कटुशब्द आपके प्रति निकले थे मैं उसके लिए क्षमा मांगती हूं" लताने विनय पूर्वक कहा। प्रोफैसरने कहा "दैट्सआल-राइट मुझे वह बुरा नहीं लगा। क्रोधवश ऐसे शब्द निकल ही जाया करते हैं"।

अगले ही दिन फिर लता-देवेन्द्र मिलन चर्च गार्डनमें हो गया। दोनों एकान्तमें बैठ गए। "प्रोफैसर साहब ! आपसे मिलनेसे चित्तको बड़ी शान्ति मिलती है, अच्छा हो यदि......"मैं समझ गया लता, परन्तु ऐसा होना उचित नहीं, मैं एक निर्धन पिताका पुत्र हूँ। अभी मैंने २१००) रु० का ऋण चुकाना है। यह ऋण चुक जाने पर ही ऐसा होना सम्भव है। दूसरे श्री बद्रीनाथजी कभी मुझ जैसे निर्धनके साथ आपके विवाहकी स्वीकृति नहीं देंगे। इससे उनकी शानको बट्टा लगेगा। अच्छा हो यदि आप इस प्रकारका विचार त्याग दें"।

"मैं सब बातें पिताजीसे मनवा लूँगी, आप चिन्ता न करें"

"परन्तु लता ऐसा काम करना ठीक नहीं, जिससे श्री बद्रीनाथजीकी मान प्रतिष्ठाकी हानि हो"

"अच्छा समय अधिक हो गया। कल वर्षगांठके अवसर पर अवश्य पधारिये"

"लताका मुख कुम्हलाया हुआ है, वर्षगांठकी प्रसन्नता उसे रुचती नहीं। "अच्छा है आप इस प्रकारके विचार त्याग दें" यह वाक्य उसके चित्तमें अशान्तिकी लहर दौड़ा देता है और वह व्याकुल हो उठती है। उत्सव समाप्त हुआ। बागमें फिर मिलन हुआ "प्रोफैसर साहब चित्तमें शान्ति नहीं। अशान्तिका साम्राज्य है"।

"शान्ति,सांसारिक विषयोंमें शान्ति ढूंढती हो लता ! नहीं मिल सकती। अशान्ति बढ़ती ही जायेगी।"

"तो शान्ति कहां मिलेगी"।

"प्रभु शरणमें लता ! जितनी उत्सुक मेरे प्रेमके लिये आप हो रही हो, उतना प्रेम उस प्रभुमें ही लगा दीजिये। प्रेमका कोण ही बदलना है। मेरे साथ अशान्ति मिलेगी और प्रभुके प्रेम करनेमें..."मैं समझ गई शांति"।

कुछ देर लताके हृदयमें हलचल मची रही। व्याकुल होकर बोली "हे दीनानाथ ! यदि अपना प्रेम ही अभीष्ट है तो प्रभु मुझे अपनी ओर ही लगा लीजिये"

शुद्ध हृदयकी प्रार्थनाने जादूका काम किया। शान्त होकर लता बोली "तो प्रोफैसर साहब, प्रभु प्रेम किस प्रकार करूं ? मार्ग प्रदर्शन कीजिये"

"एकान्त समयमें प्रभु मिलनके लिये व्याकुल होना इस मार्गका पहला पाठ है। प्रभुकी शक्तियों प्रभुकी मधुर लीलाओं और प्रभुके गुणोंका स्मरण करना और शास्त्रोक्त प्रभुके रूपका मनन करना चाहिये इससे चित्तको शान्ति मिलेगी"

"तो प्रभुको किस भावसे भजना चाहिये" ?

"मीराँने प्रभुको किस भावसे भजा था ?"

"पति रूपसे।"

"स्त्रीके लिये पति रूपमें ईश्वरका भजन ही कल्याणकारी है। कारण यह है कि पति भावमें भजनेसे वात्सल्य भाव, सखाभाव, गुरुभावादि अनेक भावोंका सम्मिश्रण हो जाता है। और इसे माधुर्य भाव कहते हैं। नवधा भक्तिमें इसे ही श्रेष्ठ समझा जाता है। व्रजगोपियोंने इसीके द्वारा अमर पद प्राप्त किया। लता, तू भी अपने हृदयमें प्रेमलताको प्रभु भजन रूपी जलसे सींच और जो फल उससे लगें उनका आस्वादन कर। भगवान् बांकेबिहारीकी रूप माधुरीका उसी प्रेमवाटिकामें पान करना। फिर क्या है ! तेरा एक नया संसार बन जायेगा। उस जगन्नियन्ता परम पितासे तेरा अटूट सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। और जीवनका ध्येय तुझे प्राप्त हो जायेगा। तू अपने प्राणप्रिय मोहनमें समा जायेगी। जैसे समुद्रमें नदियां लय हो जाती हैं।"

प्रोफैसर साहब ! आपने मुझे यथार्थ मार्ग दिखा दिया, पर समय समय पर मेरी सहायता करते रहिये। ऐसा न हो मैं कहीं भटक न जाऊं"

"लता प्रभुकी इच्छासे ही हमारा मिलन हुआ, उसीकी प्रेरणासे यह सब कुछ हुआ। प्रभु स्वयं तुम्हारी सहायता करेंगे। चिन्ता न करो। अच्छा, जय श्रीकृष्ण।

भारतीय सभ्यतामें नारी

[लेखक:—कविराज श्री पं० नन्दकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य]

भारतीय सभ्यतामें नारीका जितना ऊंचा स्थान है उतना अन्य किसी भी देश या समाजकी सभ्यतामें नहीं। वैदिक सभ्यतामें स्त्रीको पुरुष शरीरका आधा भाग माना गया है। बिना स्त्रीके कोई भी पुरुष वैदिक पंचाग्नि तथा अश्वमेधादि यज्ञ नहीं कर सकता। स्त्रीका देहान्त होनेपर उसका शव स्थापित अग्नि द्वारा ही भस्म किया जाता है और शवके साथ ही पंचाग्निमें प्रयुक्त होनेवाले काष्ठपात्र जला दिये जाते हैं। किसी भी घरमें स्त्रीका अपमानित होना या दुखी रहना सम्पूर्ण कुलके विनाशका चिह्न माना जाता है और उसका प्रसन्न-मुख रहना ही अभ्युदयका चिह्न है। मनुजीने इस बातको भलीभांति स्पष्ट करके समझाया है :—

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ।
पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥
जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः ।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः ॥
तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः ।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ॥
संतुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥
यदि हि स्त्री न रोचेत पुंमासं न प्रमोदयेत् ।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्तते ॥
स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥
मनु० ३ अ० ५६-६२ ॥

इस प्रकारके कई उपदेश शास्त्रोंमें मिलते हैं जोकि भारतीय सभ्यताके आधार हैं।

भारतीय सभ्यतामें विवाह धर्मका अङ्ग माना गया है।भारतीय सभ्यताका चरम लक्ष्य ही लौकिक सुख भोगते हुए ईश्वर प्राप्ति या आत्मसाक्षात्कार करना है। अविवाहित पुरुषको घरमें रहनेका स्थान नहीं है, ऐसा क्यों है! कारण स्पष्ट है कि वह तो अर्धाङ्ग ही है स्त्रीके साथ ही सम्पूर्ण शरीरवान् होकर गृहोपयोगी कार्य भलीभांति कर सकेगा। इसकी तुलनामें आजकल सभ्य कही जाने वाली विवाह प्रणाली "सिविल मैरिज" को ही लीजिये। इस "सिविल मैरिज" विवाह प्रणालीमें स्त्रीका क्या स्थान है? यही कि "स्त्री या पुरुष एक दूसरेकी कामवासनाको तृप्त करनेके साधन हैं। जब कभी एक दूसरेकी वासनायें तृप्त नहीं कर सकते हैं या मन उचटा जाता है तो वासना तृप्तिके लिये दूसरा स्त्री-रूपी साधन ढूंढ लिया जाता है" क्या भूमिपर यही स्त्रीका सम्मान हो सकता है? क्या स्त्री मनुष्यकी कामवासनाओंको तृप्त करनेका दूसरे उपकरणोंकी भांति एक साधन ही है? ऐसी सभ्यताओं को भारतीय लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और देखा भी क्यों न जाये, मानव देहका पशु शरीरसे कुछ तो अन्तर होना चाहिये।

आर्य सभ्यतामें स्त्री का रहन सहन—

(विवाह से पूर्व)

जन्मसे लेकर विवाह तक कन्यायें पितृकुलमें ही रहतीं थीं। इनकी शिक्षा माता-पिता-पारिवारिक व्यक्ति या किसी अत्यन्त विश्वस्त द्वारा होती थी। छोटे-बड़े घरेलू या अन्य उपयोगी कार्य भलीभांति सिखाये जाते थे। प्रायः कन्याको शिक्षित करनेका विशेष प्रयत्न होता था और साक्षर बनानेका गौण। आचार-व्यवहार-घर और वस्त्र आदिको स्वच्छ तथा पवित्र रखना, सीनेका काम, रसोई बनाना, गोपालन, गायन, चित्रकारी, पुष्प आदि लगाना इत्यादि उपयोगी कार्य विशेष रूपसे

सिखाये जाते थे। इसके अतिरिक्त वर्णाश्रमधर्म तथा पारिवारिक स्थित्यनुसार रामायण श्रीमद्भागवत आदि धर्म ग्रन्थोंका पठन पाठन, दर्शनशास्त्रका स्वाध्याय, शस्त्र-विद्या आदि कई बातें सिखाई जातीं थीं। और इन सभी कार्योंमें १०--१२ वर्षकी आयुसे पहिले २ लड़कियां पूर्ण दत्त हो जाया करतीं थीं। यह सभी बातें शास्त्रमें बड़ी सुन्दरतासे बतलाई गई हैं :—

"प्राग्यौवनात्स्त्री" ॥ वा० १—३—२ ॥

स्त्री यौवनावस्थासे पहिले अर्थात् १२ वर्ष तककी आयुमें ही संपूर्ण कलायें सीख ले "अभ्यास प्रयोज्यांश्च चातुःषष्ठिकान्योगान्कन्या रहस्येकाकिन्यभ्यसेत्"

अभ्यास द्वारा सीखी जाने वाली ६४ कलाओंका लड़की एकान्तमें बारबार आवर्तन करे।

कन्याओंके शिक्षक—

"आचार्यास्तु कन्यानां—प्रवृत्तपुरुषसंयोगा सह संप्रवृद्धा धात्रेयिका तथाभूता वा निरत्यय सम्भाषणा सखी, सवयाश्च मातृष्वसा, विस्रब्धा तत्स्थानीया वृद्धदासी, पूर्व संसृष्टा वा भिक्षुकी, स्वसा च विश्वास संप्रयोगात्"

विवाहित और साथ साथ बढ़ी हुई दाई की लड़की, अथवा विवाहित और विश्वास पूर्वक बातचीत करने वाली सहेली, समान आयुकी मासी, विश्वस्त तथा मासीकी भांति आदर योग्य बूढ़ी दासी, अथवा चिरकालसे भली-भांति परीचित (इसलिये विश्वास योग्य) भिक्षुकी, और अवश्य विश्वसनीय होने से बहिन—यह कन्याओं के मुख्यतया शिक्षक हो सकते हैं।

कन्याओंको कौन कौनसी विद्या सीखनी चाहिए

"गीतम्, वाद्यम्, नृत्यम्, आलेख्यम्, विशेषक छेद्यम्, तंडुल कुसुमावलि विकाराः, पुष्पास्तरणम्, दशन वसनांगरागाः, मणिभूमिकाकर्मशयनरचनम्, उदक वाद्यम्, उदकाघातः, चित्राश्चयोगाः, माल्यग्रथन विकल्पाः, शेखरकापीड़ योजनम्, नेपथ्य प्रयोगाः, कर्ण पत्र भंगाः, गंधयुक्तिः, भूषणयोजनम्, ऐन्द्रजालाः, कौचुमाराश्च योगाः, हस्त लाघवम्, विचित्र शाक यूष भक्ष्य विकाराः, पानकरस रागासव योजनम्, सूचीवान कर्माणि, सूत्रक्रीड़ा, वीणा डमरुक वाद्यानि; प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वाचक योगाः, पुस्तक वाचनम्, नाटकाख्यायिका दर्शनम्, काव्यसमस्या पूरणम्, पट्टिका वेत्रवान विकल्पाः, तक्षकर्माणि, तक्षणम्, वास्तुविद्यारूपरत्नपरीक्षा, धातुवादः, मणिरागाकर ज्ञानम्, वृक्षायुर्वेद योगाः, मेष कुक्कुट लावक युद्ध विधिः, शुक सारिका प्रलापनम्, उत्सादने संवाहने केशमर्दने च कौशलम्, अक्षरमुष्टिका कथनम्, म्लेच्छित विकल्पाः, देशभाषा विज्ञानम्, पुष्पशकटिका, निमित्तज्ञानम्, यन्त्रमातृकाधारेण मातृकासंपाठ्यम्, मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोषः, छंदोज्ञानम्, क्रियाकल्पः, छलिनक योगाः, वस्त्रगोपनानि, द्यूत विशेषः, आकर्षक्रीड़न, बालक्रीड़नकानि, वैनयिकीनां वैजयिकीनां व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम्, इति चतुःषष्टि रंगविद्याः''''''वात्स्या० १—३—१६ ॥

अर्थातः—गायन, वाद्य(ढोलकी आदि) बजाना, नाचना, चित्रकारी करना, मस्तक पर सिन्दूर-कुंकुम-चन्दन प्रभृतिसे नानाकृतिके तिलक लगाना, कई प्रकारके रंगे हुए पीसे तथा बिना पिसे हुए चावलोंसे और पुष्पोंसे मंगल समयमें आंगण तथा पूजाके स्थान पर आलेखन करना (लीखण डालना) पुष्पों द्वारा आस्तरण (शयन) बनाना, दांतों को रंगनेके द्रव्य (तांबूल-मस्सी-मंजन आदि) और वस्त्रों को रंगनेका सामान बनाना तथा उनको रंगना, मणि मोती आदि उचित स्थान पर रखकर या लगाकर भूमिको सुन्दर बनाना, ऋतु के अनुसार विस्तर करना, उदकवाद्य (जल तरंग आदिका बजाना) सीखना, जलक्रीड़ा तथा तैरना आदि सीखना, विचित्रयोग (शरीर और केशोंके रंग बदलने वाले प्रयोग) सीखना, कई प्रकारकी मालायें गूथना, कई प्रकारके पुष्पों द्वारा मुकुट बनाना—देश और कालके अनुसार वस्त्र तथा आभूषणों को पहिनना, कानों के लिये दंत शंख पुष्प पत्रादिसे गहने बनाना, सुगन्धित तैल आदि बनाना, भूषण पहिनना, इन्द्र जालमें वर्णित प्रयोग (लकड़ी को सांप और काले रंगको गोरा दिखाना आदि विस्मित कर देने वाले प्रयोग) विलासके उपयोगी कई प्रकारके योग, हाथकी सफाई (कार्यको तुरन्त कर लेना) कई प्रकारके शाक यूष तथा अन्य भक्ष्य भोज्य बनाने (पाचक क्रिया) शर्बत रस आसव तथा कांजी आदि बनाने, सिलाई और बुनाईका काम सूत्रकी कई खेलें,

वीणा डमरू आदि बजाना, मनोविनोदार्थ कई प्रकारकी पहेलियें, प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी श्लोकों या दोहों आदिकी) दुर्वाचकयोग (उच्चारण करनेमें या समझनेमें जो कठिन हों ऐसे शब्द या श्लोक) अक्षर विज्ञान (जिससे पुस्तकें पढ़ी जा सकें)—नाटक तथा कथाओंको स्मरण रखना (इससे प्राचीन इतिहास स्मरण रहता है) काव्य सम्बन्धी समस्याओंकी पूर्ति करना, पलंग-कुर्सी प्रभृतिकी बेंत आदिके द्वारा बुनना, तक्षकर्म—पलंग आदिमें कील आदि लगाने योग्य लक्षणकर्म—सोना चांदी रत्न आदिकी शुद्धता और मिलावटका ज्ञान, मिट्टी पत्थर रत्न और धातुओंका शोधन और इन वस्तुओंको रंग देनेका ज्ञान, पुष्प वृक्ष आदियोंके बोने आदिका ज्ञान, मेष कुक्कुट बटेर आदिको परस्पर लड़ाना (मनोविनोदार्थ)—तोता मैना को पढ़ाना और संदेश भेजनेके योग्य बनाना, उबटन लगाने, शरीरको बढ़ाने तथा केशोंको संवारनेमें चतुरता, अक्षर मुष्टिका अर्थात् अक्षरोंको इस प्रकार उलट-पलटकर कहना कि अभीष्ट मनुष्यके अतिरिक्त दूसरा कुछ न समझ सके, म्लेच्छित विकल्प (अक्षर मुष्टिकाका एक प्रकार) दूसरे देशकी भाषा जानना। पुष्प-शकटिका, शुभाशुभ शकुन ज्ञान, यंत्र विज्ञान (सम्भव है कि चर्खा कातने आदि का इसीमें अन्तर्भाव हो) सुनी हुई बातोंको स्मरण रखनेके लिये शास्त्रज्ञान, सुने और अनसुने गायन आदिको गायनके साथ गानेके योग्य बनाना, काव्य रचना शब्दकोष जानना, ताल मात्रा आदिका ज्ञान, अलंकारज्ञान—काकु भाषण—वस्त्रोंसे अंग ढकना या वस्त्रके फटे सिले या दूषित भागको ढांपना। पति प्रीत्यर्थ द्यूत विद्या जानना, चौसर खेलना, बालोपयोगी खिलौनोंका बनाना, विनयविद्या (शास्त्रोपदिष्ट सदाचार) विजय दिलाने वाली विद्या (युद्ध सम्बन्धी शस्त्र चालन अश्वारोहण आदि विज्ञान तथा राजनीति) व्यायाम सम्बन्धी स्फूर्तिदायक खेलें जानना, यह ६४ विद्यायें प्रत्येक स्त्री अपनी अपनी स्थिति-अनुसार सीखतीं थीं।

यह थी भारतीय सभ्यतामें कन्याओंकी शिक्षा प्रणाली। क्या कोई मनुष्य ऐसा स्कूल या कालिज बता सकता है कि जहां इतनी छोटीसी अवस्थामें लड़कियोंको यह सभी कलायें सिखाई जाती थी अथवा सिखाई जा सकती हों। यह गौरव केवल मात्र भारतीय सभ्यताको ही प्राप्त है जिसमें ऐसी उत्तम उत्तम प्रणालियां प्रचलित हैं।

विवाह के अनन्तर—

विवाह के पश्चात् कन्या पतिकुलमें जाकर स्त्री जाति का गौरव बढ़ाती है। विवाह हो जाने पर स्त्री प्रत्येक धार्मिक कार्यमें पतिकी सहायक बनती है। कोई यज्ञ स्त्रीके बिना पुरुष नहीं कर सकता। इसीलिये पूर्वकाल में भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने अश्वमेध यज्ञमें श्रीसीताजीकी सौवर्णी प्रतिमा बनवाकर अपने दक्षिण भागमें रखी थी। क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी दूसरा विवाह कराना नहीं चाहते थे और स्त्री बिना उन्हें यज्ञ करनेका अधिकार नहीं था। क्या किसी दूसरे धर्ममें भी स्त्रीको इतना गौरव प्राप्त है?

(पतिकुलमें अधिकार वा कर्तव्यादि अनेक महत्त्वपूर्ण बातें आगामी अङ्कमें देखिये) [क्रमशः]

सूक्ति-सुधा

यावन्नृकायरथमात्मवशोपकल्पम्
धत्ते गरिष्ठचरणार्चनया निशातम्।
ज्ञानासिमच्युतबलो दधदस्त शत्रुः
स्वाराज्यतुष्ट उपशान्त इदं विजह्यात् ॥१॥
नो चेत् प्रमत्तमसदिन्द्रियवाजिसूता
नीत्वोत्पथं विषयदस्युषु निक्षिपन्ति।
ते दस्यवः सहयसूतममुं तमोऽन्धे
संसारकूप उरुमृत्युभये क्षिपन्ति ॥२॥
(श्रीमद्भागवत ७।१५।४५-४६)

यह मनुष्य शरीर रूपी रथ जब तक अपने वशमें है और इसके इन्द्रिय—मन आदि साधन अच्छी दशामें विद्यमान हैं, तभी तक श्री गुरुदेवके चरण कमलोंकी सेवा पूजासे तेजकी हुई ज्ञानकी तीखी तलवार लेकर भगवान् के आश्रयसे राग-द्वेषादि शत्रुओंका नाश करके अपने स्वराज सिंहासन पर विराजमान होजाय और फिर अत्यन्त शान्तभावसे इस शरीरका भी परित्याग कर दे। नहीं तो तनिक भी प्रमाद हो जाने पर ये इन्द्रिय रूपी दुष्ट घोड़े और उनसे मित्रता रखने वाला बुद्धि रूप सारथी रथके स्वामी जीवको उल्टे रास्ते ले जाकर विषय रूपी लुटेरोंके हाथ डाल देगा। ये डाकू सारथि और घोड़ोंके सहित इस जीव को मृत्युके अत्यन्त भयावने घोर अन्धकारमय संसारके कुएं में गिरा देंगे।

पौराणिक उपाख्यान—

—: सत्यवादी चाण्डाल :—

[पौराणिक कथाओंमें ज्ञान-विज्ञान एवं रोचकताके साथ-साथ प्राणिमात्रके अभ्युदयका रहस्य भी भरा पड़ा है। आज हम 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको "ब्रह्मपुराण" में वर्णित "सत्यवादी चांडाल" की एक कथा सुना रहे हैं। इस समय तथाकथित सुधारकोंकी ओरसे अछूतोद्धार पर पर्याप्त बल दिया जा रहा है और शासनकी ओरसे भी अछूतोंको हठात् मन्दिर प्रवेश कराया जा रहा है। हम अपने शासकोंसे सविनय पूछते हैं कि आप सहस्रों वर्षोंकी आर्ष मर्य्यादाको नष्ट करके बलात् जिन अछूतोंको मन्दिरमें ले जाते हैं, उनके हृदयमें क्या वास्तविक भगवद्भक्तिका लेशमात्र भी अंकुर है? एक दिन प्रवेश करनेके बाद कितनी बार वे मन्दिरमें गए और सत्य अहिंसादि भागवतधर्मका पालन किया? हठात् वा शासनके बल पर मन्दिर प्रवेशसे अछूतोंका प्रत्यक्ष लाभ तो कोई दिखाई दिया नहीं। हां, पारस्परिक घृणाका भाव अवश्य बढ़ा है। अछूतोद्धारका सच्चा मार्ग क्या है—यह इस कथासे सिद्ध होता है। यदि आज कलकी बखेड़ेबाजियोंको छोड़ कर इन लोगोंको सत्यमार्ग पर लगाया जाय, तो आर्य संस्कृतिकी रक्षाके साथ साथ उनका (हरिजनोंका) भी कल्याण हो सकता है। इस कथासे सत्यका महत्त्व और व्यभिचार, कृतघ्नतादि पापोंके सम्बन्धमें पर्याप्त बातें ज्ञात होंगी। —सम्पादक]

अवन्ती-नामक नगरी संसारमें प्रसिद्ध है। वहां शंख-चक्र-गदाधारी भगवान् विष्णु निवास करते हैं। उस नगरीके पासमें एक चण्डाल रहता था। वह गानेमें बड़ा निपुण था। अच्छे व्यवहारसे धन पैदा करता था और पालन-पोषण करने योग्य कुटुम्बियोंके पालन-पोषणमें लगा रहता था। वह चंडाल विष्णुका परम भक्त था। महीनेके-महीने एकादशीका उपवास करता था। रात्रिमें जागरण भी करता था। उस दिन अवश्य ही भगवान्का गुणगान करता था। इस प्रकार वह एकादशीकी रात्रिमें जागरण और हरिकीर्तन करके द्वादशीके प्रातःकालमें भगवान्को प्रणाम करके अपने जवांई, भानजे और उनकी कन्याओं तथा परिवारको जिमाकर पीछे भोजन करता था। विष्णुकी प्रसन्नताके निमित्त इस प्रकार करते-करते उसकी बहुत-सी आयु व्यतीत हो गई।

एक दिन चैत्र मासके कृष्णपक्षकी एकादशीको चंडाल भगवान्की सेवाके निमित्त वनमें पुष्प लेनेको गया। भक्तिमें तत्पर हो नाना प्रकारके जंगली पुष्प लेता हुआ शिप्रा नदीके तट पर बड़े भारी जंगलमें पहुंचा। उस जंगलमें एक बहेड़ेका वृक्ष था। वह जब उसके नीचे पहुंचा तो एक राक्षसने उसे देखा और खानेके लिए पकड़ लिया।

चण्डालने कहा—हे राक्षस, तुम मुझे इस समय न खाओ। हे कल्याण! मैं सच कहता हूं, प्रातःकाल मैं तुम्हारे पास अवश्य आ जाऊंगा। हे राक्षस! आज मुझे बहुत बड़ा काम है, इसलिए मुझे छोड़ दो। मैं कल तुम्हारे पास सचमुच आ जाऊंगा। तब मुझे खा लेना। आज मुझे विष्णुकी शुश्रूषा और रात्रिमें जागरण करना है। हे राक्षस! मेरे व्रत में तुम विघ्न न डालो।

उसके इस प्रकार वचन सुनकर राक्षसने कहा—मुझे बिना भोजन किए आज दश रात्रि व्यतीत हो गईं। अब तुम्हें पाया। मैं भूखसे बड़ा व्याकुल हूं। अतएव तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।

राक्षसकी यह बात सुनकर चण्डालने फिर सत्यपूर्वक दृढ़ वचनोंसे विश्वास दिलाते हुए मधुर वाणीसे कहा—हे ब्रह्मराक्षस ! मैं सत्यपूर्वक शपथ खाकर कहता हूं कि तुम्हारे पास फिर आ जाऊंगा। यह सारा संसार सत्यके आधार पर टिका हुआ है। सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, जल, मन, रात-दिन, यमराज और दोनों सन्ध्याएं ये सब मनुष्यके किए कर्मोंको जानते हैं। इसलिए मनुष्य को यह नहीं समझना चाहिए कि मेरे कामको कोई नहीं देखता।

हे राक्षस ! मैं शपथ खाकर कहता हूं, तुम्हारे पास यदि न आऊं तो मुझे निम्नलिखित पाप लगें—

पर-स्त्री-गमनमें, दूसरेका धन हड़प कर जानेमें, ब्रह्म-हत्यामें, और मदिरापानमें जो पाप लगता है, वह पाप मुझे लगे।

वन्ध्या स्त्रीके पतिको, पतित स्त्रीसे विवाहितको, जो देवताकी भेंट पूजासे ही अपना जीवन चलाता है उस (देवलक) को तथा जो मच्छी और मांस खाता है, उसको जो पाप लगता है वह पाप मुझे लगे।

जो आदमी सुअरका मांस खाता है, कछुएका मांस खाता है, जो अपने पितरोंके निमित्त नहीं किन्तु व्यर्थ ही मांस खाता है, तथा पीठका मांस खाता है, उसे जो पाप लगता है, वह पाप मुझे लगे। किएको न मानने वाले को, मित्रको मारने वाले को, एकबार विवाहित स्त्रीसे विवाह करने वाले और शूलके द्वारा प्राणियोंका वध करने वाले तथा क्रूर-कर्माको जो पाप होता है, वह पाप मुझे लगे। कंजूसको और जिसके घरसे अतिथि निराश होकर चला जाय, उसको जो पाप होता है, वह पाप मुझे लगे। अमावस्या, अष्टमी और षष्ठी तथा कृष्ण-शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी, इनमें स्त्री-गमन करनेसे जो पाप लगता है, वह पाप मुझे लगे। जो ब्राह्मण रजस्वला स्त्रीसे गमन करे अथवा श्राद्ध करके स्त्रीसे गमन करे, उसे जो पाप लगता है, वह पाप मुझे लगे। जो पाप चुगलखोरको लगता है, ढोंगी और कपटीको लगता है, जो पाप शहदकी मक्खियोंको मारनेवालेको लगता है, जो पाप ब्राह्मणसे प्रतिज्ञा करके न देने वालेको लगता है, वह पाप मुझे लगे। सगाई करके बदल जानेवालेको, बैल, घोड़े आदि के व्यापारमें बदल जाने वालेको, स्त्री और बालकके मारने वालेको और झूठ बोलने वालेको, जो पाप होता है, वह मुझे लगे।

जो पाप देवता, वेद, ब्राह्मण, राजा, पुत्र, मित्र और पतिव्रता स्त्रीकी निंदा करने वालेको तथा गुरुका मिथ्या बिगाड़ करने वालेको लगता है, वह पाप मुझे लगे। जो पाप अग्निहोत्र ग्रहण करके छोड़ देने वालेको, जंगलमें आग लगाने वालेको; छोटे यज्ञोंमें पाप करने वालेको और गाय मारने वाले नीच द्विजातिको लगता है वह पाप मुझे लगे।

बड़े भाईके अविवाहित रहते विवाह करने वाले छोटे भाईको, छोटे भाईके विवाहित होनेसे पूर्व विवाह न करने वाले बड़े भाईको और ऐसे सम्बन्धोंमें कन्या देने वाले और लेने वालेको, तथा गर्भकी हत्या करने वालेको जो पाप लगता है, वह पाप मुझे लगे और हे राक्षस ! अधिक कहना व्यर्थ है, मैं न कहनेकी बात भी तुम्हारे सामने शपथ खाकर कहता हूं कि जो पाप अपनी कन्याके द्वारा जीविका चलाने वालेको होता है, वह पाप मुझे लगे।

इतना ही नहीं, जो गुप्त सत्यमें साक्षी होते हैं, जो अनधिकारियोंसे यज्ञ करवाते हैं, जो नपुंसक हैं, जो अनधिकारी वेदादिक श्रवण करते हैं, जो संन्यास लेकर छोड़ देते हैं तथा जो ब्रह्मचारी होकर कामी होते हैं और अपनी विवाहिता पत्नीको त्याग देते हैं उनको जो पाप लगते हैं वे सब पाप मुझे लगे, यदि मैं तुम्हारे पास न आऊं।

व्यासजी ने कहा—उस चाण्डालका वचन सुनकर ब्रह्मराक्षसको बड़ा आश्चर्य हुआ। ब्रह्मराक्षस बोला-"जाओ और सत्यके द्वारा अपनी प्रतिज्ञाका पालन करो।"

ब्रह्मराक्षसके ऐसा कहने पर चाण्डाल पुष्प लेकर आया और भगवान्‌के मन्दिरमें गया। वे पुष्प उसने ब्राह्मणको समर्पित किये। ब्राह्मण ने पुष्पोंको जलसे धोया और भगवान्‌ की पूजा की। फिर वह ब्राह्मण अपने घर चला गया उस चाण्डालके उस दिन एकादशी का उपवास था, इसलिये मन्दिरके बाहरकी भूमिमें बैठकर सारी रात उसने गाना गाया और जागरण किया।

प्रभात होने पर उसने स्नान किया। भगवान्‌को प्रणाम किया। उसके बाद अपनी प्रतिज्ञा सत्य करनेके

लिये जहां वह ब्रह्मराक्षस था, उस जगहके लिये चल पड़ा। जब वह जा रहा था, तब एक मनुष्यने उससे पूछा--क्यों भाई, कहां जा रहा है? चाण्डालने फिर सब कथा कह दी। तब उसने चाण्डालसे कहा—

विद्वान्को चाहिए कि वह बड़े प्रयत्नके साथ अपने शरीरका पालन करे, क्योंकि शरीर ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्षका साधन है। जीवित मनुष्य ही धर्म, अर्थ और सुखको प्राप्त होता है। जीवित मनुष्य ही मोक्ष और अच्छे लोकों को प्राप्त होता है। जीवित मनुष्य ही यशको प्राप्त करता है। मरे मनुष्यकी तो संसारमें बात ही क्या रह जाती है।

चाण्डालने यह वचन सुनकर कारण सहित उत्तर दिया। उसने कहा—भाई, मैं अपने सत्यका निर्वाह करने के लिए जा रहा हूं, क्योंकि मैंने शपथ खाई है।

उस मनुष्यने चाण्डालसे फिर कहा—तू इतना मूर्ख-बुद्धि क्यों है? क्या मनुने जो कुछ लिखा है, वह तूने नहीं सुना है। पांच झूंठोंमें कोई पाप नहीं लगता—

गोस्त्रीद्विजानां परिरक्षणार्थं,
विवाहकाले सुरतप्रसंगे।
प्राणात्यये सर्वधनापहारे पंचा—
नृतान्याहुरपातकानि ॥

१ गौ, स्त्री और ब्राह्मणकी रक्षाके लिए। २ विवाहके समय। ३ सुरत प्रसंग में। ४ प्राण नाशके समय। ५सर्वस्व लुटने पर। और भी लिखा है—

धर्मवाक्यं न च स्त्रीषु न विवाहे तथा रिपौ।
वंचने चार्थ हानौ च स्वनाशेऽनृतकं तथा ॥

स्त्रियोंके साथ, विवाहमें शत्रुके साथ, धोखा खाने पर, धनका नाश होने पर, अपना नाश होने पर और झूठ बोलने वालेके साथ धर्मवाक्य नहीं बोलने चाहिए।

इस प्रकार उसके वचन सुनकर चाण्डालने कहा—भाई, ईश्वर तुम्हारा भला करे, ऐसा न कहो। संसारमें सत्य ही की पूजा होती है। पृथ्वी पर जो कुछ सुख है, वह सत्य ही से मिलता है। सत्यसे सूर्य तपता है, सत्यसे जल रसमय है, सत्यसे आग जलती है, सत्यसे पुरुषोंको धर्म, अर्थ और काम प्राप्त होते हैं। सत्यसे दुर्लभ मोक्ष भी प्राप्त होता है। इस कारण सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए। संसार में सत्य ही सबसे बड़ा ईश्वरका स्वरूप है। सत्य ही यज्ञमें सबसे श्रेष्ठ है। सत्य स्वर्गसे आई हुई वस्तु है। इसलिए सत्यको नहीं छोड़ना चाहिए।

यह कहकर वह चाण्डाल उस श्रेष्ठ मनुष्यको वहीं छोड़कर जहां वह प्राणियों को मारने वाला ब्रह्मराक्षस था, वहां चला गया।

उस चाण्डालको आया देखकर उस ब्रह्मराक्षसकी आंखें आश्चर्यसे खिल उठीं। उसने शिर हिलाते हुए चाण्डालसे कहा—

हे महाभाग! हे सत्यवचनके पालन करने वाले? तुमको धन्यवाद है। सत्यसे लक्षित होने वाले तुमको मैं चाण्डाल नहीं मान सकता। मैं तो इस कर्मके द्वारा तुमको पवित्र और खामी रहित ब्राह्मण मानता हूं। धर्मके आश्रय देने वाले तुमसे मैं कुछ बातें करना चाहता हूं। कहिए तुमने रात्रिमें भगवान्के मन्दिरमें क्या किया?

चाण्डालने उससे कहा—सुनिए, जो मैंने विष्णु-मन्दिरमें रातके समय किया, मैं सत्य-सत्य कहता हूं। भगवान्के देव-मन्दिरके नीचे बैठकर प्रणाम करके मैंने रात्रिमें भगवान्का गान करते हुए जागरण किया।

ब्रह्मराक्षसने कहा—बताइए, तुमने भगवान्के मन्दिरके नीचे कितने समयसे जागरण किया है?

चाण्डालने हँसते हुए कहा—महीने-के-महीने प्रति एकादशीको २० वर्ष तक जागरण किया है।

चाण्डालका वचन सुनकर ब्रह्मराक्षसने कहा—मैं एक बात तुमसे कहता हूं उसका उत्तर दीजिए। हे साधु! तुम मुझे एक रात्रिके जागरणका फल देदो, तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, नहीं तो नहीं छोड़ूंगा। यह कहकर वह राक्षस चुप हो गया।

चाण्डालने उससे कहा—हे निशाचर! मैंने अपना शरीर तुमको अर्पण कर दिया है। इसमें कहने सुननेकी क्या बात है? तुम स्वेच्छानुसार मुझे खा सकते हो।

राक्षसने फिर कहा—अच्छा तो तुम मुझे दो प्रहरके जागरण और संगीतका फल देदो। तुम मेरे ऊपर कृपा करो।

चाण्डालने राक्षससे कहा—तुम असंबद्ध बातें क्यों करते हो? तुम इच्छानुसार मुझे खाओ। मैं जागरणका

फल नहीं दूंगा।

चाण्डालके वचन सुनकर ब्रह्मराक्षसने कहा—कौन दुष्ट-बुद्धि मूर्ख ऐसा होगा जो धर्म कर्मसे रक्षित तुम्हारी ओर देख भी सके। तुमको डराना और पीड़ा देना तो दूर की बात है। साधु पुरुष पापमें डूबे हुए, विषयोंसे मोहित नरकसे पीड़ित. दीन और मूर्खके ऊपर दया करते हैं। इसलिए, हे महाभाग! आप मेरे ऊपर दया करके एक प्रहर जागरणका ही फल मुझे देदो। फिर अपने घर जाओ।

चाण्डालने फिर उससे कहा—न तो मैं अपने घर ही जाऊंगा और न किसी प्रकार एक प्रहरके जागरणका फल ही दूंगा।

ब्रह्मराक्षसने हँसकर फिर उस चाण्डालसे कहा—अच्छा तुमने रात्रिके अन्तमें जो भजन गाया उसका फल ही मुझे देदो। मेरी रक्षा करो और मेरा पापसे उद्धार करो। ऐसा कहने पर चाण्डालने फिर उस ब्रह्मराक्षससे कहा—

(क्या कहा सो अगले अङ्कमें पढ़िए)

[क्रमशः]

प्रजातन्त्र या व्यक्तितन्त्र ?

[लेखकः—श्री लोकेशचन्द्र शर्मा बी० ए०, प्रभाकर]

विदेशी शासनकालमें हमारा आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर अस्त-व्यस्त और पतनावस्थामें पहुंच गया था। हमारी दयनीय अवस्थाने हमारे जीवनमें क्रांति का प्रबल स्रोत बहाया और अनेकानेक बलिदानोंके पश्चात् देश १५ अगस्त सन् १९४७ में स्वतन्त्र हुआ। कल्पनाओंके सुखद-सौध हृदय-पटल पर बनाते हुए हमने स्वतन्त्रतादेवीका आह्वान किया और बड़ी प्रसन्नतासे समारोह मनाये। समय व्यतीत होने लगा और साथ ही साथ हमारे सुखद आशापूर्ण स्वप्न भी निराशामें परिवर्तित होने लगे। आज यह धारणा दिन-प्रति-दिन दृढ़से दृढ़तर होती जा रही है कि देशकी वर्त्तमान दयनीय दशाके लिए हमारे देशवासियोंका चारित्रिक अधःपतन एवं समुचित नेतृत्वका अभाव तो है ही, साथ ही मुट्ठी भर नेताओंकी स्थिति पालकता, उनकी सनक तथा समय समय पर उठने वाली उनकी मस्तिष्कीय तरङ्गोंने सर्वसाधारणको और भी त्रस्त, क्षुब्ध, भयभीत एवं परिपीड़ित बना रक्खा है। आजकी स्वतन्त्रता वास्तविक स्वतन्त्रता नहीं है। हमारे मनमें शान्ति नहीं। दिनमें पूरी रोटी नहीं, रातमें पूरी नींद नहीं। भूख पर कण्ट्रोल नहीं, पर अन्न पर कंट्रोल है। हमने केवल बहिरंग स्वतन्त्रता प्राप्त की है, अन्तरङ्ग स्वतंत्रता तो अभी कोसों दूर है।

अंग्रेजोंने हमारे देशका शासनसूत्र कांग्रेसके नेताओं को सौंपकर अपने घरको प्रस्थान किया अतः वैसे तो हम स्वतन्त्र हैं, किंतु अंग्रेजका तंत्र विरासतमें रह गया है। क्या यह सत्य नहीं है कि बड़े बड़े प्रश्नोंके चेहरे पर लगाकर प्रश्नवाचक चिन्ह हमारी पात्रतासे सफल समाधानका उत्तर चाह रहा है? क्या यह ठीक नहीं है कि क्रांति हमें समझौते के तराजू पर तुल कर मिली है? इसीलिए वह जागरणके पहाड़से निकलने वाली मुक्त प्रवाहिनी न रहकर एक ऐसी कटी छटी नपी तुली नहर रह गई है जिसमें न बहावकी मौलिकता है न वेगकी तेजस्विता।

योग्यता एवं चरित्रके सुवर्णकी असली परख प्रभुता का मार्ग पार करनेके पश्चात् होती है। संघर्ष-वेलाकी भावुकतामें सब तरहका लोहा फौलादके भाव बिक सकता है। युद्धके समय परीक्षाका अवकाश कहां? सचमुच ही यह दैवका दुर्विधान है कि इस समय देशका शासन-सूत्र कतिपय सर्वथा अनुपयुक्त तथा ऐसे व्यक्तियोंके हाथोंमें है, जो अनायास ही अन्तर्राष्ट्रीय-ख्याति उपार्जन करनेके प्रलोभनमें ओत प्रोत हैं, और जिन्होंने सत्ता प्राप्ति अपने जीवनका ध्येय और नेतृत्व अपना धन्धा बना रक्खा है।

इन व्यक्तिगत स्वार्थोंकी उपलब्धिके लिए अपने देश तकको दाव पर लगा देनेमें इन्हें संकोच नहीं होता । कांग्रेस शासकोंको नीचे गिराने वाला एक मुख्य कारण यह है कि इनमें बातें करने और वचन देनेकी बान पड़ गई है । हमारे कांग्रेसी नेताओंने स्वराज्य प्राप्तिके पूर्व जनताके सामने अनेक रचनात्मक कार्यक्रम रक्खे थे, जैसे ग्रामोद्योग, स्त्री शिक्षा, शिक्षाका माध्यम, युनिवर्सिटी शिक्षणनीति, मद्य-निषेध इत्यादि वचनोंके प्यालोंमें रंगीन भविष्यकी मादकताका नशा उतरनेके बाद अब जब प्रातःकालकी स्वच्छ ज्योतिमें राष्ट्रने आंखें खोली तो देखा कि हमारा तकिया निर्धनताका ढेर, बिस्तर बेरोजगारी और सौर भ्रष्टाचारकी जालीके बने हुए हैं । जनता चकित है कि तीन चार वर्ष पहलेकी कांग्रेसको यह हो क्या गया है ?

आयात-निर्यात, सप्लाई, नियन्त्रण, वैगनोंकी कमी और प्राथमिकता आदि विभागों पर लगे ताले बिना चांदीकी चाबी लगाये बहुत कम खुलते हैं । श्री हरेकृष्ण मेहताबके विचारसे स्वतंत्रताका व्यापार बहुत सस्ता होगया है, क्योंकि जनताके प्रति चार हजार व्यक्तियोंके पीछे एक जेल गया । मानो इसीलिए जनताको मंहगाईका स्वाद देना आवश्यक हो गया है । यदि माननीय रसदमन्त्री वाणीकी सप्लाईको ताला लगाकर मंहगा करनेका कार्य पं० नेहरूकी उपस्थितिमें करते तो अधिक श्रेष्ठ होता । किन्तु इधर प्रधानमन्त्रीको वरुणाकी सभामें इस अपराधके लिए वर्षमें एक सप्ताह विश्राम करनेका दण्ड दिया जा चुका है । गृह-मन्त्री महोदयके लौह-कर विरोधके ढेरों पर 'स्टीम रोलर' चलानेमें व्यस्त हैं । सन् १९५१ तक देशको आत्मनिर्भर करने वाले खाद्यमन्त्री नये वृक्षोंका एक करोड़ी बाग लगाकर एक पैर पर खड़े इन्द्र भगवान्की तपस्या में लीन हैं । व्यापार-मन्त्री आत्माको गुदगुदाने वाली इस नई जानकारीकी फुहारमें मस्त हैं और उनके आश्चर्यका ठिकाना नहीं, आज पिछड़ा हुआ भारतका वस्त्रोद्योग कपड़ेका निर्यात भी कर रहा है । वे तो अब भारतीय मिल मालिककी चाह पर जो चाहे बलिदान करनेको प्रस्तुत हैं । कानून मन्त्री धर्म निरपेक्ष राज्यकी छतके नीचे भारतीय नारी समाजके लिए हिन्दुकोड बिलका 'गाउन' सीनेमें तन्मय हैं । क्योंकि अवकाशका ऐसा धर्म निरपेक्ष समय धर्म संशोधनके लिए और कब मिलता ।

जन साधारण लोकशाहीके इन कार्योंको देखकर त्रस्त तथा दुखी है । प्रधानमन्त्री देशकी गम्भीर समस्याओंको विदेशोंमें पर-राष्ट्र नीतिकी डपली बजाकर सुलझानेमें निमग्न हैं । अमेरिका, ब्रिटेन, रूस और चीन आदि सब राष्ट्रोंसे बहुत अधिक अवकाश हमारे मन्त्रियोंके पास बाहर जाकर देशोन्नति करनेका रहता है । लगभग सब देशोंमें हमारे दूतावास हैं । डा० राधाकृष्णन् जैसे मेधावी वक्ता व्याख्यानके अणुबमसे प्रत्येक सभाको मन्त्रमोहित कर देते हैं । किंतु भाषणोंकी स्वर-लहरी और चमकीली छटासे क्षणिक वाहवाहीके अतिरिक्त कोई परिणाम नहीं निकलता । हमारे बाहर जाने वाले प्रतिनिधियोंमें तेज और दृढ़ता होनी चाहिए । भारतके प्राचीन शुभचिन्तक वयोवृद्धों को बड़े राष्ट्रोंका मुंह ताकनेका लम्बा अभ्यास है । अपने को अनुभव करानेका साहस हमें सहेजना होगा । हमारा निश्चित मत है कि किसी भी राष्ट्रका प्रकाश अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजमें उतना अधिक फैलेगा जितना अधिक उसका घर सुव्यवस्थित, शक्तिशाली और प्राणवान् होगा । अन्दरकी वास्तविक बल बिना चाहे जैसे प्रभावशाली स्तर पर दूतावासोंको चलाया जाय पर बाह्याडम्बर और भड़कीली पोशाकके सहारे 'बैंक' बैलेंस और 'रीती तिजोरी' के तथ्य पर अधिक दिन प्रवंचनाका पर्दा नहीं डाला जा सकता ।

वही नौकर शाही, वही पुलिस, वे ही उच्चकर्मचारी और वही बिना मुकदमा चलाये नजरबन्दीकी अखण्ड शक्ति । अन्तर केवल यही है कि सारे कुकृत्यों पर लोकतंत्रका पालिश चढ़ा लिया गया है । विरोध और आलोचनाको सीखचोंमें बन्द करनेके तर्कसे प्रभावशून्य कर दिया गया है । क्यों एक करोड़के लगभग नागरिक घर-धन्धा और सर्वस्व खो कर निराश्रय वीरान और शरणार्थी होकर अभीतक दर-दरकी ठोकरें खा रहे हैं ! क्यों पूंजी शासनकी अनुभवहीनतासे चातुरीका खेल खेलते हुए राष्ट्रके कन्धे पर चढ़ बैठी है ! क्यों छोटे और बड़े कर्मचारी अपने स्वामि कर-दाताके प्रति मौखिक स्वामि भक्तिका पालन कर रहे हैं ! देशका श्रमिक आर्थिक गंभीरताको देखकर भी क्यों उत्पादनमें प्राणप्रणसे जुट नहीं

जाता ? राष्ट्र-धर्म क्यों उसके लिए मूल्य खो बैठा ? किसान अधिक से अधिक अन्न उपजाकर उसे छिपाकर बचानेके अपेक्षा क्यों नहीं राष्ट्रके बुभुक्षायज्ञमें कर्त्तव्यकी आहुति देना चाहता ? क्यों अधिकांश कांग्रेस-जन देश और शासनकी प्रत्येक अच्छाई बुराईको अपने वैयक्तिक लाभ-हानिके दंडसे मापते हैं ? सरकारी प्रयत्न क्यों व्यर्थ औपचारिक कागजी एवं प्राणहीन से हो रहे हैं ? क्यों जनसाधारण और मध्य-वर्गमें बेकारीकी करालता बढ़ती जा रहीहै ? मंगाई और चांदी सोनेका मूल्य क्यों आकाशकी ओर गति शील है ?

हमारे मतमें इस सम्पूर्ण अन्धकारके नेपथ्यमें यह स्पष्ट है कि वर्तमान शासन-व्यवस्था चाहे अपनेको बहुमत पर आधारित मान ले पर उसे लोक प्रवाहिनीका हार्दिक समर्थन और सहयोग नहीं मिल रहा है। इतिहासमें स्यात् किसी शासन व्यवस्था को इतना शीघ्र ऐसा नहीं भुगतना पड़ा। हमारी पैनी आंखें देख रही है कि निकट भविष्यमें एक प्रचण्ड बवण्डर बड़े वेगसे आ रहा है, जिसकी भीषणताका स्मरण करते ही हम रोमांचका अनुभव करने लगते हैं। विचारशील देशवासियों का कर्तव्य है, कि एक प्रभावशाली आन्दोलन द्वारा या तो वे अपने मदान्ध शासकोंको परिस्थितियों की गम्भीरता समझानेका प्रयत्न करें अथवा उन्हें तुरन्त निकाल बाहर करें।

ज्योतिष और आयुर्वेद

[ले०—श्री गणेशदत्त जी "इन्द्र" विद्यावाचस्पति]

फलित-ज्योतिष शास्त्रमें, ग्रहयोग द्वारा होने वाले शुभाशुभ जाननेके सम्बन्धमें बहुत कुछ वर्णन है। ग्रहोंकी गति, उनकी स्थिति, पारस्परिक दृष्टि, शत्रुमित्र योग, और उनके बलाबलको देखकर संसारमें होने वाले शुभाशुभका भविष्य, फलित ज्योतिष विज्ञान द्वारा भली प्रकार जाना जा सकता है। अनेक विद्वान् ज्योतिषके फलिताङ्गको नहीं मानते और इसके लिए उनके पास प्रमाण भी हैं; फिर भी इस फलित विज्ञानमें कुछ सत्य अवश्य है। फलितका कहना, अध्ययन, मनन और अनुभव पर अधिक अवलंबित है। ज्योतिर्विज्ञान अगाध है। आज भी उसमें खोज अपेक्षित है। अभी तक आचार्योंने जो कुछ बताया या ढूंढ निकाला है उसका पर्याप्त मनन भी मनुष्यके भविष्य कथन में सहायक हो सकता है। किन्तु ज्योतिषके अधूरे लेग्भगु लोगोंने भविष्य कथन करके जनतामें इसके प्रति अश्रद्धा उत्पन्न कर दी है। सच्ची बात तो यह है कि जनताको परखना तक नहीं आता कि कौन ज्योतिर्विद् है और कौन पाखण्डी, ढोंगी है। जब हम घर-घर घूमकर पंचांगके पृष्ठों को लौट पलटकर अंगुलियों पर मीन, मेषका नाट्य करने वाले ज्योतिषियों पर, भीख मांगने वाले डाकोतों पर और पंडित वेषधारी लोगों पर, और सड़कोंके किनारे फुटपाथ पर बैठने वाले ठगोरों पर विश्वास करने वाले लोगोंको ज्योतिष द्वारा अपना भविष्य पूछते-बताते देखते हैं तो ज्योतिष शास्त्रके इस उपहास पर बड़ा ही दुःख होता है। ऐसे ज्योतिषियों तथा अपना भविष्य जाननेके उत्सुक जिज्ञासुओंने ही इस विज्ञानके प्रति लोगोंका अविश्वास बढ़ाया है। फलित-भागके मर्मज्ञों द्वारा कथित भविष्य ही ठीक माना जाना चाहिए।

ग्रहों, और उपग्रहोंका प्रभाव भूमण्डल पर होता है। इनके प्रभावोंसे पृथ्वी, जल, वायु आदि सभी प्रभावित होते रहते हैं। जड़-चेतन पर इनका प्रभाव होता है, मनुष्य पर इनका प्रभाव होता है और स्वास्थ्यका निर्माण जन्मके समय स्थित ग्रहोंके अनुसार होता है। फिर जब तक ग्रहोंकी गति जीवनमें होती है तदनुसार स्वास्थ्य बिगड़ता सुधरता रहता है। आज हम यहां कुछ ऐसे ग्रहयोग रखेंगे जिनसे विविध रोगोंका ज्ञान सहज ही हो सकेगा।

श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग-योग

यदि जन्मके समय चन्द्रमा लग्नमें हो और पापग्रहोंसे युक्त हो अथवा शनि सप्तम स्थानमें स्थिर होकर चन्द्रमाको पापदृष्टिसे देखता हो तो ऐसे व्यक्तिको श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग आदिसे पीड़ित रहना अनिवार्य है। मीनका चन्द्रमा लग्नमें पापयुत दृष्ट हो और मंगल द्वितीय राहु व्ययमें हो तो निश्चित रूपमें वह प्राणी श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोगसे पीड़ित होता है। महादशा और अन्तर्दशामें उन ग्रहोंके फल स्पष्ट और अधिक होंगे।

दृष्टिमान्द्य योग

जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डलीमें जन्मके समय दूसरे, छठे, आठवें और बारहवें स्थानमें चन्द्र, सूर्य और शनि ये तीनों किसी भी उक्त एक स्थानमें विराजमान हों तो निश्चय उस व्यक्तिको आंखोंमें दोष होगा। दृष्टिमान्द्य अवश्यम्भावी है। साथ ही शरीरमें वातकी प्रबलता भी होगी। इन ग्रहोंकी महादशा और अन्तर्दशामें रोगोत्पात विशेष बढ़ेंगे।

कर्णरोग सम्बन्धी योग

जिस मनुष्यके जन्म समय कुंडलीमें तृतीय, पंचम और एकादश स्थानमें पाप ग्रह पड़े हों और उनपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो उस व्यक्तिको कान सम्बन्धी रोग अवश्य होगा। उसे कम सुनाई देगा अथवा बहरापन होगा। उन ग्रहोंका फल उनकी महादशा तथा अन्तर्दशा में विशेष होगा।

पूर्णवधिर-योग

जिसकी जन्मकुंडलीमें सप्तम स्थानमें तीन पापग्रह शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे वंचित हों तो वह बहरा होगा। उसे सुनाई नहीं देगा। धनुर्लग्नमें यह फल अधिक देखा गया है। उन ग्रहोंकी महादशा तथा अन्तर्दशामें रोगोपद्रव अधिक होगा।

वीर्य सम्बन्धी रोग-योग

जिसके जन्म समय लग्नमें गुरु हो और सप्तम स्थानमें मंगल हो तो उस व्यक्तिको वीर्य सम्बन्धी रोग होंगे। अर्थात् उसे गुप्त रोगोंसे त्रस्त रहना पड़ेगा। मकर लग्नमें यह योग विशेष प्रबल होता है। इन ग्रहोंकी महादशा तथा अन्तर्दशामें रोगोंकी प्रबलता रहेगी।

वात-विकार-योग

जिस व्यक्तिके जन्म लग्नमें शनि हो और पांचवें सातवें अथवा नवें स्थानमें मंगल हो तो ऐसे व्यक्तिको वातविकार होता है। वात प्रकोपसे पीड़ा भोगनी पड़ती है। चाहे किसी प्रकार की भी पीड़ा हो उसका मूलकारण वातप्रकोप ही होता है। इन ग्रहोंकी महादशा और अन्तर्दशामें इनका फल स्पष्ट होता है।

वात रोग-योग

जिस मनुष्यकी कुंडलीमें प्रथम स्थान (लग्नमें) बृहस्पति हो और सप्तम स्थानमें शनि बैठा हो तो उसे वात रोग अनिवार्य है। अर्द्धांग, लकवा, संधिवात, गृध्रसी, धनुर्वात आदि रोग हो जानेकी संभावना रहती है। जब-जब उक्त ग्रहोंकी महादशा तथा अन्तर्दशा होगी तब-तब रोगोपद्रव विशेष होंगे।

मन्दाग्नि-योग

यदि लग्नसे छठे स्थानमें चन्द्रमा जन्म कुंडलीमें स्थित हो तो वह बहुत कम खाने वाला मनुष्य होगा। इसका कारण अग्निमान्द्य होगा। जब चन्द्रकी महादशा अथवा अन्तर्दशा आवेगी तब अग्निमान्द्य विशेष बढ़कर तज्जन्य विविध रोग पैदा हो जावेंगे।

कफ वात-विकार-योग

जन्म समय जिस व्यक्तिकी कुंडलीमें पंचम स्थानमें मंगल हो और शुभग्रहोंकी उसपर दृष्टि न हो तो वह व्यक्ति कफवात सम्बन्धी विकारोंसे पीड़ित रहता है। वृषभ लग्नमें चन्द्र गुरुके छठे और बुध शुक्रके चतुर्थ होने पर यह योग विशेष प्रबल होता है। मंगलकी महादशा तथा अन्तर्दशामें पूर्ण फल होगा।

दुर्बलता सूचक योग

जन्म कुंडलीमें लग्नसे तृतीय स्थान पर यदि शुक्र स्थित हो तो ऐसी कुंडली वाला व्यक्ति दुर्बल शरीर और निर्बल होता है। शुक्रकी महादशा पथा अंतर्दशा में विशेष निर्बलता और दुर्बलता होगी।

❀ फलित पर विचार ❀

[लेखकः— श्रीयुत पं० रघुवीरशरणजी शर्मा वैद्य]

ज्योतिषका फलित विभाग जिस पर भारतमें बहु-संख्यकोंका विश्वास है, उस पर विचार करते समय कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर ध्यान रखना आवश्यक है। प्रस्तुत लेखमें उक्त बातों पर ही प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया जायगा।

आधार

फलितके तीन आधार हैं, जन्मपत्र वर्षपत्र और ग्रहगोचर। इनमें भी ग्रहगोचर ही अधिक व्यवहृत होता है। इस ग्रहगोचर पर ही जन साधारणका शुभ-अशुभ फल कहा जाता है।

ग्रहस्थिति वश फल

ग्रह स्थिति पर लिखा है कि मनुष्यकी जन्मराशिसे १२ वें आठवें और जन्मके यदि शनि, मंगल तथा बृहस्पति हों तब देश त्याग धनकी हानि, और मरण तुल्य शरीर कष्ट (मारकेशकी दशा अन्तर्दशामें मरण भी) होता है।

द्वादशाष्टमजन्मस्थो शनिरङ्गारकोगुरुः ।
कुर्वन्तु प्राण सन्देहं देशत्यागं धनक्षयम् ॥१॥

एक आचार्यका मत है कि सूर्य राहु (राहुसे केतुका भी ग्रहण होता है) शनि और मंगल यदि एक दो चार पांच, सात आठ नौ और बारहवें स्थान पर हों तब भी धन (सम्पत्ति) और धान्य (अन्न) का नाश होता है।

धनजन्मनिपञ्चमसप्तमगाश्चतुरष्टम द्वादश धर्मयुताः
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥

इसके विपरीत बुध यदि चतुर्थ हो तब आत्मीयजन तथा कुटुम्बकी वृद्धि तथा धनकी प्राप्ति होती है।

चतुर्थगे स्वजन कुटुम्ब वृद्धयो धनागमो भवति च शीतरश्मिजे।

ऐसे ही अष्टम शुक्र होने पर वस्त्र प्राप्ति भवन निर्माण (मकान बनाना) तथा स्त्रीकी प्राप्ति (विवाह) होती है।

मानोऽष्टमं भवनपरिच्छद प्रदो लक्ष्मीवतीमुपनयति स्त्रियं च सः ॥

किन्तु उक्त बातों पर विचार करते समय हमें आचार्य वराहमिहिरके इस कथनको भी ध्यानमें रखना चाहिये।

नीचेऽरिभेऽस्ते चारिदृष्टस्य सर्वं वृथोयत् परिकीर्तितम्।
पुरतोऽन्धस्येव भामिन्याः सविलासकटाक्ष निरीक्षणम् ॥
(वाराहीसंहिता अ० १०४)

अर्थात् ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह यदि नीच राशिका हो, शत्रु क्षेत्री हो, उस ग्रह पर शत्रुग्रहकी दृष्टि हो, अथवा अस्त हो, तो ऐसी दशामें ग्रहोंका शुभ तथा अशुभ फल कुछ नहीं होता। जैसे अन्धे पुरुषके सामने सुन्दर स्त्रीका विलास संयुक्त कटाक्ष निरीक्षण कोई फल नहीं करता। इसके विपरीत यदि ग्रह उच्चका हो, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो, उदित हो, मित्रग्रहकी दृष्टि हो, तो पूर्णफल होता है। साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि कोई भी ग्रह अपनी दशामें (राशि भोग कालमें) निरन्तर शुभ अशुभ फल नहीं करता। इनमें से कुछ ग्रह आदिमें कुछ मध्यमें और कुछ अन्तमें फल करते हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

दाद-खाज कुष्ठकारक योग

जन्म कुंडलीके अष्टम स्थानमें शनि पर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो ऐसे व्यक्तिको चर्मरोग, दाद, खाज, कोढ आदि होंगे। शनिकी महादशा तथा अन्तर्दशामें चर्मरोग की प्रबलता होगी।

(संकलित)

भवनादिगतौ फलदौ रविभौमौ मध्यगौ च गुरुशुक्रौ ।
अन्त्यगतौ शनिशशिनौ सदैव फलदः शशांकसुतः ।
(वशिष्ठ संहिता अ० १८ श्लो० १५)

सूर्य और मंगल आदिमें गुरु और शुक्र मध्यमें, शनि तथा चन्द्रमा दशाके अन्तमें फल करते हैं । और बुध आदि मध्य तथा अन्तमें सदैव अपना शुभाशुभ फल करता ही रहता है । जैसे शनिका राशि भोगकाल ढाई वर्ष है अतः अन्तके दस मासमें, सूर्यकी दशा एक मास की है यह प्रारम्भके दस दिनमें, बृहस्पतिका भोग काल एक वर्ष है अतः यह मध्यके ४ से ८ मास तक फल करेंगे ।

अग्रिम राशिका फल

फल कहनेके समय 'वशिष्ठ-संहिता' की यह बात भी स्मरण रहनी चाहिये कि प्रत्येक ग्रह राशिके अन्तमें (२५ अंश भोगनेके बाद) अग्रिम राशिका भी फल देने लगता है, और वक्री ग्रह पिछली राशिका देने लगता है । इसको "मुहूर्त-चिन्तामणि" में अधिक स्पष्ट लिखा है । उसका कहना है कि—सूर्य ५ दिन, भौम ८ दिन, बुध ७ दिन शुक्र ७ दिन, राहु तीन मास, शनि छः मास और बृहस्पति दो मास पूर्व अपनी राशि पर रहते हुए भी अगली राशिका फल करने लगते हैं ।

भवनान्त्यगताश्च यदा धिष्ण्यान्त्य गताश्च गगनचराः ।
दद्युः परभवनफलं प्राग्भवन फलं च वक्रिता ये च ॥
दशदिवस पञ्चदिन त्रिपक्षमतिचारवक्रयोर्दद्युः ।
(वशिष्ठसंहिता)

सूर्यारसौम्यास्फुजितोऽक्षनाग सप्ताद्रिघस्रान् विधुरग्नि-नाड़ी । तमोयमेज्यास्त्रिरसाद्विमासान् गन्तव्य राशेः फलदाः पुरस्तात् । (मुहूर्त चिन्तामणि प्र० ४)

अतिचारी तथा वक्री

यदि ग्रह अतिचारी अथवा वक्री होता है तब निम्न-लिखित अवधिपूर्व फल करने लगता है—

मंगल १० दिन, बुध ५ दिन, बृहस्पति १॥ मास, शुक्र ५ दिन, और शनि ५ मास पूर्व अतिचारी और वक्री होने पर क्रमशः अगली तथा पिछली राशियोंका फल देने लगते हैं । सूर्य चन्द्र कभी वक्री नहीं होते, राहु केतु सदैव वक्री रहते हैं, अतः इनका उल्लेख नहीं किया गया । साथ ही यह भी जान लीजिये कि सौम्य ग्रहका अतिचार तथा क्रूर ग्रहका वक्री होना अशुभ फलदायक होता है ।

अतिचारगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्व मागते ।
हा हा भूतं जगत् सर्वं रुण्डं मुण्डं च जायते ।
(शी० बो० ४।७१)

अब हम पहिले कहे उच्च नीच शत्रु मित्र आदि ग्रहों का वर्णन कर देना भी उचित समझते हैं ।

उच्च ग्रह

सूर्य मेषका, चन्द्रमा वृषका, मंगल मकरका, बुध कन्याका, गुरु कर्कका, शुक्र मीनका, और शनि तुलाराशि का उच्चका होता है, यह नियम जन्म वर्ष ग्रह गोचर आदि में सर्वत्र लागू होता है ।

अज वृषभ मृगाऽङ्गना कुलीरा झष वणिजौ च दिवाकरादि तुङ्गाः । (बृहज्जातक)

नीच ग्रह

इसके विपरीत प्रत्येक ग्रह अपनी उच्चराशिसे सप्तम राशि पर नीचका होता है । जैसे—सूर्य तुला, चन्द्र वृश्चिक, मंगल कर्क, बुध मीन, गुरु मकर, शुक्र कन्या और शनि मेष राशि पर नीच का कहाता है ।

मित्र ग्रह

सूर्यके बृहस्पति चन्द्र और मंगल । चन्द्रके सूर्य बुध । मंगलके सूर्य चन्द्र और गुरु । बुधके सूर्य और शुक्र । बृहस्पतिके सूर्य चन्द्र और मंगल । शुक्रके बुध और शनि । शनिके बुध और शुक्र मित्र हैं ।

शत्रु ग्रह

सूर्यके शुक्र और शनि । मंगल का बुध । बुधका चन्द्र । बृहस्पतिके शुक्र और बुध । शुक्रके सूर्य और चन्द्र । शनि के सूर्य चन्द्र और मंगल शत्रु होते हैं । शेष ग्रह सम होते हैं ।

कुजः सितबुधौ शशी रविबुधौ सितक्ष्मासुतौ गुरुर्यम-शनी गुरुर्भवनपा इमेमेषतः । (जातकालंकार ।१।१७)

ग्रहोंकी राशि

सूर्य सिंहका, चन्द्र कर्कका, मंगल मेष और वृश्चिक का, बुध कन्या और मिथुनका, गुरु धनु और मीनका, शुक्र वृष और तुलाका, शनि मकर और कुम्भ राशिका स्वामी होता है। इसके अतिरिक्त ताजिकने कन्याका राहु और मिथुनका केतुको भी स्वामी माना है।

कन्या राहु गृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनंस्मृतम्। (ताजिक)

जैमिनीय सूत्रकी वृद्धकारिकामें वृश्चिकका मंगल और केतु, कुम्भका शनि और राहुको भी स्वामी लिखा है।

कुजसौरि केतुराहू राजानावलिकुंभयोः।
अर्थात् वृश्चिकस्य कुजकेतू स्वामिनौ, कुंभस्य शनि राहू स्वामिनौ। (टीकाकार)

ग्रह-दृष्टि

तीसरे दशवें एक चरण, नवम और पंचम दो चरण, चौथे और आठवें तीन, और सप्तम घर पर चार चरण अर्थात् पूर्ण दृष्टि प्रत्येक ग्रहकी होती है।

तृतीयदशमेग्रहो नवमपञ्चमेऽग्राम्बुनी क्रमाच्चरण वृद्धितः स्मरगृहं ततः पश्यति। (जातकालंकार)
पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनि जीव कुजादयः।
विशेषतश्च त्रिदश त्रिकोण चतुरष्ट मान्।(लघुपाराशरी)
सुतमदननवान्त्ये पूर्णदृष्टिश्च राहुयुगदशमपिगेहे वीक्षितेऽर्द्धापि चाहुः। सहज रिपुगतोऽसौ पाददृष्ट्या सपश्येन्निजभवनमुपेतो लोचनान्धः प्रदिष्टः॥

(मेरा नम्र किन्तु निश्चित मत है कि एक या दो चरण दृष्टियोंका कोई विशेष फल नहीं होता) ऋषि पराशरने दृष्टि सम्बन्धमें अपना भिन्न ही मत प्रकट किया है। उनका कथन है कि सप्तम घर पर प्रत्येक ग्रहकी पूर्ण दृष्टि होती है, यह साधारण नियम है। किन्तु तीसरे दशवें शनि की, पंचम नवम पर बृहस्पतिकी, और चौथे आठवें घर पर मंगलकी पूर्ण दृष्टि होती है। (मैं इसी मत पर विश्वास करता हूं) यह कहना भी प्रासङ्गिक है कि उक्त पराशर मत जन्मपत्रमें ही व्यवहृत होता है, ग्रहगोचरमें केवल सप्तम दृष्टि ली है। वर्षफलके सम्बन्धमें ताजिकने इसके अतिरिक्त कुछ और भी लिखा है "दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहा" अर्थात् प्रत्येक ग्रहकी नवम पंचम दृष्टि ही बलवती होती है आदि आदि। इसके अतिरिक्त राहु दृष्टि भी अपना स्थान पृथक् ही रखती है। राहुको ५।७।९।१२ घर पर पूर्ण दृष्टि होती है, ४।१० पर अर्द्ध दृष्टि,३।६ स्थान पर पाददृष्टि। यदि अपनी राशि पर हो तो अन्धा होता है, फिर कहीं नहीं होती। ऋषि पराशर ने सहज ही इसका पातक काट दिया है, उनका कहना है कि राहु केतु जिसके भावमें हों (जिसकी राशिमें हों) और जिस भावेशके साथ हो ये उन्हीं उन्हीं का फल करते हैं, इनकी स्वतन्त्र सत्ता कुछ नहीं।

यद्यद्भाव गतौ वापि यद्यद्भावेश संयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।(लघुपाराशरी)
(यह जन्मपत्रके सम्बन्ध में है नकि अन्यत्र)

फलितमें कठिनाई

फलित कहनेमें कभी-कभी पंचाङ्गोंकी विभिन्नता भी कठिनाई उत्पन्न कर देती है। ग्रहोंका उदय अस्त, ग्रहोंका वक्री मार्गी तथा ग्रहोंका राशि संक्रमण काल पंचाङ्गोंमें एकसा नहीं लिखा मिलता, किसीमें कुछ है तो किसीमें कुछ। ऐसी दशामें फलितका कहना न केवल कठिन है बल्कि असंभव ही है। एकबार आयुनिर्णयार्थ एक जन्मपत्र मेरे सामने आया; टेवेमें लग्न मिथुन थी, शनि मकरका अष्टम भावमें रखा गया था, किन्तु यह नोट भी लिखा था कि काशी 'विश्व-पंचाङ्ग'में शनि धनुःराशि पर है। मैंने ढूंढ़ु बंबई केतकी चित्रशाला प्रेस पूना सभी देखे तथा रैफल (एक अंग्रेज ज्योतिषीके निकाले हुए उस वर्षके)ग्रह स्पष्ट भी देखे तब मैंने भी इन सबमें शनि मकरका ही पाया। अतः मैंने भी बहुमतका आदर करके मकरका ही मान लिया। यद्यपि 'विश्व-पंचाङ्ग' पर सहसा अविश्वास नहीं किया जा सकता था। अब आइये अपने विषय पर यदि शनि धनुःका मानकर सप्तम भावपर माना जाता है तब तो जैमिनीय सूत्रके अनुसार मध्यायुः आती है और मकर पर माना जाता है तब अल्पायुः ही रह जाती है। यह विभिन्नता फलितमें गड़बड़ करती रहती है। यह तो रही आयुकी बात, आयुके अतिरिक्त सप्तम भाव और अष्टम भावस्थ शनिका फल भिन्न-भिन्न है ही यह

इस समय बताने की आवश्यकता नहीं। इस पर फिर कभी प्रकाश डाला जायगा।

प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम्। ३।
मध्यराद्यन्तयोर्वा हीनम्। ४। जैमिनीय अ० २।
प्रथम द्वितीययोश्चरस्थिरयोः स्थितयोर्लग्नेशाष्टमेश योर्मध्यम्। तथा अन्त्ययो स्थिरद्विस्वभावयोमध्ये मध्यायुः मध्ययोः स्थिरयोर्मध्येस्थितयोर्हीनम्। तथा आद्यन्त योश्चरद्विस्वभावयोर्मध्येस्थितयोर्हीनम् हीनायुः स्यात्। (टीकाकार)

इसके अतिरिक्त और भी षड्वर्ग दशवर्गान्तर्गत होरा, द्रेष्काण आदि हैं जिनको शास्त्रोंने अनेक प्रकारसे लिखा है--गड़बड़ उत्पन्न करते हैं इन पर फिर कभी प्रकाश डालनेका प्रयत्न करूंगा। इस समय तो ज्योतिषियोंसे यह प्रार्थना है कि फलितके अन्तर्गत गणित विभाग जन्म पत्र, वर्षपत्र निर्माण करना तथा इनका फल बताना दो भागोंमें हो जाना चाहिये। इससे कार्यमें सुविधा होगी। और भी अच्छा हो कि जन्मपत्रके बारह भाव हैं, जिनका फल कहा जाता है, फल वक्ता इन भावोंमें से दो चार भावोंको जो उन्हें अभीष्ट हों जैसे केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ अथवा अन्य और कोई भावोंको चुन लें और उन्हीं भावोंका फल कहे। उक्त भावोंमेंसे जिस ग्रन्थका अधिकांश फल मिलने वाला अथवा असत्य बैठने वाला हो उसका विवरण सहित प्रतिशत लिखकर पुस्तकाकार रखते रहना अथवा पत्रोंमें प्रकाशित करते रहना चाहिये। ताकि और भी लाभ उठा सकें। इस कार्यमें उनका सहयोग भी परमावश्यक है जो महानुभाव ज्योतिषसे धनोपार्जन नहीं करते, जिनका यह शास्त्रज्ञान व्यसन मात्र है। मैं स्वयं भी ऐसे ही लोगोंमेंसे हूं, अपना जीवन निर्वाह वैद्यकसे करता हूं। मेरा विचार है यदि इस पद्धति पर अमल किया गया तो कार्य ठोस होगा जो ज्योतिष की उन्नतिमें सहायक होगा।

राशिज्ञान

राशि या जन्मराशि जाननेके लिये राशि, नक्षत्र तथा राशि नक्षत्रमिश्रित कुछ पाठ याद करना पड़ता है जैसे— 'अश्विनीभरणी कृत्तिकापाद मेष" आदि किन्तु इस लिख- लिखित विधिसे पाठ याद करनेकी आवश्यकता न रहेगी।

विधि—जिसकी राशि जाननी हो अश्विनी नक्षत्रसे लेकर उसके नक्षत्रके अक्षरोंकी संख्या तक गिन जाइये (उसके नामका पहिला अक्षर जिसपर आवे वही उसका नक्षत्र समझना चाहिये) उन अक्षरोंकी जितनी संख्या हो उसमें ९ का भाग दे दो, जितनी बार भाग जाय वही राशि समझनी चाहिये। उदाहरण—नाम 'रामप्रसाद' है 'पेपोरारी चित्रा' नक्षत्र है 'रा' अक्षर संख्या ५५ है ९ का भाग देने पर ५४ तक ६ राशि कन्या गत होकर सातवीं तुला राशि हुई।

स्पष्टीकरण

२७ नक्षत्र हैं। प्रत्येक नक्षत्रमें ४ अक्षर हैं, यही अक्षर चरण पाद कहलाते हैं। इस प्रकार ९चरणकी या सवा दो नक्षत्रकी एक राशि होती है, इन्हीं राशियों पर शीघ्रगामी चन्द्र सवा दो दिनमें और मन्द गति शनि ढाई वर्षमें प्रत्येक राशि पर रहता है।

पतित्यक्ता योग

'सूर्येस्ते पतिना त्यक्ता'के अनुसार जिस स्त्रीके जन्म पत्रके सप्तम घर पर सूर्य हो तो उस स्त्रीका पति उसे त्याग देता है (छोड़ देता है) बृहज्जातकने भी ऐसे दो योग "उत्सृष्टा तरणौ" "क्रूरे हीन बलेऽस्तगे स्वपति सौम्येक्षिते प्रोज्झिता।" लिखे हैं। प्रथम वाक्यका अर्थ तो पूर्वोक्त ही है। दूसरेमें कहा है कि निर्बल क्रूरग्रह सप्तम स्थानमें हो और उसे सौम्यग्रह देखता हो तब वह स्त्री पति त्यक्ता होती है। पहिले योग पर मेरा दो चार बारका अनुभव है, ठीक बैठता है। स्वयं मेरी लड़कीके सप्तम स्थान पर बुध और सूर्य हैं। इसका विवाह १३ मई स० १९४१ और द्विरागमन १६ नवम्बर सन् १९४१ ई०को हुआ। इसके मास डेढ़ मास पश्चात् ही पति त्यक्ता हो गई, न केवल पति त्यक्ता हो गई अपितु सुसराल वाले जो भी सास श्वसुर ननद आदि उस घरमें थे उन सबका बड़ा ही दुर्व्यवहार रहा, परिणाम स्वरूप लड़की सरला (वस्तुतः सरला) का स्वास्थ्य एक दम गिर गया और उसे ज्वर मन्दाग्नि आदि रोग रहने लगे, रक्तकी एक दम कमी हो गई। जैसे तैसे आठ मास बाद मैं अपने घर ए ऐ

प्राया आज भी वह ठीक नहीं है, सायंकाल ज्वर बढ़ जाता है चिकित्सा हो रही है। इसके फलकी जिज्ञासासे मैंने सरलाका टेवा अपने मित्र पं० कालीचरणजी (सनावद) को भेजा तो उन्होंने भी इन शब्दोंमें समर्थन किया है— "सूर्येऽस्ते पति त्यक्ता" यह एक ऐसा दुर्योग है जिसके जहां पर देखा वहीं पर सत्य पाया है।

फुटकर अनुभव

विगत १६३७ ई० में एक लड़की (सरला) के कन्धा पर काक (कौवा) बैठा,इस घटनाके डेढ मास पश्चात् लड़की की माताकी मृत्यु हो गई। फिर सन् १६४१ में सितम्बर मासमें एक लड़केके कन्धे और कमरमें काकने तीन बार चोंच मारी, दो मासके भीतर लड़केके छोटे भाईकी मृत्यु हो गई। फिर एक वर्ष बाद भाद्रपद कृष्ण ५ संवत् १६६६ को उसी लड़केकी कमर पर कौवा बैठा, इसकी किम्वदन्तीके अनुसार प्रायश्चित्त कर दिया गया, फिर अशुभफल नहीं हुआ।

काक स्पर्शादि पर प्रायश्चित्त

(१) शूकरकी खुडी (शूकरका निवास स्थान) को स्पर्श करना (२) सुवर्णकी अंगूठीको धोकर पिलाना (३) लोहेकी छलनीमें पानी डालकर स्नान कराना(४)सवा सेर सातों अन्न छलनीमें रखकर एक गेंहू के आटेका काक बनाकर इस काकको कोयले से रंगकर इसको छलनी में रखकर भंगीको दे देना। साथ ही उस मनुष्य के वस्त्र जो कौवा बैठनेके समय धारण किये हुए हों उन सबको भी भंगीको दे देने चाहिये। उक्त उपाय तत्काल होने चाहिये, यदि कारण वश तत्काल न हो सकें तो एक दो दिन बादमें भी सही किन्तु नं० ४ की विधि तत्क्षण न होने पर बुध या शनिवारमें होनी चाहिये। उक्त विधि चारोंमें से एक-एक ही पर्याप्त है किन्तु मैंने चारों ही कराई थीं। मैंने इसका अनुभव केवल एक बार ही किया है, जिन सज्जनों ने बताई वे सभी अपनी अपनी अनुभूत कहते थे।

सन् १६४१ ई० में एक स्त्रीके जानु (घुटने) पर दुधन्नी (पहिली चांदीकी दुअन्नी) के समान वृत्ताकार नील वर्णका निशान हुआ। आठ दिन बाद रक्तवर्णका हो गया, ५-७ दिनमें अदृश्य हो गया, इस घटनाके लगभग २० दिन बाद उस स्त्रीका लड़का मर गया। इस प्रकारके चिन्ह होने पर घरमें अथवा रिश्तेदारीमें मृत्यु सूचक होते हैं। यह मेरा २०-२० बारका अनुभव है। एक वृद्धा स्त्रीने मुझसे कहा था कि ऐसे चिन्ह भोजन बनाते समय या भोजन करते समय चिन्हवान् मनुष्य प्रथमबार देखे तो मृत्यु सूचक और स्नान करते समय देखे तो रोग सूचक होते हैं। किन्तु एक दो बार इसके विपरीत भी पाया, अर्थात् मृत्युसूचक भी पाया पर दूरकी रिश्तेदारीमें। अब यह लेख अधिक बढ़ गया है अतः यहीं समाप्त करता हूं। विशेष अगले अङ्क में फिर कभी लिखूंगा।

सूक्ति-सुधा

सन्तुष्टस्य निरीहस्य स्वात्मारामस्य यत् सुखम्।
कुतस्तत् कामलोभेन धावतोऽर्थेहया दिशः॥
सदा सन्तुष्ट मनसः सर्वासुखमया दिशः।
शर्करा कण्टकादिभ्यो यथोपानत् पदः शिवम्॥

(भा० ७।१५।१६-१७)

जो सन्तुष्ट है, निष्काम है तथा अपने आपमें ही रमण करने वाला है, उसे जो सुख मिलता है, वैसा सुख कामला-लसासे तथा धनकी अभिलाषासे चारों दिशाओंमें दौड़ने वाले लोगोंको कैसे प्राप्त हो सकता है।

असंकल्पाज्जयेत् कामं क्रोधं काम विवर्जनात्।
अर्थानर्थेक्षया लोभं भयं तत्त्वावमर्शनात्॥

(श्रीमद्भागवत ७।१५।२२)

संकल्पके त्याग द्वारा कामको जीते, कामके त्याग से क्रोध पर विजय प्राप्त करे अर्थ—धनसे जो अनर्थ होते हैं, उन्हें दृष्टिमें रख कर लोभका त्याग करे तथा तत्त्वके विचार द्वारा भयको जीते।

खगोल विज्ञानकी एक झलक

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्यः]

जिस समय हम किसी रात्रिमें आकाशकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमें तारागणोंसे इस प्रकार सजा हुआ प्रतीत होता है, जैसे अनेक वर्णका मणियोंसे सुसज्जित लोकोंकी ईश्वरने रचना की है। किसी अज्ञ व्यक्तिके लिये तो यह तारागण सामान्य और प्रतिदिनकी देखी जाने वाली वस्तु है। परन्तु विज्ञजनोंके लिये यह तारागण प्रत्यक्ष ईश्वर की सत्ताको बतलाने वाले पृथ्वीकी भांति यह भी लोक हैं जो भूमान से हजारों लाखों गुणा बड़े हैं। अभ्यास द्वारा कई रात्रियोंमें ध्यानपूर्वक निरीक्षण करनेसे पता लगेगा कि एकसे प्रतीत होने वाले तारागणोंमें भेद है। इनमें कुछ तारागण ऐसे भी हैं जो प्रतिदिन पूर्वकी ओर से निकलकर पश्चिमकी ओर अस्त हो जाते हैं। इनके अतिरिक्त आकाशमें कुछ ऐसे तारे भी हैं जो आकाशचक्रको दैनिक गतिके कारण तारागणोंके मध्यमें स्वतन्त्र गतिसे पूर्व या पश्चिमकी ओर चलते रहते हैं। इन ताराओंसे अधिक प्रकाश वाले (ग्रह) बड़े आकार वाले होते हैं। नक्षत्रोंके तारे आकाशके प्रत्येक विभाग में दिखाई देते हैं। परन्तु ग्रह आकाशके एक विशेष विभागमें ही दीखते हैं। ऐसे ग्रह जो नेत्रोंसे प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, संख्यामें सात हैं, उनके नाम सूर्य-चन्द्र-भौम बुध-गुरु शुक्र-शनि हैं। इनके अतिरिक्त दूरवीक्षकयन्त्र द्वारा दिखाई देते हैं इनके नाम यूरेनस-हर्शल, (इन्द्र) नैपच्यून (वरुण) और प्लूटो है। इनके अतिरिक्त राहु केतु भी हैं—यह आकाशमें अदृश्य विंदुमात्र हैं। इनके बिम्ब नहीं हैं। अतः इनको उपग्रह कहते हैं, क्योंकि ग्रहोंकी भांति यह अदृश्य बिंदु भी पृथ्वी पर अपना प्रभाव डालते हैं। सूर्यका केन्द्र बिंदु आकाशमें जिस अदृश्य मार्गमें शनैः शनैः पश्चिमसे पूर्वकी ओर चलता है उसे क्रांतिवृत्त कहते हैं। शेष ग्रह भी इस मार्गसे ८ अंशके अन्दर अन्दर उत्तर या दक्षिणमें रहते हैं। समस्त आकाशमें चक्राकारसे फैले हुए इस १६ अंश चौड़े मार्गका नाम ही राशिचक्र है। जिस मार्ग में कोई ग्रह आकाशमें चलता है तो उस ग्रहका विमण्डल कहलाता है और जिन दो बिंदुओं पर वह मार्ग क्रांति वृत्तको काटता है, उन्हें पात कहते हैं। चन्द्रके पातोंका नाम राहु केतु है। राहु वह बिंदु है जहां से चन्द्र क्रांति वृत्तके उत्तरमें चला जाता है। और केतु वह बिंदु है जो चन्द्र क्रांति वृत्तके दक्षिणमें चला जाता है। गोल गणित के नियमसे यह पात एक दूसरेसे छः राशिके अन्तरसे रहते हैं। विशेष ध्यानसे देखनेसे पता चलता है कि ग्रहोंकी गति एकसी नहीं रहती, न्यूनाधिक होती रहती है। भौमादि पांच ग्रह तो कभी पश्चिमसे पूर्वको और कभी पूर्वसे पश्चिमकी ओर चलते हैं। पश्चिमसे पूर्वकी ओर की गतिको मार्गी और पूर्वसे पश्चिमकी ओरकी गतिको वक्री कहते हैं। सूर्य चन्द्र सदैव पश्चिमसे पूर्वकी ओर ही भ्रमण करते हैं, इसलिये सदैव मार्गी कहलाते हैं। किसी भी ग्रहका स्थान नियत करनेके लिये हमें उसका दो ओरसे अन्तर मालूम होना चाहिये—पृथ्वी पर दो अन्तर (अक्षांश) और मध्यमा रेखासे देशान्तर इन दोनोंके निश्चित होने पर ग्रहस्थानका परिचय शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। विशेष ग्रहस्थानका निरीक्षण करनेके लिये क्रांतिवृत्तसे ग्रहोंकी स्पष्ट क्रान्ति और विषुवद् वृत्तसे स्पष्ट विषुवांश प्राप्त करने चाहिये। इनमें विशेष बिन्दु सायन मेषादिसे अन्तर देखा जाता है, ग्रह स्पष्टका अर्थ है आकाशमें दृश्य ग्रहबिंबका क्रांतिवृत्तमें एक विशेष बिंदुसे राश्यादिमें अन्तर—यह विशेष बिंदु रेवती तारा है जो राशिचक्रका आदि और अन्त है। इसी स्थानको निरयन मेषादि कहते हैं। यहांसे ग्रहोंके निरयन भोग स्पष्ट किये जाते हैं। रेवती तारा स्थिर होनेसे यह बिंदु भी स्थिर है। जिस बिंदु पर क्रांतिवृत्त और विषुवद् वृत्त एक दूसरे को काटते हैं, उस स्थानका नाम सायन मेषादि है। यहांसे ग्रहोंका अन्तर सायन स्पष्ट कहलाता है। यह बिंदु सदा पीछेको चलता है इसकी गतिको अयनगति

❀ व्यापारका भविष्य ❀

[लेखकः—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र, एल. एम. ए., एम. डी. एच.]

[विद्वान् लेखकने यह व्यापारिक भविष्य सायनगणनानुसार पाश्चात्य पद्धतिसे लिखा है। व्यापारी वर्ग अनुभव करके लाभ उठायें। लेखकी भाषामें हमने कोई विशेष संशोधन नहीं किया है। —सम्पादक]

यहां व्यापार क्षेत्रमें विशेष परिवर्तन होनेकी सम्भावना मात्र है, किन्तु परिणाम केवल व्यापार क्षेत्रमें ही विशेषरूप से नहीं होगा, ऐसी सम्भावना ग्रह योग स्थितिको देखनेसे प्रतीत होती है और जब-जब व्यापार क्षेत्रमें परिवर्तन होगा उसका विवेचन इस लेखमें पाठकोंके लाभार्थ किया है, उसे पाठक वृन्द सम्यक प्रयोगमें लाकर लाम लेवें।

अक्टूबर मास और ग्रह योग

ता० २०-१०-५० को सूर्य नेपच्यून युति १ अंश और २७ कलाके अन्तर पर रात्रिमें ४।५५ पर होगी। इस युति (Conjunction) का प्रभाव व्यापार ही नहीं बल्कि समस्त राजनैतिक क्षेत्रोंमें भी परिवर्तनकारी होगा। यह युति सायन तुला राशिमें हो रही है, और निरयनसे कन्या राशिमें। सायनाधार तुला मन्दी लाने वाली राशि है। इस युतिसे चांदी सोनेके बाजारमें मन्दीका अच्छा प्रभाव होवें, किन्तु अन्य सब पदार्थोंमें भी मंदीका प्रभाव अवश्य ही होगा, परन्तु चांदी सोनेमें मंदी न आकर बाजारमें तेजी अवश्य ही आवेगी जबकि युति होगी उससे २ अंश पूर्वसे लेकर युतिके निश्चित काल तक चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। पुनः युतिके पश्चात् दो अंशके अन्तरके समयमें चांदी सोनेमें मंदी आवेगी, अतः चांदी सोनेके व्यापारी ध्यान पूर्वक काम करें वरना हानि उठानी पड़ेगी।

ता०१० अक्टूबर को ही चन्द्र शनि युति हो रही है रात्रिमें याने प्रातः ६।३६ पर १ अंश ३१ कलाके अन्तरसे, इस युतिका प्रभाव चांदी सोनेमें तेजी कारक होगा किन्तु चंद्रके साथ अन्य ग्रहोंकी युति यदा कदा होती है तब युति होनेके २ घण्टे पूर्वसे ही तेजी कारक ग्रहयोगमें तेजी और मंदी कारक ग्रहयोग में मन्दी आती है। पूर्ण युत्यंशोंके पश्चात् उसका विपरीत फल होता है तेजी आती है तो फिर मंदी और मंदी आती है तो फिर तेजी ऐसा आर्थिक ज्योतिःशास्त्र Financial Astrology का मत है--ता० १०-१०-५० को ही चंद्र बुध युति भीहै यह भी कन्याराशिमें हो रही है, कन्या राशि न तेजी कारक राशि है और न मंदी कारक, इसलिये, यह बाजार को स्टेडी रखेगी,(All Commodities are Steady इस चंद्र बुधकी युतिमें यदि कोई ग्रह इन्हें सप्तम दृष्टिसे देखते हों तब अवश्य ही तेजी आती है अन्यथा सामान्य फल होता है। इस मासके प्रारम्भमें हर्शल चंद्र युति है इसके प्रभावसे भी बाजारमें घटा बढ़ी होनी चाहिये, किन्तु युतिकाल ११।१६ प्रातःका है इस कारण इसका प्रभाव बाजारके खुलनेके बाद में अवश्य ही होगा और इस घटाबढ़ीमें चांदी सोनेके बाजारमें विशेष तया प्रभाव तेजी का ही होगा, कारण कि चंद्र और हर्शल कर्क राशिमें युति कर रहे हैं कर्क राशि चांदीकी प्रधान राशि है (Bearish Sign) इस कारण तेजी अवश्य ही आवेगी। ३।४ दिन पूर्व पौते करें। ता० ३।१०।५० का चंद्र संगल का प्रतियोग (सप्तम) है इसका प्रभाव भी चांदी सोनेमें तेजी कारक होगा। ता० ११ अक्टूबर १९५० को चंद्रके साथ सूर्य शुक्र नेपचून युति कर रहे हैं इस प्रकारके योग बलसे ता० ११ को भी चांदी सोनेमें खुलने बाजार तेजी आकर मध्यान्ह तक बराबर तेजी चले। ता० १५-१०-५० चंद्र मंगल युति है—यह चांदीमें अवश्य ही तेजी करेगी १) २) रु० की दिनके ३।४५ तक फिर चांदीका बाजार नरमीमें चलेगा। ता० १७ को शुक्र नेप-

---

बिंदुसे रेवतीका अन्तर अयनांश कहलाता है। क्रांतिवृत्तसे दक्षिणोत्तर अन्तरका नाम ही शर है, इनका स्पष्टी करण गणित द्वारा हो सकता है। आगेके लेखोंमें खगोल विज्ञानकी मीमांसा सूक्ष्म विचारके साथ उपस्थित करेंगे।

चून युति है तुलाराशि में, इसके प्रभावसे रुई जूट कपड़े में मंदी होवे और चांदी सोनेमें भी मंदी। ता० १६ को हर्शल वक्री हो रहा है इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें विशेष तेजी आ जावे। इस मासके अन्तके सप्ताहमें ग्रह तेजीकी राशियोंमें प्रवेश कर रहे हैं अतः अन्तिम सप्ताहमें प्रत्येक बाजारमें तेजीका वातावरण बनेगा और अवश्य ही तेजी आवेगी। अंतिम सप्ताहमें तैल और तैल के पदार्थ इनमें भी अवश्य ही तेजी आवेगी किन्तु, यह तेजी धोखेबाज होगी। इस मासकी २७ ता० को गुरु भी मार्गी हो रहा है इसके प्रभावसे ता० २७ के पश्चात् चांदी सोना रुई आदिमें मंदी अवश्य ही आवेगी, यह ग्रहयोग फल है।

नवम्बर मास और ग्रह योग फल

इस मासमें १ ता० को सूर्य बुध युति हो रही है, इसके प्रभावसे रुईमें अवश्य ही तेजी आवेगी। ता० ६ को चंद्र शनि युतिके फलस्वरूप चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। ता० ८ को चंद्र नेपच्यून युति है इसका प्रभाव चांदी सोने में तेजी कारक होगा और अन्य पदार्थोंमें मंदी कारक है।

ता० १० को चंद्र शुक्र युति है वृश्चिक राशिमें, अतः इस दिन चांदीमें तेजी अवश्य ही आवेगी। किंतु इसका प्रभाव भारतमें नहीं होगा कारण कि युतिकाल रात्रिके ३।१२ का है। इस दिन ही चंद्र बुध युति है इस कारण चांदी सोनेमें अवश्य ही तेजी आवेगी १।३८ तक। ता० १३ को मंगल चंद्र युति पर चांदी सोना के खुलते बाजारमें ही तेजी आकर पुनः मंदी अवश्य ही आवेगी। ता० १६ को शनि चंद्र सप्तम है इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें अवश्य ही तेजी आवेगी ५।७ दिनके समय में। ता० २० को चंद्र नेपच्यून आपोजीशन है इसके प्रभावसे क्लोजिंग मार्केट चांदी सोनेका तेजीमें बंद होगा। ता० २४ को सूर्य चंद्र प्रतियोग है धन और मिथुन में इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें मंदी आवेगी। ता० २५ को शुक्र चंद्र प्रतियोग है मिथुन धनमें इसके प्रभावसे भी मंदी आवेगी। ता० २७ को चंद्र हर्शल युति है कर्क राशिमें इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें तेजी आवेगी, घटा बढ़ी भी होगी। ता० २७ को चंद्र मंगल प्रतियोग है इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। ता० २७ को बुधोदय होता है इसके प्रभावसे चांदीमें मंदी आवेगी, कारण कि पश्चिमोदय है। यह ग्रह योग है। इस मासमें ग्रह धनुराशि में विशेष आ जाते हैं, इसके प्रभावसे चांदी सोना तथा अन्य पदार्थोंकी तेजी मंदी की सही धारणा मंदीमें ही रहेगी।

नोट—इस मासमें शनि सायन मानसे तुलामें प्रवेश कर रहा है। तुला राशि मंदी कारक है और इसके प्रभावसे सब चीजोंमें मंदी अवश्य ही आवेगी। कारण कि शनिके राशि प्रवेश कालमें तुला के नवांशमें जाता है और तुला का स्वामी भी मकर राशिमें किंतु तुला शनिका उच्च स्थान है इस कारण मंदीका जोरदार प्रभाव होगा। सब पदार्थोंमें, यहांसे व्यापारी वर्ग इस भयंकर मंदी योगको ध्यानमें रखकर काम करें। इस मंदीका प्रभाव व्यापार क्षेत्रमें अवश्य और विशेष रूपसे होगा।

दिसम्बर मास और ग्रह योग फल

ता० १ दिसम्बर को चांदी सोनेका बाजार मंदा रहेगा और फिर ता० ४ को खुलता बाजार ही तेज होगा। ५ को भी बाजार मंदा रहेगा। किन्तु चांदी सोनेमें अवश्य ही तेजी आवेगी। ता० ६ को बाजारमें मंदी आवेगी, पुनः बाजार पड़ा रहेगा और ता० ११ को फिर तेजी आवेगी किंतु, बाजारका रुख मंदीका ही रहेगा। परन्तु ता० २ को गुरु राशि बदल कर मीनमें प्रवेश कर रहा है उस वक्त गुरु कर्क के नवांशमें रहता है इस कारण चांदी के बाजारमें अवश्य ही तेजी रहेगी। जब तक गुरु कर्क नवांशमें रहेगा तब तक बाजार मजबूत और तेजीकी तरफ झुकता हुआ ही रहेगा। पुनः सिंहके नवांशमें आने पर मंदी करेगा यह योग इस मासमें विशेष उल्लेखनीय है। फिर २१ को हर्शल शुक्र प्रति योग होता है इसका प्रभाव खुलते बाजारमें ही होगा। इसके फलस्वरूप चांदी सोनेमें तेजी कारक अवश्य ही होगा, किंतु यह प्रतियोग हमारी समझसे ठीक नहीं है अतः इसका प्रभाव नहीं होगा। ता० २४।२५ तक तेजीमें रहकर पुनः मंदीमें चलेगा। यह फल चांदी सोनेके बाजारमें इस मासमें होगा।

व्यापार-रुख

थे। यह हम

१०६॥)
ांदीके भाव

दी ७७।≡)
में हो चांदी

-) सुवर्ण
हुआ।
२२।=)
में २०।≡)

र यह योग
ोता है कि
और मंदी
है। यह
हीं चलता
बुलियनकी

ट मंदीके
ो। यहां
खना तथा
रना और
।

...लगते हैं। इस समय ८० वर्षके मध्यमें जब-जब ऐसा ... समय मनुष्यों अधिक तथा राजाका कम दिखाई देता है। यहां ग्रह गणना देखते ता० १६ से २१ तक हर

सू ... है इसके प्रभावसे चांदीमें मंदी आवेगी, कारण कि
में ... ह धनुराशि
हश ... ोमा तथा
वि ... मंदीमें ही
आ
स ... ामें प्रवेश
अ ... प्रभावसे
के ... के शनिके
तं ... ौर तुला
म ... उच्च
स ... ा। सब
... मंदी
... प्रभाव

... मंदा
... गा।
... वश्य
... ेगी,
... तेजी
... परन्तु
... हा है
... चांदी
... कर्क
... जीकी
... आने
... नीय
... इसका
... चांदी
... तियोग
... भाव नहीं
... : मंदीमें
राशिमें इसके प्रभावसे चांदी ... मासमें
बढ़ी भी होगी। ता० २७ को चंद्र मंगल प्रतियोग है इसके ... होगा।
प्रभावसे चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। ता० २७ को बुधोदय

व्यापार-रुखका साप्ताहिक विवरण

कुम्भमें गुरु-राहु-संयोगका प्राचीन रिकार्ड और उसका फल

[लेखकः—ज्योतिषाचार्य श्रीगणेश, विद्यासागर "दैवज्ञ"]

ता० २० से २६ अक्टूबर तक

प्रथम ता० २० को चंद्र-गुरु युतिकी मंदी आये उसमें माल पोते करो, आगे ता० २६ तक बाजार दुतर्फा चलता हुआ तेजीका ही वातावरण अधिक ग्रहण करेगा। यहां चांदी ३) ३॥) सुवर्ण १।) १॥) शेयर १५) २०) रुई ८) १०) कालीमिर्च ५) ६) गुवार ॥) १) सरसों अलसी अरंडा २) २॥) टकोंका उछाला खाता हुआ दिखाई देगा।

ता० २७ अक्टूबर से २ नवम्बर तक

इस समय में ग्रहोंके संयोग चन्द्र-हर्शल युति, गुरुका मार्गी होना, मंगलकी दृष्टि आदि योग तेजीका समर्थन अधिक तथा मंदीका संकेत कम करते हैं। आपको ता० २८, २९ के करीब मंदीका रोला सुनाई देगा, लेकिन यह आप निश्चय समझें कि मंदी ठहरेगी नहीं और ता०३०से २ नवम्बर तक चांदीमें २) २॥) सुवर्णमें ॥) ।॥) शेयरोंमें १०) १२) रुईमें ५) ६) मिर्चमें ३) ४) गुवारमें ।॥) १।) सरसोंमें १) १।) अलसी अरंडामें ।॥) १) की तेजी अवश्य आकर रहेगी।

ता० ३ से ९ नवम्बर तक

गुरुकी दृष्टि चन्द्र पर होना इत्यादि योग ता० ५ तक मंदीके झटके लायेंगे, किंतु ता० ६ से ९ तक योग तेजीके हैं। इस प्रकार मार्केट दोनों तरफ चक्कर खायेगा। दोगली बातका आंकड़ा लिखना हमें तो पसन्द नहीं।

दीपावली रजस्वला हो गई

प्रिय व्यापारी बंधुओं! कार्तिक कृष्ण अमावस्याका क्षय हुआ है। इसीको 'रजस्वला' योग पराशर ऋषिने बतलाया है। जब यह रजस्वला हो जाती है तब प्रजामें द्रव्यसंकट अधिक बढ़ जाता है और अनेक प्रकारके उपद्रव होने लगते हैं। इस समय ८० वर्षके मध्यमें जब-जब ऐसा योग आया तब-तब चांदी सुवर्णके क्या भाव थे। यह हम पुराने रिकार्डके अनुसार पाठकोंको बताते हैं।

(१) ता० २२ नवम्बर सन् १८८९ चांदी १०६।॥) सुवर्ण २३।) के भाव थे, एक मासमें बढ़कर चांदीके भाव १०७।) सुवर्ण २३।-) हो गया।

(२) ता० २७ नवम्बर सन् १९१३ चांदी ७७।≥) सुवर्ण २४=) थे। ता० १ दिसम्बरको ५ दिनमें ही चांदी ७५।॥≡) सुवर्ण २४) हो गया।

(३) ता० ७ दिसम्बर १९२३ चांदी ७९॥-) सुवर्ण २५=) एक मासमें चांदी ८०।=) सुवर्ण २५-) हुआ।

(४) ता० २७ नवम्बर सन् १९३२ चांदी ५५।=) सुवर्ण ३१≡) एक मासमें चांदी ५०॥-) सुवर्ण ३०।≥) के भाव बने।

(५) अब ता० ९ नवम्बर सन् १९५० में फिर यह योग आया है। गत समयका मनन करनेसे ज्ञात होता है कि यदि तेजी चले तो मामूली चढ़ाव होता है और मंदी चलने पर भारी धक्का चांदी सुवर्णमें लगता है। यह भाव उस समयके हैं जबकि आपके यहां सट्टा नहीं चलता था। सन् १९२३ के अक्टूबर मासमें बांबे बुलियनकी स्थापना हुई थी।

ता० १० से १६ नवम्बर तक

ता० १० से १२ तक तीन दिनोंमें मार्केट मंदीके झटके खायेगा, हर वस्तु मात्र मंदी दिखाई देगी। यहां तो आये उछाले बेच, नफा खानेमें होशियारी रखना तथा ता० १३ से १६ तक घटे भावों माल पोते करना और नफा बढ़ाते रहना। जो खाता है वही कमाता है।

ता० १७ से २३ नवम्बर तक

चालू समय मन्दीका अधिक तथा तेजीका कम दिखाई देता है। यहां ग्रह गणना देखते ता० १९ से २१ तक हर

प्रकारका मार्केट मामूली उछाले खायेगा, लेकिन मन्दी वाली पार्टीका पलड़ा भारी रहेगा। आये उछाले बेचाण कर नफा खाते रहें। यहां इस प्रकारका योग आया है कि चांदीमें अच्छा चांस मिले। यदि आपने 'श्रीस्वाध्याय' से २५) रु० वार्षिक चन्दा जमा कराकर रसीद नहीं ली है तो लोभ त्याग करके आज ही मनिआर्डर भेजकर अपने भाग्यको उज्ज्वल बनाइये।

ता० २४ से ३० नवम्बर तक

यह समय आपको तेजी खेलनेकी नेक सलाहका है। ता० २४ से २८ के १२ बजे तक आप निःसंकोच तेजी खेलें, आपको अवश्य लाभ होगा। लेकिन ता० २८ को हर मालका बेचाण बोल दें, यहां अच्छी मंदी आयेगी।

३० नवम्बरसे ६ दिसंबर तक

सूर्यका नक्षत्र परिवर्तन, सूर्य-शुक्रकी राशि युति होना इत्यादि योग संयोग सूचित करते हैं कि आप घटे भावोंमें माल खरीदें। ता० ३१ नवम्बरसे ३ दिसम्बर तक तो मार्केट दोनों तरफ चक्कर लगायेगा। लेकिन ता० ४ से ६ तक अच्छा उछाला तेजीका आना पाया जाता है। आप इसी अंदाजेसे खेलें, यहां भी चांस है जो 'श्रीस्वाध्याय' के वार्षिक मेंबर २५) रु० तथा अपनी जन्म कुण्डली भेज चुके हैं उनको ही प्राप्त होगा। देखिये अथवा पूछ लीजिये मेंबरोंसे, ता० २६ अगस्तका तेजी वाला चांस कितना स्पष्ट मिला है। आप भी अपनी जन्मकुंडली के साथ २५) रु० आज ही 'श्रीस्वाध्याय' में भेज दें।

ता० ७ से १३ दिसंबर तक

ता० ६ को कुछ मंदीका झटका १ बजे पीछे आयेगा इस समय चांदी अच्छी टूट जायेगी, लेकिन मंदा ठहरेगी नहीं और भावोंमें अच्छे उछाले हर वस्तुमात्रमें आयेंगे। मेरे ख्यालसे आप बार-बार तेजी लिखनेसे घबराते होंगे, लेकिन ऐसा नहीं है, जब तक बंबई बुलियनमें चांदी २०६॥) नहीं हो जायेगी तब तक आई हुई मंदी नहीं ठहरेगी, यह निश्चय समझना। एक बार इसी अंक में यह भाव बनना चाहिये, ऐसी ग्रह गणना है। ता० ६-१० को मंदीका झटका आयेगा सचेत रहना।

ता० १४ से २० दिसंबर तक

यहां ता० १४-१५ इन दिनोंमें चांदीमें अच्छी मंदी आये, इसी प्रकार हर वस्तुमें मंदीका झटका लगेगा और ता० १६ से १८ तक अच्छी तेजी। ता० १९-२० को बाजार दोनों तरफ चक्कर खाता रहेगा।

ता० २१ से २७ दिसंबर तक

चालू समयमें ता० २१ से २३ तक हर आये उछाले मालका बेचाण चालू रखना। यहां तेजीके उछाले कम तथा मंदीके झटके अधिक आना पाया जाता है। ता० २४ को रात्रिके समय कुम्भराशि पर राहु तथा सिंहराशिमें केतु १८ वर्षके पीछे मित्रके घर पर आये हैं। पहिले जब जब कुम्भ राशि पर पधारे तब तब मार्केटकी क्या परिस्थिति रही उसका उल्लेख यहां पर किए देते हैं, देखिये—

कुम्भके राहुका पुराना रिकार्ड

यहां कुम्भ राशि पर गुरुदेव पहिलेसे बैठे हुए हैं उन के समीप ही राहु जैसा बड़ा घड़वाला ग्रह आया है, अब हम आपके पास दोनों प्रकारका रिकार्ड पेश करते हैं, कि कुम्भ पर आनेसे राहूने क्या किया तथा राहुकी युतिका क्या असर हुआ।

ता० १७ फरवरी सन् १८९५ में राहु कुम्भ पर और केतु सिंह पर आये तब चांदी ९२॥=) सुवर्ण ३०-) का भाव था वह बढ़कर चांदी ९८॥=) सुवर्ण ३१॥) तक हुआ। दो मासमें जब तक पूर्वाभाद्रपद पर राहु रहा तेजीसे गुजरा है। ता० ३० सितम्बर १९१३ को फिर राहु कुम्भ पर तथा केतु सिंह पर आया तब चांदी ८०॥=) सुवर्ण २४-) अलसी ८।≡) के भाव थे और उसी दिनसे ५ दिन तक तो तेजी चली जिसमें चांदी ८१॥) तक होकर बाजार १ मासमें चांदी ७६) सुवर्ण २३॥=) हो गया। फिर ता० १० मई १९३२ में कुम्भ पर राहु तथा सिंह पर केतु आया तब चांदी ५५।=) सुवर्ण २७) के भाव थे। प्रथम ५ दिन तक तेजी चली चांदी ५७) सुवर्ण २८) बने फिर मंदी तब चांदी ५४) से नीचे नहीं गई और बाजार टिके रहे। उस समय खास कारण भारतमें सत्याग्रह

आंदोलन चल रहे थे विशेषतया स्थानीय बाजार बंबई बंद रहता था ।

अब ता० २४ दिसम्बर सन् १९५० को आ रहे हैं। जिन व्यापारियोंने 'श्रीस्वाध्याय' में २५) जमा कर दिया है। वह पत्र द्वारा मुझसे दरियाफ्त करें कि इस समय क्या होगा ?अब गुरु राहु युतिका रिकार्ड पेश करता हूं।

गुरु राहु युतिका पुराना रिकार्ड

ता० ११ अक्टूबर सन् १८८५ में गुरु कन्या राशि पर राहुसे युतिकी थी। उस समय रुई भरोंचके भाव २१४॥) अलसी तैयार ६॥।=) के थे, प्रथम दो दिनमें तेजी आई और भाव २१९) बन गये। फिर अच्छी मंदी चली रुई १९९) अलसी ६) एक मासमें हो गई। ता० २२ फरवरी १८९३ में मेष राशि पर गुरु राहुकी युति हुई तब चांदी १०६॥=) सुवर्ण २५॥।=) अलसी ८॥≡) रुई २६६) प्रथम ४ दिन तेजी चली और भावोंमें रुई २७२) सुवर्ण २६।) अलसी ९।) चांदी १०७) के भाव बने फिर घटकर रुई २१३) चांदी ९९) सुवर्ण २४) अलसी ७॥) के भाव बन गये। ता० २५ नवम्बर १८९९ में वृश्चिक राशि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय रुई २१४) सुवर्ण २४) चांदी ७५॥।)अलसी ८।-)के भाव थे। रुईमें तेजी आई भाव २८७) चांदीमें मंदी ७१) सुवर्णमें २३॥।) अलसी ८॥।) के भाव एक मासमें बन गये। आगे जिनमें मंदी आई उनमें तेजी तथा जिनमें तेजी आई उन वस्तुओंमें मंदी दूसरे ही महिनेमें आ गई।

ता० १७ जुलाई १९०७ में कर्क राशि पर गुरु राहु की युति सिर्फ २ दिन रही उसमें हर वस्तु मात्र तेज रही। फिर ता० ६ जनवरी १९१५ में कुंभ राशि पर गुरु राहु युति हुई थी उस समय रुई १८८॥।) चांदी ५९≡) सुवर्ण २४॥=) अलसी ७=) के भाव थे जब तक दोनों महारथी कुम्भमें रहे एक ही मासमें चांदी ७२) रुई २६९) सुवर्ण २५) अलसी ८=) के भाव बन गये थे। ता० २५ अगस्त सन् १९२१ में कन्या राशि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय रुई ३८०) सुवर्ण २९=) चांदी ९२॥।) अलसी १६=) भाव थे। सुवर्ण और अलसीमें ५ दिन तेजी चली फिर मंदी आई। चांदी रुईमें एक लाईन तेजीकी १ मास तक चली, रुई ५८७) चांदी ९८।) हो गई, फिर इनके अलग होते ही हर एक वस्तुमें मंदी आई थी। ता० ५ अप्रेल १९२९ में मेष राषि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय भाव निम्न प्रकार थे—रुई ३५१॥) सुवर्ण २१॥) चांदी ५८॥=) अलसी ११) के भाव थे। केवल ५ दिन सर्वं वस्तु तेज रही। पीछे मन्दी आना शुरू हो गई। ता० ३० अक्टूबर १९३६ में धनुः राशि पर इन दोनोंकी युति हुई तब रुई २१८॥।) सोना ३५।) चांदी ४९॥।) अलसी ७≡) के भाव थे, फिर रुई २३०) चांदी ५४) सोना ३५॥।) अलसी ७॥।=) के भाव १० दिन में बन गये, आगे फिर मंदी चली। इस प्रकारके भावोंका गत वर्षोंका रिकार्ड देखनेसे स्पष्ट भान होता है कि अब जब ता० २४ दिसम्बर १९५० को कुम्भ राशि पर युति होगी उस समय चांदी, सुवर्ण, रुई, अलसी में निश्चय तेजी ही आयेगी। कितनी तेजीका अनुमान है यह हमारी मासिक रिपोर्ट (व्यापार-रुख) में देखना, बृहद् विवरणसे विचार करके लिखा है।

ता० २८ दिसम्बर से ३ जनवरी १९५१ तक

खरीदो हर एक वस्तुमें अच्छी तेजी ता० १ जनवरी की सायंकाल तक रहेगी। ता० २-३ को मामूली मंदीके झटके आयेंगे, उस आई हुई मंदीमें फिर माल पौते कर लीजिये और व्यापार तेजीके तरारेसे करते अपना नफा बढ़ाते रहें।

ता० ४ से १० जनवरी तक

ता० ४ को जो माल खरीद करो उसका नफा ता० ८ को दिनके १२ बजे लेलो। फिर मार्केट दोनों तरफ चलता रहेगा, खरीद करो या बेचान करो भाव दोनों पार्टियोंको मिलेगा।

ता० ११ से १७ जनवरी तक

यहां कुम्भ राशि पर मंगल गुरु राहुकी युति हैं। दो ग्रह तेजी कारक तथा एक ग्रह मंदी करने वाला है, इसी प्रकारसे आप भी अपने व्यापारकी व्यवस्था बिठला लें।

प्रकारका मार्केट मामूली उछाले खायेगा, लेकिन मन्दी वाली पार्टीका पलड़ा भारी रहेगा। आये उछाले बेचाण कर नफा खाते रहें। यहां इस प्रकारका योग आया है कि चांदीमें अच्छा चांस मिले। यदि आपने 'श्रीस्वाध्याय' से २५) रु० वार्षिक चन्दा जमा कराकर रसीद नहीं ली है तो लोभ त्याग करके आज ही मनिआर्डर भेजकर अपने भाग्यको उज्ज्वल बनाइये।

ता० २४ से ३० नवम्बर तक

यह समय आपको तेजी खेलनेकी नेक सलाहका है। ता० २४ से २८ के १२ बजे तक आप निःसंकोच तेजी खेलें, आपको अवश्य लाभ होगा। लेकिन ता० २८ को हर मालका बेचाण बोल दें, यहां अच्छी मंदी आयेगी।

३० नवम्बरसे ६ दिसंबर तक

सूर्यका नक्षत्र परिवर्तन, सूर्य-शुक्रकी राशि युति होना इत्यादि योग संयोग सूचित करते हैं कि आप घटे भावोंमें माल खरीदें। ता० ३१ नवम्बरसे ३ दिसम्बर तक तो मार्केट दोनों तरफ चक्कर लगायेगा। लेकिन ता० ४ से ६ तक अच्छा उछाला तेजीका आना पाया जाता है। आर इसी अंदाजेसे खेलें, यहां भी चांस है जो 'श्रीस्वाध्याय' के वार्षिक मेंबर २५) रु० तथा अपनी जन्म कुण्डली भेज चुके हैं उनको ही प्राप्त होगा। देखिये अथवा पूछ लीजिये मेंबरोंसे, ता० २६ अगस्तका तेजी वाला चांस कितना स्पष्ट मिला है। आप भी अपनी जन्मकुंडली के साथ २५) रु० आज ही 'श्रीस्वाध्याय' में भेज दें।

ता० ७ से १३ दिसंबर तक

ता० ६ को कुछ मंदीका झटका १ बजे पीछे आयेगा इस समय चांदी अच्छी टूट जायेगी, लेकिन मंदा ठहरेंगी नहीं और भावोंमें अच्छे उछाले हर वस्तुमात्रमें आयेंगे। मेरे ख्यालसे आप बार-बार तेजी लिखनेसे घबराते होंगे, लेकिन ऐसा नहीं है, जब तक बंबई बुलियनमें चांदी २०६॥) नहीं हो जायेगी तब तक आई हुई मंदी नहीं ठहरेगी, यह निश्चय समझना। एक बार इसी अंक में यह भाव बनना चाहिये, ऐसी ग्रह गणना है। ता० ६-१० को मंदीका झटका आयेगा सचेत रहना।

ता० १४ से २० दिसंबर तक

यहां ता० १४-१५ इन दिनोंमें चांदीमें अच्छी मंदी आये, इसी प्रकार हर वस्तुमें मंदीका झटका लगेगा और ता० १६ से १८ तक अच्छी तेजी। ता० १९-२० को बाजार दोनों तरफ चक्कर खाता रहेगा।

ता० २१ से २७ दिसंबर तक

चालू समयमें ता० २१ से २३ तक हर आये उछाले मालका बेचाण चालू रखना। यहां तेजीके उछाले कम तथा मंदीके झटके अधिक आना पाया जाता है। ता० २४ को रात्रिके समय कुम्भराशि पर राहु तथा सिंहराशिमें केतु १८ वर्षके पीछे मित्रके घर पर आये हैं। पहिले जब जब कुम्भ राशि पर पधारे तब तब मार्केटकी क्या परिस्थिति रही उसका उल्लेख यहां पर किए देते हैं, देखिये—

कुम्भके राहुका पुराना रिकार्ड

यहां कुम्भ राशि पर गुरुदेव पहिलेसे बैठे हुए हैं उनके समीप ही राहु जैसा बदौर घड़वाला ग्रह आया है, अब हम आपके पास दोनों प्रकारका रिकार्ड पेश करते हैं, कि कुम्भ पर आनेसे राहूने क्या किया तथा राहुकी युतिका क्या असर हुआ।

ता० १७ फरवरी सन् १८९५ में राहु कुम्भ पर और केतु सिंह पर आये तब चांदी ९२॥|=) सुवर्ण ३०-) का भाव था वह बढ़कर चांदी ९८॥=) सुवर्ण ३१॥) तक हुआ। दो मासमें जब तक पूर्वाभाद्रपद पर राहु रहा तेजीसे गुजरा है। ता० ३० सितम्बर १९१३ को फिर राहु कुम्भ पर तथा केतु सिंह पर आया तब चांदी ८०॥|=) सुवर्ण २४-) अलसी ८|≡) के भाव थे और उसी दिनसे ५ दिन तक तो तेजी चली जिसमें चांदी ८१॥) तक होकर बाजार १ मासमें चांदी ७६) सुवर्ण २३॥|=) हो गया। फिर ता० १० मई १९३२ में कुम्भ पर राहु तथा सिंह पर केतु आया तब चांदी ५५|=) सुवर्ण २७) के भाव थे। प्रथम ५ दिन तक तेजी चली चांदी ५७) सुवर्ण २८) बने फिर मंदी तब चांदी ५४) से नीचे नहीं गई और बाजार टिके रहे। उस समय खास कारण भारतमें सत्याग्रह

आंदोलन चल रहे थे विशेषतया स्थानीय बाजार बंबई बंद रहता था ।

अब ता० २४ दिसम्बर सन् १९५० को आ रहे हैं। जिन व्यापारियोंने 'श्रीस्वाध्याय' में २५) जमा कर दिया है। वह पत्र द्वारा मुझसे दरियाफ्त करें कि इस समय क्या होगा ?अब गुरु राहु युतिका रिकार्ड पेश करता हूं।

गुरु राहु युतिका पुराना रिकार्ड

ता० ११ अक्टूबर सन् १८८५ में गुरु कन्या राशि पर राहुसे युतिकी थी। उस समय रुई भरोंचके भाव २१४॥) अलसी तैयार ६॥।=) के थे, प्रथम दो दिनमें तेजी आई और भाव २१९) बन गये। फिर अच्छी मंदी चली रुई १९६) अलसी ६) एक मासमें हो गई। ता० २२ फरवरी १८९३ में मेष राशि पर गुरु राहुकी युति हुई तब चांदी १०६॥=) सुवर्ण २५॥।=) अलसी ८॥≈) रुई २६६) प्रथम ४ दिन तेजी चली और भावोंमें रुई २७२) सुवर्ण २६।) अलसी ९।) चांदी १०७) के भाव बने फिर घटकर रुई २१३) चांदी ९९) सुवर्ण २४) अलसी ७॥) के भाव बन गये। ता० २५ नवम्बर १८९९ में वृश्चिक राशि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय रुई२१४) सुवर्ण २४) चांदी ७५॥।)अलसी ८।-)के भाव थे। रुईमें तेजी आई भाव २८७) चांदीमें मंदी ७१) सुवर्णमें २३॥।) अलसी ८॥।) के भाव एक मासमें बन गये। आगे जिनमें मंदी आई उनमें तेजी तथा जिनमें तेजी आई उन वस्तुओंमें मंदी दूसरे ही महिनेमें आ गई।

ता० १७ जुलाई १९०७ में कर्क राशि पर गुरु राहु की युति सिर्फ २ दिन रही उसमें हर वस्तु मात्र तेज रही। फिर ता० ६ जनवरी १९१५ में कुंभ राशि पर गुरु राहु युति हुई थी उस समय रुई १५८॥।) चांदी ५९≈) सुवर्ण २४॥=) अलसी ७=) के भाव थे जब तक दोनों महारथी कुम्भमें रहे एक ही मासमें चांदी ७२) रुई २९९) सुवर्ण २५) अलसी ८=) के भाव बन गये थे। ता० २५ अगस्त सन् १९२१ में कन्या राशि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय रुई ३८०) सुवर्ण २१=) चांदी ९२॥।) अलसी १६≈) भाव थे। सुवर्ण और अलसीमें ५ दिन तेजी चली फिर मंदी आई। चांदी रुईमें एक लाईन तेजीकी १ मास तक चली, रुई ४८७) चांदी ९८।) हो गई, फिर इनके अलग होते ही हर एक वस्तुमें मंदी आई थी। ता० ५ अप्रेल १९२९ में मेष राशि पर गुरु राहुकी युति हुई उस समय भाव निम्न प्रकार थे—रुई ३५१॥) सुवर्ण २१॥) चांदी ५८॥=) अलसी ११) के भाव थे। केवल ८ दिन सर्व वस्तु तेज रही। पीछे मन्दी आना शुरू हो गई। ता० ३० अक्टूबर १९३६ में धनुः राशि पर इन दोनोंकी युति हुई तब रुई २१८॥।) सोना ३५।) चांदी ४६॥।) अलसी ७≈) के भाव थे, फिर रुई २३०) चांदी ५४) सोना ३५॥।) अलसी ७॥।=) के भाव १० दिन में बन गये, आगे फिर मंदी चली। इस प्रकारके भावोंका गत वर्षोंका रिकार्ड देखनेसे स्पष्ट भान होता है कि अब जब ता० २४ दिसम्बर १९५० को कुम्भ राशि पर युति होगी उस समय चांदी, सुवर्ण, रुई, अलसी में निश्चय तेजी ही आयेगी। कितनी तेजीका अनुमान है यह हमारी मासिक रिपोर्ट (व्यापार-रुख) में देखना, बृहद् विवरणसे विचार करके लिखा है।

ता० २८ दिसम्बर से ३ जनवरी १९५१ तक

खरीदो हर एक वस्तुमें अच्छी तेजी ता० १ जनवरी की सायंकाल तक रहेगी। ता० २-३ को मामूली मंदीके झटके आयेंगे, उस आई हुई मंदीमें फिर माल पौते कर लीजिये और व्यापार तेजीके तरारेसे करते अपना नफा बढ़ाते रहें।

ता० ४ से १० जनवरी तक

ता० ४ को जो माल खरीद करो उसका नफा ता० ८ को दिनके १२ बजे लेलो। फिर मार्केट दोनों तरफ चलता रहेगा, खरीद करो या बेचान करो भाव दोनों पार्टियोंको मिलेगा।

ता० ११ से १७ जनवरी तक

यहां कुम्भ राशि पर मंगल गुरु राहुकी युति है। दो ग्रह तेजी कारक तथा एक ग्रह मंदी करने वाला है, इसी प्रकारसे आप भी अपने व्यापारकी व्यवस्था बिठला लें।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

चांदी सोना रुई गुड़ आदिकी तेजी मन्दी

[लेखकः—श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा ज्योतिषभूषण दैवज्ञरत्न]

(१) प्रथम सप्ताह—

ता० २० से २५ अक्टूबर तक—रुई, सोना और प्रत्येक वस्तुमें अच्छी घटबढ़ होगी। सोना ११।) २) अवश्य तेज होगा। रुईमें ५०) खण्डीमें घटबढ़ होगा, पहले तेजी होके मंदी होगी। गुड, खांड भी तेज रहेगा। ता० २१ को ३ बजेसे अच्छी घटबढ़ होगी। ता० २३-२४ को दोतरफा लगावें या तेजीमें रहो। ता० २५ को १२ बजेसे तेजी। यहां रुई, सोना, गुड़ अवश्य तेज होगा।

(२) द्वितीय सप्ताह—

ता० २६ से ३१ तक--सोनेमें तेजी सामान्य सी, चांदीमें घटबढ़ या मंदी। ता० २६ को चांदी सायंकाल अवश्य मन्दी होगी। यह मंदी ता० २८ तक रहेगी।

(३) तृतीय सप्ताह—

ता० १ से ६ नवम्बर तक—रुईके सिवाय कोई वस्तु मंदी नहीं रहेगी। ता० १ को १२ बजेके बाद तेजी। ता० २ को चांदी अवश्य तेज और वस्तु मंदी। ता० ३ को बढ़े वहां ही बेचो, कोई भय नहीं है! ता० ४ को रुई बड़ी भारी तेज खुलेगी। वोही भाव बन्द हो जायेंगे। घटके ता० ५-६ मंदी, ता० ७-८-६ घटबढ़से तेज और यहां उत्पात भी होते रहेंगे, ता० ८ या ६ को दोतरफा लगावें अच्छा लाभ होगा।

(४) चतुर्थ सप्ताह—

ता० १० से १७ नवम्बर तक-हरेक वस्तु तेजीमें रहेगी घटे भाव या बढ़े भाव हरेक वस्तु खरीदो। रुई कुछ घटके तेज होगी। ता० १० को घटबढ़ होगी। ता० १४ को ४ बजेसे सोना-चांदी बढ़ेगा और कई एक वस्तु घटेंगी। ता० १५-१६ को अच्छी घटबढ़ दोतरफा लगावें। ता० १७ को भी घटबढ़ रहेगी। १ धंदासे व्यापार बदलो।

(५) पंचम सप्ताह—

ता० १८ से २४ नवम्बर तक—रुई साधारण रहेगी। गुड़ खण्ड तेज। चांदी-सोना निश्चय मंदा होगा। गुड़ खांड तेज। ता० २१ को २ बजे या ४ बजे अच्छी तेजी और वस्तुओंमें नहीं तो भी चांदी अचूक तेज। ता० २२ को १२ बजेसे उलटा बाजार चलेगा। ता० २३ को मंदी या दोतरफा लगावें। ता० २४ को घटबढ़ अच्छी रहेगी। रुई मंदी, और वस्तु घटे तो लेवें, बढ़े तो बेचें।

(६) छठा सप्ताह—

ता० २५ से ३० नवम्बर तक—रुई-सोना-चांदी मंदे। रुईमें घटबढ़ रहेगी ता० ३० तक। ता० २५ को तेजी या साधारण। ता० २७-२८ को अच्छी घटबढ़ दोतरफा लगावें। ता० २७ को मंदी। ता० २८ को रुई चांदी तेज। चांदी अचूक तेज। रुईके फीचर अवश्य तेज, और बहुत ज्यादा अङ्कोंमें ४ का या पूर्ण ० का आवेगा। वर्षा भी होगी।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० १ से ६ दिसम्बर तक—हरेक वस्तु तेज रहेगी। ता० १ को घटबढ़ घबराहटकी रहेगी। हरेक वस्तु मन्दी होगी। खरीदनका मौका है। चांदी अचूक तेज होगी। ता० २-३-४ अवश्य तेज। ता० ५ को रुई जरूर तेज, चांदी मंदी। ता० ६-७ घटबढ़से मंदी या दोतरफा लगावें। ता० ८को घटे तो लेवें बढ़े तो बेचो। ता० ६ को तेज होगा, यहां पर कुछ तेज।

(८) अष्टम सप्ताह—

ता० १० से १७ दिसम्बर तक--गुड़, खांड मंदे। सोना चांदी, रुई तेज, ता० ११ को तेजी १२ को घटबढ़ रहेगी। ता० १३-१४ को अच्छी तेजी। ता० १५ को तेजी होवे

तो भविष्यमें ता० २४ तक अचूक तेजी। सोना, चांदी यदि तेज नहीं होगा तो तेज नहीं समझना, मंदा हो तो मंदा समझना। ता० १६-२०-२१-२२ को व्यापारमें अच्छी घटबढ़ चलेगी। दोतरफा लगावें, ता० १६ को रुई चांदी में एक अच्छी तेजी, एक अच्छी मंदी होगी। ता० २३ को अच्छी तेजो। यहां वर्षा भी होगी।

(६) नवम सप्ताह—

ता० २५ से ३१ दिसम्बर तक--प्रायः सब वस्तु मंदीमें रहेंगी, या एक दिन मंदी एक दिन तेजी, ऐसे होती रहेगी। २५ मंदी, २६ तेजो। ता० २७ को तेजी होगी चांदीमें, रुईमें मंदी होगी, परन्तु कौन सी ही होवे ज्यादा घटबढ़ होगी। ता० २६-३० घटबढ़ होगी। साधारण सी तेजी होगी।

(१०) दशवां सप्ताह—

ता० १ जनवरी सन् ५१ से ७ जनवरी तक--घटबढ़से मंदी होगी। ता० १ को या २ को रुई-चांदी जरूर खरीदो। गुड़में नवीन वातावरण होगा। ता० ४-५ को अच्छी घटबढ़ दोतरफा लगावें। कोई भय नहीं है। ता० ६ को अच्छी तेजीकी संभावना रहेगी।

(११) ग्यारहवांसप्ताह—

ता० ८ से १६ जनवरी तक—अच्छी घटबढ़ होगी। रुई चांदीमें मोटी घटबढ़ होगी। १०) १५) रुईमें ५) ७) चांदीमें या इससे भी ज्यादा घटबढ़ होगी। ता० ६-१०-११-१२ यह प्रायः मंदी रहेगी। ता० १२ के २ बजेसे १६ तक व्यापारमें बड़ी उथल-पुथल होगी और चांदी, रुईके बाजारमें विशेष वार्ता होगी। नवीन घटना संसारमें होगी। ता० ११ को रुई चांदीमें मंदीका धड़ाका होगा।

व्यापारका अनुभूत भविष्य

जूट बारदाना पाट हैशियन शेयर्स ग्वार अरहर मटरकी तेजी मन्दी

[लेखकः—श्री राजाराम जैन ज्योतिर्विद्]

प्रायः देखनेमें आता है कि ग्वार अरहर मटरकी तेजी मन्दी पर ज्योतिषी महानुभावोंने अभी तक कोई खास अनुभव नहीं कर पाया है, ऐसा मुझे प्रतीत होता है। लोंद (अधिकमास) वाले वर्षमें गुड़ अरहर मटर सोंफ पर भारी तेजी आती है। फिर शरद् ऋतुसे मंदी भी भयंकर आती है। पाठकोंके लाभार्थ आज मैं भी बहुत दिनोंके बाद पुनः अपना लेख "श्रीस्वाध्याय" में प्रस्तुत कर रहा हूं। यह लिखे अनुसार नितान्त सत्य सिद्ध होगा। अरहर मटर ग्वार पर ६ अक्टूबर सन् ५० से प्रारम्भ हुई मंदी ७ नवम्बर तक रहकर फिर तेजीका उछाला मात्र आकर १६ नवम्बरसे पुनः भारी मंदा आयेगा। फिर यह मंदी २४ नवम्बर तक रहकर बाजार बढ़ने लगेगा। ८ दिसम्बरसे १५ दिसम्बर तक भारी तेजी भी आवेगी, जो बादको घटा बढ़ी और मन्दी तेजी चलकर १६-२-५१ तक रहेगी। १८ सितम्बर सन ५० से २४दिसम्बर सन्५० तक रुई कालीमिर्च बारदाना कुष्ठा जूट पाट हैशियन शेयर्स स्टील लोहाके भाव निरन्तर बढ़ते रहेंगे।

१६ सितम्बर सन् ५० से या २४ जनवरी सन् ५१ से कई महीनों तक चलने वाली भारी मंदी चांदी सोना में भी होनेकी पूर्ण सम्भावना है। कार्तिकी पूर्णिमाको अलसी सरसों तेलके बीज तथा प्रत्येक खाद्यान्न बेचने वालोंको महान् लाभ होगा। ८ दिसम्बरसे १५ दिसम्बर तक सुन्दर वर्षा प्राणियोंको महान् सुखकर सिद्ध होगी। उपर्युक्त लिखी गई तेजी मन्दीका लाभ हानिका उत्तर दायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा। अतः बाजारकी पोजीशन देखते हुए व्यापार करें।

षड्ग्रही योगका संसार पर प्रभाव

[लेखकः—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र कमशियल एस्ट्रॉलॉजर]

———

ज्योतिष शास्त्रका अध्ययन करना एक साधारण और सामान्य मस्तिष्कको शक्तिसे परे है। इस शास्त्रमें सूत्रात्मक विवेचन होनेके कारण साधारण बुद्धि वाले प्राणि को गति मिलना अत्यन्त कठिन है। ता० ११ अक्टूबरको भारत की कन्या राशि पर ६ ग्रह एकत्रित हुए हैं। इनका जो प्रभाव भारतके राजनीतिक क्षेत्र और व्यापार-क्षेत्रपर होगा उसका संक्षिप्त विवेचन सार्वजनिक हितके लिये 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लाभार्थ प्रकाशित किया जाता है—

लग्नम् प्रातः ६।२२ स्टे टा०



भारतकी लग्न राशि पर शनि २० सितम्बरको आ गया। अतः २० सितम्बरसे ही भारतके राजनैतिक क्षेत्र में हलचलें होनेकी सूचना मिल रही है। कारण कि सूर्य भी इसके आगमन कालमें कन्या राशिमें ही है। राजनैतिक क्षेत्रका अधिपति सूर्य है, यह व्ययेश है, राज्य भवनका स्वामी बुध उच्चका होकर लग्नमें बैठा है। अर्थात् भारतका लग्नेश बुध उच्चका है अतः भारतका भाग्य उन्नत ही रहेगा। शनि लग्नेशका नैसर्गिक मित्र है इस कारण शनिको कन्यामें बैठनेका शुभ फल ही भारतके लिये करना होगा।

शनिको पूर्ण दृष्टि तीसरे भवन वृश्चिक राशि पर है इसमें मंगल बैठा है, अतः भारतमें ता० ११ अक्टूबरसे लेकर ३ मासके भीतर पारस्परिक मतभेद भद्दे रूपमें बढ़े, किन्तु उसका परिणाम भारतके लिये किसी भी रूप में हानिकर नहीं होगा। क्योंकि मंगल स्वगृही होकर अपने स्थानमें बैठा है—किन्तु शनि यावनीय जातिका अधिपति है और तीसरे स्थान पर दृष्टि डालता है इसका अर्थ यह होगा कि तीसरा स्थान पड़ोसी राज्योंका मुख्येन ज्योतिषमें माना है इस कारण ३ मास की अवधिमें भारत पाकिस्तान संबंधोंमें भयंकर विकृति आ जावेगी, युद्ध स्थिति उत्पन्न हो जावे तो भी आश्चर्य नहीं। कारण कि युद्धका स्वामी मंगल है और पड़ोसी राज्योंका भी स्वामी मंगल है और पाकिस्तानका स्वामी शनि उस पर पूर्ण दृष्टि डालता है, इसके फलस्वरूपमें लड़ाईका होना निश्चत प्रतीत होता है--किन्तु इस योगसे यह भी प्रतीत होता है कि तार, टेलीफोन, रेलवे, समाचार-पत्र इनके क्षेत्रमें भी पर्याप्त हानिप्रद हलचलें होंगी। लग्नमें ऊच्चका लग्नेश शुक्र, शनि मित्र ग्रहोंके साथ और सूर्य भी बुधका मित्र है, केवल चन्द्रमा ही शत्रु है, अतः भारतबासियोंका मन अवश्य ही विकृत और संतुलन रहित हो जावेगा। इस योगके प्रभावसे मंत्रिमंडलमें परिवर्तन होंगे और जनताके स्वास्थ्यमें भी परिवर्तन होगा।

लग्नसे दूसरा स्थान तुला है, इसका स्वामी लग्नमें है अतः इस अवधिमें भारतको आर्थिक स्थितिमें सुधार होगा, व्यापारमें परिवर्तन होंगे और भारतीय जनता भावुक और बाह्याडम्बरोंमें विशेष धन खर्च करेगी। चतुर्थ भवनका स्वामी गुरु षष्ठ स्थानमें कुम्भका है, गुरु छठे भवन में चला गया यह एक उत्तम योग है, भारत सदा शत्रुओं पर विजयी होगा। संभव है कि इस योग वेलामें शत्रु रहित हो जावें। चतुर्थ भावस्थ फल विद्याकी उन्नति और कृषि विकाश आदिके कार्योंमें भारत अवश्य ही प्रगति करेगा। पंचम भाव बुद्धिका कारक है और पंचम भावको सौम्य दृष्टिसे सबग्रह देख रहे हैं, इस कारण भारतीय जनताकी मनोवृत्ति सुन्दर संगठित भावना के साथ होगी, एवं राज्यकी मनोवृत्ति भी देशके विकाशके दृष्टिकोणके साथमें होगी। भारतमें व्याधियोंका प्रभाव अवश्य ही होगा। आमोद-प्रमोदमें प्रगति होगी। बच्चोंकी उत्पत्ति विशेष होगी। सीमांत आघातोंसे सुरक्षित रहेंगे। छठे स्थानका स्वामी शनि लग्नमें सिंहके घरमें बैठा है

अतः यह शत्रु पक्षको समर्थन देने वाला हो जाता है यतः भारतीय कुछ शक्ति परराष्ट्रने मिलकर भारतका अहित करनेके षड्यंत्रोंको कार्यान्वित करनेके सतत् प्रयत्न चालू कर रहे हैं और वे देशद्रोहीके रूपमें सामने भी आवेंगे, किंतु भारत इस प्रकारके षड्यंत्रोंसे भी सुरक्षित रहेगा। व्याधियोंका प्रभाव भारतीय जनता पर अवश्य ही होगा। गठिया क्षय कास निमोनिया स्वास मूत्र सम्बन्धी व्याधियां आदिका प्रभाव विशेष होगा। सप्तम भावमें राहु विद्यमान है, सप्तम भावसे भारतीय स्त्रियोंका स्वास्थ्य और चरित्र, बच्चोंकी बाल्यकालमें मृत्यु लड़ाई और परराष्ट्रोंसे संबंध—इत्यादि का विचार किया जाता है। अष्टम भावसे मृत्यु औरराज्यकी अर्थिक दशा-इसका स्वामी मंगल स्वगृही होकर तीसरेस्थानमें बैठा, उसपर शनीकी दृष्टि है अतः मृत्यु संख्या अधिक होगी, राज्यकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ नहीं रहेगी। नवमस्थान धर्म न्यायालय और न्याय इनका स्वामी शुक्र लग्नमें मित्रग्रहोंके साथ बैठा है अतः नवम भावस्थ विषयोंमें विकृति अवश्य ही आवेगी। कारण कि शुक्र नीचका है केवल लग्नमें बैठना उसका शुभ है, किन्तु मंगलकी सप्तम दृष्टि है इस कारण इनमें भी सामयिक रूपसे परिवर्तन होंगे। दशमस्थान राज्य पार्लियामेंट विदेशी व्यवसाय क्रांति अराजकता इनका अधिकारी बुध उच्चका होकर लग्नमें स्वगृहमें (न्यायहीनता) बैठा है—इस कारण राज्य पार्लियामेंटका निर्माण उचित रूपसे फिर होगा, और यह राज्यकी पार्लियामेंटका कार्य देशके लिए विशेष हितकर होगा। किंतु यावनीय देशोंसे संघर्ष पूर्णतया नहीं मिटेगा—राज्यसत्ता सुदृढ़ होगी। एकादशस्थान—दूसरे देशोंसे लाभ, व्यापारिक लाभ, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धोंमें विशेष विकृति होगी। दूसरे देशोंसे लाभ होनेकी कम संभावना है। व्यापारिक क्षेत्र द्वारा लाभ अवश्य ही होगा। द्वादशस्थानका स्वामी सूर्य लग्नमें है। गुप्तदोष, अपराध, योजनायें, चिकित्सालयों लड़ाई हानि इत्यादि पर प्रभुत्व सूर्यका है। उच्चके लग्नेशके और शु० श० शत्रुग्रहोंके साथ हैं अतः भावस्थ फलोंकी वृद्धि ही होगी, इनमें विशेष सुधार नहीं होंगे।

इस प्रकार द्वादश भावों पर सामान्यतया सुगडेन शास्त्राधारसे दृष्टिपात करने पर निश्चित होता है कि भारत को निकट भविष्यमें ही अवश्य ही लड़ाई लड़नी होगी। जिस में भारत विजयी होगा। काश्मीर की वर्णक्रमानुसार मिथुन राशि है—और वैसे काश्मीरकी दिक् राश्याधिकार से मीन मेष राशी का अधिकार है मीन पर पाप ग्रहोंकी दृष्टि है और मेष पर भी है अतः काश्मीर ही इस युद्धका प्रारम्भिक क्षेत्र बनेगा। इन योगोंके आधारसे चन्द्रमा लग्नमें है अतः ११।१०।४६ के पश्चात् भारतमें राजनैतिक क्षेत्रोंमें अवश्य ही परिवर्तनकारी फल करेगा। बुध उच्चका होकर लग्नमें है सो व्यापारी क्षेत्रमें, शिक्षा क्षेत्रमें अवश्य ही विशेष परिवर्तन करेगा। शनि लग्नमें है अतः प्रजामें बेरोजगारी विशेष रूप से फैलेगी, किंतु मित्रके घरमें है इससे नेष्टकारी नहीं है। नेपच्यून लग्नमें है अतः यह असन्तोषकारी फल उत्पन्न करेगा, व्यभिचार, अपघात आदि कारक है। तथा विशेष परिवर्तन करने वाला है। यह ग्रह शुभ नहीं है। विशेषतया इस योगके प्रभावसे मजिस्ट्रेट, राज्यके उच्च अधिकारी वर्ग, राजप्रमुख, सिविलियन; बड़े अफसर परराष्ट्र के दूत साहित्यसेवीजन, साधारण जनता इनमें संघर्ष होगा ग्रहयोगानुसार यह फल है।

———

तीन मासकी दैनिक तेजी मन्दी

[लेखकः—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

कार्तिक मास

बदी १ गुरुवार ता० २६ अक्टूबर चांदी मंदी होके तेज।
" २ शुक्रवार ता० २७ " चांदी मंदी
" ३ शनिवार ता० २८ " चांदी तेज होके मंदी गुड़ तेज
" ४ सोमवार ता० ३० " चांदी तेज
" ५ मंगलवार ता० ३१ " चांदी थोड़ी मंदी होके तेज। गुड़ तथा सरसों तेज।
" ६ बुधवार ता० १ नवम्बर चांदी मंदी हो परन्तु तेजीका भी उछाला हो।
" ७ गुरुवार ता० २ नवम्बर चांदी मंदी।
" ८ शुक्रवार ता० ३ " चांदी मंदी।
" ९ शनिवार ता० ४ " चांदी तेज।
" ११ सोमवार ता० ६ " चांदी गुड़ तेज।
" १२ मंगलवार ता० ७ " चांदी तेज होके मंदी।
" १३ बुधवार ता० ८ " चांदी मंदी।
" १४-१५ गुरुवार ता० ९ " चांदी मंदी होके तेज, गुड़ मंदा।
सुदी १ शुक्रवार ता० १० " ८ बजे रात चांदी तेज।
" २ शनिवार ता० ११नवम्बर सायं. चांदी सरसों तेज।
" ४ सोमवार ता० १३ नवम्बर घटा-बढ़ी, सरसों तेज।
" ५ मंगलवार ता० १४ नवम्बर चांदी मंदी।
" ६ बुधवार ता० १५ नवम्बर चांदी मंदी होके तेज।
" ७ गुरुवार ता० १६ नवम्बर दोपहर बाद चांदी तेज।
" ८ शुक्रवार ता० १७ नवम्बर कुछ मंदी होके तेज।
" ९ शनिवार ता० १८ नवम्बर चांदी मंदी सरसों तेज
" ११ सोमवार ता० २० नवम्बर चांदी गुड़ सरसों तेज।
" १२ मंगलवार ता० २१ नवम्बर चांदी गुड़ सरसों तेज।
" १३ बुधवार ता० २२ नवम्बर चांदी मंदी।
" १४ गुरुवार ता० २३ नवम्बर चांदी मंदी।
सुदी १५ शुक्रवार ता० २४ नवम्बरचांदी तेज होके मंदी।

सारांश—चांदीमें कार्तिक बदीपक्षमें पहिले मंदीका रुख रहते अन्तमें तेजीका रुख रहेगा। तथा सुदी पक्षमें चांदी, सरसोंमें रुख तेजीका रहेगा।

मार्गशीष मास

बदी १ शनिवार ता० २५ नवम्बर चांदी गुड़ तेज।
" ३ सोमवार ता० २७ नवम्बर कुछ तेज होके मंदी।
" ४ मंगलवार ता० २८ नवम्बर चांदी तेज होके मंदी।
" ५ बुधवार ता० २९ नवम्बर चांदी १॥) २) मंदी फिर रातको १०बजेके करीब तेज हो। सरसों तेज।
" ६ गुरुवार ता० ३० नवम्बर चांदी गुड़ सरसों तेज।
" ७ शुक्रवार ता० १ दिसम्बर चांदी मंदी।
" ८ शनिवार ता० २ दिसम्बर चांदी गुड़ सरसों तेज।
" १० सोमवार ता० ४ दिसम्बर चांदी सरसों तेज।
" १३ गुरुवार ता० ७ दिसम्बर चांदी मंदी होके तेज।
" १५ शनिवार ता० ९ दिसम्बर चांदी गुड़ सरसों मंदी।
सुदी २ सोमवार ता० ११ दिसम्बर चांदी तेज गुड़ मंदा।
" ३ मंगल० ता० १२ दिसम्बर चांदी तेज होके मंदी।
" ४-५ बुधवार ता० १३ दिसम्बर चांदी तेज।
" ६ गुरुवार ता० १४ दिसम्बर कुछ तेज होके मन्दी
" ७ शुक्रवार ता० १५ दिसम्बर कुछ घटा बढ़ी।
" ८ शनिवार ता० १६ दिसम्बर चांदी तेज।
" १० सोमवार ता० १८ दिसम्बर चांदी तेज।
" ११ मंगलवार ता० १९ दिसम्बर घटा बढ़ी।
" १३ शुक्रवार ता० २२ दिसम्बर चांदी तेज होके मंदी।

नोट—चांदीमें इस मास रुख विशेषकर तेजीका रहेगा। सुदी पक्षमें तिथि १२ से गुड़ सरसोंमें कोई नई इकतरफा लाइन निकलेगी। बाजार रुख देखें। मृगसिर बदी १ से ४ मासमें सुगन्धित वस्तु तथा देवदारु आदि खट्टे पदार्थ तेज हों। तथा मृगशिर सुदी १५से ६ मासमें

किराना हल्दी, सोंठ, मिर्च, पीपल खरीदनेसे ६ मासमें लाभ हो।

पौष मास

बदी १ सोमवार ता० २५ दिसम्बर चांदी तेज।
,, २ मंगलवार ता० २६ दिसम्बर चांदी तेज।
,, ४ गुरुवार ता० २८ दिसम्बर रातको चांदी तेज।
,, ५ शुक्रवार ता० २६ दिसम्बर सुबह चांदी २) तेज गुड़ तेज।
,, ६ शनिवार ता० ३० दिसम्बर तेज होके मंदी।
,, ८ सोमवार ता० १ जनवरी चांदी तेज होके मन्दी।
,, ६ मंगलवार ता० २ जनवरी चांदी तेज।
,, १० बुध ता० ३ जनवरी रात मंदी होके तेज।
,, ११ गुरुवार ता० ४ जनवरी चांदी तेज।
,, १२-१३ शुक्रवार ता० ५ जनवरी चांदी तेज होके मंदी
,, १४ शनिवार ता० ६ जनवरी चांदी मन्दी।
सुदी १ सोमवार ता० ८ जनवरी चांदी तेज।
सुदी २ मंगलवार ता० ६ जनवरी चांदी तेज।
,, ३ बुधवार ता० १० जनवरी चांदी मन्दी होके तेज।
,, ४ गुरुवार ता० ११ जनवरी चांदी तेज, गुड़ तेज।
,, ५ शुक्रवार ता० १२ जनवरी सरसोंमें तेजी चले।
,, ६ शनिवार ता० १३ जनवरी चांदी तेज!
,, ८ सोमवार ता० १५ जनवरी चांदी मंदी।
,, ६ मंगल० ता० १६ जनवरी चांदी मन्दी।
,, १० बुधवाव ता० १७ जनवरी चांदी तेज।
,, ११ गुरुवार ता० १८ जनवरी घटा बढी।
,, १२ शुक्रवार ता० १६ जनवरी थोड़ी मन्दी होके तेज।
,, १३ शनिवार ता० २० जनवरी रातको चांदी तेज
,, १४-१५ सो०मं० २२-२३ जनवरीमें चांदी मन्दी।

नोट—इस मास चांदीमें रुख विशेष कर तेजीका रहेगा। ता० १३ जनवरीसे गुड़, सरसोंमें कोई इकतरफा लाइन निकलेगी। हमारा ध्यान गुड़ पर तेजीकी लाइन बननेका है।

❀ क्षय विवेचन ❀

[ले०—श्री १०८ स्वामी आनन्दगिरिजी महाराज आयुर्वेदाचार्य]

ऐतिहासिक एवं व्यापक दृष्टिकोणसे यह रोग समस्त संसार पर अपना भयानक रूप प्रकट कर चुका है और कर रहा है! कोई देश अथवा कोई जाति राष्ट्र ऐसा नहीं जो, इस विश्वभुग् रोगसे सर्वथा मुक्त हो या अपनेको सर्वथा मुक्त कह सके। फिर भी शीतप्रधान एवं समशीतोष्ण देशों, प्रांतों की अपेक्षा गरमी वाले देशों एवं प्रांतोंमें यह अधिक होता है। समुद्री धरातलसे ऊंचे पहाड़ी प्रांतोंका वायुमण्डल प्रायः स्वच्छ और हल्का होनेसे विष्णुपदामृत (प्राण) पूर्ण होता है; अतः उन पर्वतीय प्रदेशोंमें यह रोग अपना प्रभाव डालनेमें असमर्थ रहता है। यही कारण है कि भारतके मैदानी प्रदेशोंके क्षयपीड़ित रोगियोंको पहाड़ों पर जानेका परामर्श दिया जाता है। रंगकी दृष्टिसे देखा गया है कि यह गोरोंकी अपेक्षा श्याम रंग वाले लोगों, ग्रामीणोंकी अपेक्षा बड़े नगरोंमें रहने वाले लोगों, कठोर-सहनशील-प्रकृति रखने वालों की अपेक्षा कोमल प्रकृति वाले लोगों, सबल मनुष्योंकी अपेक्षा निर्बल लोगों, ब्रह्मचर्य रखने वालोंकी अपेक्षा विषयी लोगों, और बेपरवाह रहने वालों की अपेक्षा वहमी लोगों को यह रोग अधिक हुआ करता है। किसी मानसिक व्यथासे चिंतित रहने वाले देहमें अमानती (Emunity) की कमी एवं रोगोंको अपनाने की प्रकृति (Tendency) की विद्यमानता और किसी अन्य रोगका समुचित उपचार न होने तथा उस रोगके पुराना होकर विकृत हो जानेसे भी क्षयरोग मानव कलेवरमें अपना डेरा अस्थाई रूपसे जमा लिया करता है। इस रोगके विश्वव्यापी होने पर भी सबसे पूर्व ऋग्वेदमें उल्लेख मिलता है, जो कि

संसार के ज्ञानभण्डारमें सर्वप्रथम प्रविष्ट हुआ माना जाता है। अथर्ववेद और उनके विभिन्न प्रवचन करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थोंमें भी इसका वर्णन पाया जाता है।

भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थोंमें सर्वप्रथम राजर्षि काशिराज दिवोदास (धन्वन्तरिके अवतार) ने अपने प्रथम शिष्य विश्वामित्र (४ र्थ) के ज्येष्ठ पुत्र सुश्रुत❀ को भैषज्यविज्ञान की शिक्षा देते हुए इस रोगको संक्रामक (Infections Disease)× प्रकट किया। इसके पश्चात् कृष्णआत्रेय मुनिने अग्निवेश आदि अपने छः शिष्योंको आयुर्वेदकी शिक्षा देते हुए चन्द्रमामें पड़े धब्बोंके उदाहरणसे क्लोमिक-फुस्फुसीय-क्षय(Pulmonary Phthisis)में बनने वाले गर्त्तों (Cavities) का भी पता दिया। इसके अनन्तर शार्ङ्गधर (९ वीं शती विक्रम), माधव (१० वीं शती विक्रम), वाग्भट (१२ वीं श० वि०), और भावमिश्र (१६ वीं श० वि०) आदि आचार्योंने इस विषय पर अपने-अपने समय एवं अनुभवके अनुसार पर्याप्त प्रकाश डाला।

यूनानमें सबसे पहिले (ईस्वी सन् से ४६७ वर्ष पूर्व) हकीम बुकरात (Hippocratus) ने इस रोगका वर्णन किया। लगभग ५०० वर्ष पहिले ईस्वी २५-३० में रोमनिवासी हकीम सैलसूस (Celsus) और फिर यूनानी हकीम जालीनूसने भी इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए। इसके उपरांत ईसाकी १६ वीं शतीके अन्त तक इस विषयमें किसी यूनानी, रूसी अथवा अरबी तबीब ने कोई विशेष खोज नहीं की। उन दिनों यूनानी, रूसी आदि हकीम क्षय एवं यक्ष्मा, दिक एवं सिल—(Phthisis and Consumption) को दो अलग-अलग रोग समझा और माना करते थे। हां, वेदमें क्षय और यक्ष्माका सम्मिलित नाम ÷ "राजयक्ष्मा" अवश्य मिलता है। ईस्वी सन् १६४१ में सबसे पहिले फ्रांसीसी डाक्टर "सिलव्यूस" (Sylvius) ने इन दोनों में

❀ सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान अ० २ और उत्तर तन्त्र अ० ६

× सुश्रुत निदान स्थान अध्याय ५

÷ ऋग्वेद मं० १० सूक्त १६१ मं० १, अथर्ववेद कांड ११ सूक्त ३ मंत्र ३६

एकता का विचार प्रकट किया। फिर सन् १६८२ में 'मर्गू-गेग्नी' (Murgagni) नामके इटालियन डाक्टरने और उसके लगभग ६७ वर्ष बाद १७३६ में अंग्रेज डाक्टर "बायूली" (Baillee) ने भी दोनों को एक ही प्रकट किया। इस विचारको लेकर उन दिनों क्लोमिक-फेफड़ोंमें होने वाले कोथ (Gassgrenous of the Lungs) और क्लोमिक (फुप्फुसीय) विद्रधि (Cancer of the Lungs) को भी इसी परिवारमें सम्मिलित किया जाने लगा था। भला हो फ्रांसीसी डाक्टर 'लेननिक' (Lannic) का, जिसने इन दोनों (कोथ और विद्रधि) का ठीक-ठीक निदान करके क्लोमिक क्षयसे भिन्न सिद्ध कर दिया। अन्तमें जब सन् १८८२ में जर्मन डाक्टर 'राबर्ट कोख' (Robert Koch) ने क्लोमिक कणको (Tubercles in the lungs) में विशलाकी अर्थात् दण्डकी (Bucilius) कीटाणुओं को देखा तब यह अन्तिम निर्णय कर दिया गया कि यह रोग इन्हीं कीटाणुओं ❀ के कारण पैदा होते हैं। और इसीलिए इस रोगका नाम भी "ट्यूबर्कल बौसेलिल" अथवा "ट्यूबर्क्युलोसिस" (Tuberculosis) प्रसिद्ध हो गया। रोगाणु अथवा कीटाणुवादका जन्मदाता तो इटलीका एक डाक्टर था, जो रेशमके रोगी कीड़ों पर पराश्रित (Parasite) फंफूदी की छानबीन किया करता था। रोगग्रस्त रेशमी कीड़ोंको देखकर उसे सन्देह हुआ और उसने कीटाणुवाद × पर पहले

❀ अंग्रेजी शब्द जर्म (Germ) और फारसी शब्द 'किरम'—ये दोनों संस्कृतके 'कृमि' शब्दका अपभ्रंश अर्थात् विकृत रूप हैं। सुश्रुत संहिता निदान स्थानके ५ वें अध्यायमें और चरक-संहिता विमान स्थानके ७ वें अध्यायमें कीड़ों-कीटाणुओं का वर्णन मिलता है। अथर्ववेदमें रोग पैदा करने वाले कीटों और कीटाणुओंके दो सौ से अधिक नाम और रूपभेद भी लिखे मिलते हैं।

× कोरी आंखोंसे दिखाई न देने वाले जीवाणुओं (जीवित अणुसदृश प्राणियों) की अनेक जातियां हैं जिन्हें चलती भाषामें कृमि, कीट (Germs) कहा जाता है। सूक्ष्म दर्शक यंत्रोंके आविष्कारसे पहिले इन सबमें कोई

पहल अपने विचार प्रकट किए। इसके बाद अनेक वैज्ञानिक इस वादके अनुसंधानमें संलग्न हुए; किन्तु सबसे बढ़कर जिसने परिश्रम किया और अपने काममें सर्वाङ्ग सफलता प्राप्त की :—वह जर्मनका एक ग्रामीण डाक्टर राबर्ट कोख था, (१८४३ से १९१० तक) कोख एक साधारण ग्राममें चिकित्सकका काम करके अपनी जीविका चलानेका व्यवसाय करता था। उसे प्रायः अपने कई एक रोगियोंका उपचार करते हुए संदेह हुआ करता था कि. इतना उपचार करने पर भी अमुक-अमुक रोग अच्छे क्यों नहीं होनेमें आते। उन दिनों सूक्ष्मदर्शक-अणुगोचर-अथवा (Microscope) का आविष्कार हो चुका था। कोख अपने दैनिक कामसे छुट्टी पाकर अवकाशके समय अपने सूक्ष्मदर्शकसे परख नलियों (Test Tubess) द्वारा निरीक्षण-परीक्षण करनेमें लग जाता ' उसे शीघ्र ही मालूम होगया कि रोगोंके वास्तविक रूप एवं कारणको जाननेके लिए इन जीवाणुओंके निरीक्षण करनेका अबतक चला आ रहा तरीका अधूरा है, और इसके बदले बिना इस काममें सफलता नहीं मिल सकती।

अब उसके सम्मुख एक भारी कठिनाई उपस्थित हुई, वह यह है कि, जब कभी किसी मरे हुए प्राणीकी षपुजों का अपनी सूक्ष्मदर्शनी द्वारा निरीक्षण करने बैठता तो उसे कीटाणु अपने स्पष्ट रूपमें दिखाई नहीं देते, फिर भी उसका संदेह बना तो रहता। अब उसने निश्चय किया कि यदि इन जीवाणुओंको किसी प्रकार रंग दिया जा सके तो वे सहज ही दिखाई पड़ जाँगे। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों उसकी व्यग्रता और उसके साथ खोज भी बढ़ती गई। कई वैज्ञानिक इस खोज में लगे हुए थे। कोई ५० वर्ष पीछे इतनी सामग्री एकत्रित हो गई; कि इन जीवाणुओंके विषयमें कुछ विश्वास के साथ कहा जा सके। इस खोजके परिणाम स्वरूप इतना निश्चय हो गया कि प्रत्येक संक्रामक रोग भिन्न भिन्न प्रकारके निश्चित जीवाणुओं द्वारा फैला करता है। अंततोगत्वा इस जीवाणु वादके साथ अनुसंधान में सबसे अधिक परिश्रम और यश राबर्ट कोख को ही प्राप्त हुआ।

१८७९ में कोखने निश्चय पूर्वक इतना तो स्पष्ट कह दिया कि समस्त संक्रामक रोग जीवाणुओं के कारण ही फैलते, फूलते एवं फलते हैं। इससे कुछएक वर्ष पहिले फ्रांसके एक डाक्टर ' डेवेन' ने भी ऐसे ही विचार प्रकट किये थे, किन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा को स्पष्ट रुपसे प्रमाणित न कर सका। अन्तमें राबर्ट कोख की लगन और परिश्रम सफल हुई और उसके विचारपूर्ण कीटाणुवाद को यूरोपके प्रायः वैज्ञानिकोंने स्वीकार कर लिया।

कुछ ही वर्षोंके पश्चात् अर्थात् १८८२ में कोखने असली तौर पर यह भी सिद्ध कर दिया कि, राजयक्ष्मा—का कारण भी एक विशलाकी (सलाईकी भांति सीधे आकार वाले) जीवाणु ही हैं। उसने राजयक्ष्मासे मरे हुए प्राणियोंका शारीरिक परीक्षण करके देखा तो ज्ञात हुआ कि मृतक शवके कोषपुंजोंमें अनेक प्रकारके जीवाणु विद्यमान हैं। इन सब प्रकारके जीवाणुओंमें भी एक ऐसा विशेष वर्ग लगभग सभी मृत प्राणियोंमें पाया गया। इनकी स्वतन्त्र पहिचान करनेके लिए कोखने उन्हें रंगने का एक नवीन ढङ्ग निकाला। जिस जातिके जीवाणुको वह राजयक्ष्मामें प्रधान समझता था, उसीको रंगनेके लिए यह नया तरीका निकाला गया। उसने राजयक्ष्मासे पीड़ित प्राणियोंमें लाखों करोड़ोंकी संख्यामें ये जीवाणु देखे और इस नवीन रंगको काममें लानेसे उसे विश्वास हो गया कि वह धोखा नहीं खा रहा है, और यही जीवाणु इस रोगमें काम करते हैं।

राजयक्ष्माके प्रत्येक रोगीके मृत कलेवरमें लाखों जीवाणुओंको देख लेने पर भी कोखको यह विश्वास नहीं था कि, ये ही जीवाणु राजयक्ष्माको पैदा भी कर लेते होंगे। उसे सन्देह था कि कदाचित् ये जीवाणु रोगीके मृत शरीरमें ही पाये जाते होंगे। इसकी ठीक-ठीक परीक्षाके लिए उसने इन्हीं जीवाणुओंको संख्या वृद्धि करनेके लिए वर्धक माध्यम द्वारा पैदा किया, खूब बढ़ाया और इनकी कई एक थलियाँ

विशेष भेद नहीं माना जाता था। इन यंत्रोंके बन जाने पर ऐसे कीटाणु जगत्को सूक्ष्मजीव (Micro-organisms) कहा जाने लगा। इस कीटाणु वर्गके अब दो भेद किए गए हैं :—एक अतिसूक्ष्म वर्गको जीवाणु (Buctu rium) और दूसरेको कीटाणु (Germs) कहा जाता है।

तैयार की। इन कीटाणुओंको अन्तर्वेधन सुईके द्वारा एक स्वस्थ जानवरके शरीरमें प्रविष्ट किया। कीटाणु प्रवेश करने के पश्चात् वह पशु रोगग्रस्त हुआ, उसमें राजयक्ष्माके कीटाणु पाये गए, और वह पशु उसी रोगसे अन्तको मर गया।

फिर भी कोखने अपने निश्चयको सर्वाङ्गपूर्ण करनेके लिए उस मृत पशुके कोषोंमें से पर्याप्त मात्रामें कीटाणु निकाले और अपने आविष्कृत रंगसे रंग दिए। तब उसने देखा कि, ये वे ही जीवाणु-कीटाणु हैं जो कि उसने जीवित प्राणीके शरीरमें सुईसे पहुंचाए थे। अब मानो राबर्ट कोख इस योग्य हुआ कि, वह अपने इस विश्वास पूर्ण सिद्धान्तको प्रकट कर दे कि राजयक्ष्मा नामका भयानक रोग इन जीवाणुओं द्वारा पैदा होता है और बढ़ता हुआ जीवन घातक बनता है। अब तो जिस भी रोगमें ऐसे कीटाणुओंकी उपस्थिति पाई जाती वे सब इसी नामके अन्तर्गत समझे और माने जाने लगे। सामान्य राजयक्ष्मा (General Tubercluries) श्लोमिक अथवा फुप्फुसयक्ष्मा (Pulmonay Phthisis), ग्रन्थिल यक्ष्मा कण्ठमाला आदि—(Glandur Phthisis or Scrofula), नत्रानिक मसारिक यक्ष्मा (Tubes Masarica), औदरिक अथवा आंत्रिक यक्ष्मा (Abdominal Phthisis) मध्यम कर्णिक यक्ष्मा (Niddle ear Phthisis), नासिक यक्ष्मा (Nose P.) गिलर्णीक यक्ष्मा (Pharynyal P.), कण्ठालिक क्षय (Luryn P.), त्रिकालिक क्षय (True cheul or Bronchial Phthisis), हृदयाशयिक क्षय (Peri curdial P.) जाठरिक क्षय (Ventriculic P.) अग्न्याशयिक क्षय (Puncreatic Phthisis) कालेयक क्षय (Heputic P.) प्लीहिक क्षय (Spleenic P.) वृक्कशीर्षक क्षय (Suprbnul P.) मूत्राशयिक क्षय (Phthisis of the Bladder) आण्डिक क्षय (Epididy mytis Phthisis), अस्थि क्षय (Bone Tuberculosis) त्वग्यक्ष्मा (Lupus P.) श्वसनिक क्षय (Pneumomac Phthisis), और अलीक यक्ष्मा (Psendo Phthisis) आदि अनेक भेद समझे एवं माने गये हैं।

इन सबमें से एक उरःक्षत (जिसमें एक या दोनों फेफड़ोंमें घाव होकर थूकके साथ रुधिरकी लाली होती है। और कभी-कभी खून मिली पीप भी वमनके साथ निकल जाती है) वाले यक्ष्माके जखमको छोड़कर बाकी जितने भी क्षयके भेद वर्णन किए गए हैं उन सबको राजयक्ष्मा अथवा मिश्रित क्षयके ही अन्तर्गत समझना चाहिए। कारण यह है कि ये सबके सब आवयविक(Organic) विकार अपने जन्मकाल आरम्भिक अवस्थामें क्षय न होकर स्वतन्त्र सत्ता रखने वाले रोग थे, जो पुराने हो जाने पर समुचित उपचार न होने और रोगी अथवा अभिभावकों--परिचर्या करने वालोंकी असावधानतासे इनमें धीरे-धीरे संडाह एवं कोथ उत्पन्न होने लग जाती है। तभी ये सभी क्षयके रूपमें बदलने लग जाते हैं। और अन्तमें पूर्ण रूपसे क्षय हो जाते हैं। उदाहरणके लिए एक मनुष्यको अदृष्ट-अडोठ (Carbancle) अथवा कोई सविषज जातिका फोड़ा निकला हो तो, वह चिकित्साकी कमी, रोगीके गन्दे रहने, उसकी निर्बलता और स्वास्थ्यप्रद भोजन न मिलनेसे उपद्रवके रूपमें अथवा अमानती शक्ति (Immunity) के अभावसे थोड़ा-थोड़ा ज्वर रहने लगे; तब उसका यही फोड़ा गहरा होकर और ज्वर को स्थायी बनाकर अस्थिक्षयमें परिणत हो जाता है।

सन् १८८२ में जब राबर्ट कोखने यक्ष्मा कीटाणुओं का आविष्कार किया, उसके कुछ ही दिन बाद जर्मनमें ही इस वाद (Theory) का विरोध करने वाले डाक्टर भी मैदानमें निकल आये थे। इनमें उच्चकोटिके वैज्ञानिक योद्धा भी थे। उनका मत था कि मुंह, नाक अथवा वायु आदि द्वारा मानव शरीरमें प्रवेश पाने वाले कीटाणु इतने बलवान् नहीं हो सकते कि मानव देहमें व्यापक अमानती (Immunity) और रचनाका काम करने वाले रुधिरके श्वेतकणों सफेद सिपाहियोंको हराकर अपना प्रभाव जमा सकें। वास्तविक बात यह है कि, पहले शरीरके बाह्य एवं आन्तरिक उपादानोंसे रोगका बीजारो-

पण और साधन पाकर जन्म होता है। उस बीजरूप रोग मूलकका समुचित उपचार न होनेसे कोष पैदा होकर इन कीटाणुओंको उत्पन्न करती है। तब ये आन्तरिक कीटाणु ही बढ़ते हुए रोगको उत्पन्न करने तथा स्थायी बनानेमें कारण बन जाते हैं। इस प्रकार बाहरसे प्रवेश पाने वाले कीटाणु भीतर कीटाणुसे मिलकर अपनी सजातीय संगठित सेनाकी वृद्धिसे रोगको और भी भयानक एवं संक्रामक बना देते हैं। जर्मनके भैषज्य विज्ञानमें इस कीटाणुवादकी वास्तविक ऊहापोह पर एक दर्जनके लगभग विस्तृत ग्रन्थ लिखे गये हैं। फिर भी जिस प्रकार 'चार्ल्स-डारविन' के विकासवाद पर उसीके साथियोंमें से 'रसल-वालेस' जैसे विद्वानों द्वारा कई खंडनात्मक ग्रन्थ लिखे एवं प्रकाशित किये जाने पर भी विकासवाद अपना प्रभाव बराबर बनाये हुए है, इसीप्रकार कीटाणुवादका चाहे जितना खण्डन होता रहे वह अनुपण चल रहा है और 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' चलता ही रहेगा।

ध्यान रहे कि क्षय और यक्ष्मा शब्द संस्कृत अथवा वैदिक भाषाके हैं। इनमेंसे पहले शब्दका अर्थ होता है दिन पर दिन घुलना, गलते हुए क्षीण होना अर्थात् दुर्बल होते चले जाना। दूसरे यक्ष्मा शब्दका अर्थ है खाये जाना, चीरते एवं फाड़ते हुए घाव-चिराव-बनाते जाना। फारसी एवं उर्दूका शब्द 'जख्म' इसी यक्ष्मा शब्दका थोड़ा सा बदला हुआ रूप है,यहां तक कि इस रोगका रोगी वास्तवमें दिन पर दिन गलता घुलता चला जाता है,उसकी पसलियां तथा दूसरी हड्डियां चमड़ीके नीचे अलग २दिखाई देती हैं। इसका कारण यही होता है कि, हड्डियोंके ऊपरवाली वसा (चरबी) तो समाप्त प्राय हो जाती है, कलायें अर्थात् झिल्लियां भी निस्तेज एवं सत्वहीन होकर तल्लीमें जा छिपती हैं और हड्डियोंका खारिक भी फोकाके रूपमें बदल कर खुरखर जाता है। इन सबका परिणाम यही होता है कि रोगी दिनों-दिन सूखता हुआ हड्डियोंका मानों एक ढांचा अथवा पिंजर भर रह जाता है। इन्हीं अर्थोंको ध्यानमें रखकर इस दिन पर दिन क्षीण करने वाले रोगका नाम क्षय एवं यक्ष्मा रक्खा गया है। जो अब सम्मिलित रूपसे राज यक्ष्माके नामसे पुकारा जाता है। डाक्टरीमें इसका नाम थाइसिस (Pthisis) वस्तुतः यूनानी भाषा का शब्द है और इसका अर्थ भी दुबलापन एवं दुबला करने वाला है। अब यह भी पारिभाषिक रूपसे फेफड़ोंके गलित रोगके लिए मान लिया गया है, इस रोगमें एक या दोनोंफेफड़ों पर बहुत छोटे२खसखसी कण जैसे गलित रूप दाने पैदा होते जाते हैं, जो समय पाकर दो-दो, चार-चार छः-छः, आठ-आठ, एवं १०, २०, ३० आदि बहुतसे मिल-मिलाकर एक फफोला बनकर फूट जाते हैं। इसी फूटे हुए फफोलासे निकलने वाले पूयको सूक्ष्म रूपमें देखा एवं परखा जाता है, और जहां यह फफोला फूटता है वहां एक गढ़ासा बन जाता है, जिसे वैद्यकमें गर्त और डाक्टरी-में कैविटी (Cavity) कहते हैं।

यक्ष्मामें ऐसे दाने अथवा कण पैदा होकर फफोला नहीं बनता, इससे फेफड़ोंमें घाव-चिरावसा होकर रह जाता है। इस चिराव अथवा घावसे थूकमें रक्तका लगाव होता है और कफके साथ थोड़ा २ साफ रक्त भी निकलने लगता है। इससे भी रोगी रक्त निकलते रहनेसे बहुत शीघ्र रक्तहीन होकर दुर्बल और निस्तेज हो जाता है। ऋग्वेद एवं अथर्ववेदमें जो इन दोनोंका सम्मिलित नाम राजयक्ष्मा कहा गया है, इससे यही प्रतीत होता और भाव प्रकट होता है कि यह क्षय एवं यक्ष्माके परिवारमें होने वाले समस्त रोगोंका मानो राजा है।

आजकल राजयक्ष्माका एक नया नाम 'गाबलिन ट्यूबरक्लोसिस' सुननेमें आया है। यह अभी समझमें नहीं आ रहा है कि इसका यह नया नाम कब और कैसे प्रसिद्ध हुआ। अंग्रेजीमें इस (Goblin) शब्दका अर्थ (Amis cheevous e il spirit) अर्थात् एक धोखे-बाज शैतानी रूह होता है। बहुत सम्भव है कि राक्षसी वारुणिक राजयक्ष्मा (Tubercular Meningit is) और मंन्थरिक क्षय (Tubers culoei of the Typhoid form)को इसी श्रेणीमें समझा और माना गया हो।

वर्तमान सभ्यता और जीवनके दुरुपयोगसे इस समय और भी दो तीन तरहके क्षय [राजयक्ष्मा] देखनेमें आ रहे हैं। ये नवीन रोग या प्राचीन क्षयके नवीन रूप ऊपर लिखे शैतानी अथवा राक्षसी क्षयको भी मात कर रहे हैं। वैसे तो यह रोग प्रायः २४ से ३६ वर्षकी आयु तक

अधिक होना पाया जाता है। सभी वैद्य, हकीम एवं विशेष रूपसे डाक्टर लोग जानते हैं कि लड़कोंमें अण्ड-कोषकी वीर्य बनाने एवं पकानेवाली कई सौ सूक्ष्म थैलियां १८ सालकी आयु तक परिपक्व होकर अपनी संख्या पूरी कर पाती हैं। १६ से २३-२४ सालकी आयु तक अपने को सर्वाङ्ग पूर्ण करके इस लायक हो पाती है कि स्वस्थ एवं सुन्दर सन्तान पैदा करने योग्य वीर्य को उसके वास्तविक सोम ❀ रूप में प्रस्तुत करसकें।

जिन लड़कों को किशोर अवस्था (१० वर्ष तक बालक और १० से १८ वर्ष की आयु तक किशोर माना जाता है) में हस्त मैथुन (Annism or Marterbation) अथवा लड़कों से मैथुन(Sodomys का दुर्व्यसन (आदत) पड़ जाता है जो कि स्कूलों में प्रायः देखा सुना जाता है, उनकी ये थैलियां संख्या में ही नहीं—परिपाक में भी अधूरी रह जाती हैं। पौरुष ग्रंथी (Prostatic Gland) परिपाक एवं पोषण भी इन थैलियोंके सहयोगसे पूर्ण होता है। इस अधूरे पन के कई दुष्परिणाम देखे—पाये जाते हैं। उनमें से कुछेक का उल्लेख यहां किया जाता है।

(१) ऐसे लड़कों को सर्वत्र रात्रिस्खलन—स्वप्न दोष (Night-Discharge) होने लगता है, जो जाने में नहीं आता, यदि शान्त भी हो तो पूरे परिश्रम से शान्त होता है, किन्तु इससे (२)व्यसनिका चेष्ठा प्रायः निस्तेज, आंखों के नीचे काली सी धारी, व्यसन यदि चरम सीमा तक पहुंच जाय तो व्यसनी अंधेरे में बैठना पसन्द करता है, दूसरे से आंख मिलाने में भी संकोची लज्जाशील और स्त्रियों से बचना पसंद करता है।

(३) इस छोटी आयु में दुर्व्यसन की कृपा से लड़कों का वरूणा (Brain) अर्थात् दिमाग बहुत निर्बल हो जाता है और साथ ही स्मरण शक्ति भी प्रायः कम हो जाती है। (४) यदि व्यसनी को कुमारावस्था (कंवारपन) में किसी प्रकार का ज्वर होने लगे और उसका उपचार ठीक समय पर समुचित रूप से न किया जाये तो व्यसनी एक ऐसे बहम ग्रस्त हो जाता है और यह बहम इतना बढ़ जाता है कि वही ज्वर धीरे धीरे पुराना पड़कर क्षय में परिवर्तित होने लग जाता है। उसका मस्तिष्क पहले ही निर्बल था इस बहमने उसे और निर्बल बना दिया, जिससे वह चिड़चिड़े स्वभाव वाला बन जाता है। अन्त में उसका चेहरा ऐसा विकृत एवं भयानक हो जाता है कि देखने वाले का हृदय भी भयभीत हो जाता है। (५) ऐसे किशोर अवस्था वाले व्यसनी इसी अवस्था में (१८, २० वर्ष की आयु में) विवाहित होने पर भी इस रोग से पीड़ित देखे गये हैं। भारत की पिछली शती में इससे पूर्व भी विवाहित दम्पति प्रायः माता के नियंत्रण में होने से जीमन—आयुका दुरुपयोग करने का बहुत कम अवसर पाते थे। अब अंग्रेजियतके युग प्रभावने दोनों को ही (विशेषकर पढ़े लिखे) अपनी गोद में ले लिया है। फल यह हुआ कि विवाह होने से पहले अथवा विवाहके उपरान्त तुरन्त ही दम्पतिके उठने बैठने, बातचीत करने, मिलने जुलने और रहने बसने के लिए स्वतंत्र स्थान प्रस्तुत रहता है। फलतः अनुभव हीन परिणाम के ज्ञानसे रहित होनेके कारण किशोरपनके अन्त एवं यौवनके आरम्भमें ही कामवृत्ति बढ़ने लगती है। पतिके पूर्व संचित दुर्व्यसन और भी सहायक हो जाते हैं। ऐसी अवस्थामें दोनोंमें से किसी एकको किसी भी कारणसे और किसी भी प्रकारका ज्वर हो जाये तो वह चाहे कितना हल्का क्यों न हो, उसकी विद्यमानतामें मैथुन कर्म होने पर वही ज्वर किसी सीमातक स्थायी होने लगता है। सभी वैद्य जानते हैं कि प्रत्येक ज्वर रुधिरगत होनेके रूपमें गरमी बढ़ा दिया करता है। इसलिए ज्वर की अवस्थामें रक्त तो पहले ही गरम था अब मैथुन क्रियासे रस भी गरम हो जाता है। कारण यह है कि इसके गरम हुए बिना स्खलन को प्रेरणा नहीं मिलती, अतः दोनोंके एक समयमें गरम हो जाने से पूर्व वर्तमान ज्वरको परिवर्तित करनेके लिए आशातीत सहायता मिलती है। पूर्व वर्तमान ज्वरका समुचित उपचार तो हुआ नहीं, यह नयी ऊष्मा बढ़कर उसी का अनुसरण करने लगती है। तब धीरे धीरे ओज रसका क्षय, शरीर की पूर्व संचित दुर्बलता, अमानती शक्ति की कमी और बहम एवं निराशाका प्रबल प्रभाव मिलमिलाकर खांसीका

❀ प्रोत्समसोम —(Piotozoam) वीर्यमें संतान पैदा करने वाला जीवाणु।

उसका पाये हुए रोगीको निश्चित एवं पूर्ण राजयक्ष्मा के घेरेमें ला पटकते हैं। तिसपर यदि रोगीकी देहमें क्षयको अपनानेकी प्रवृति मौजूद हो तो उसको क्षय का खिलौना बरबस बनना ही पड़ता है। इस प्रकार युवकोंको रोगग्रस्त और अंतमें मृत्युग्रस्त होते अपनी आंखों से देखा है। भगवान् इस युगके माता पिता और युवक युवतियोंको सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे वे अपनी सन्तानों और सन्तानें अपने जीवन का मूल्य समझनेमें समर्थ हो सकें।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' से]

आश्विन शुक्ला	१०	शुक्रवार ता०	२० अक्टूबर	विजया १० दशहरा बुद्ध जयन्ति।
	११	शनिवार ता०	२१ ,,	पाशांकुशा एकादशी व्रत।
	१२	सोमवार ता०	२३ ,,	सोमप्रदोषव्रत, ताजिया।
	१५	बुधवार ता०	२५ ,,	शरद्पूर्णिमा, सत्यव्रत, कार्तिक स्नानारम्भः।
कार्तिक कृष्णा	३	रविवार ता०	२६ ,,	श्रीगणेश ४ (करवा चौथ) व्रत चन्द्रोदय स्टेण्डर्ड टाइम ७।४८।
	७	गुरुवार ता०	२ नवम्बर	अहोई अष्टमी, गुरुपुष्ययोग।
	११	सोमवार ता०	६ ,,	रमा एकादशी व्रत
	१२	मंगलवार ता०	७ ,,	धन १३ श्रीधन्वन्तरि जयन्ति भौमप्रदोष व्रत
	१३	बुधवार ता०	८ ,,	रूप १४ श्रीहनुमज्जन्मदिन नरकहरा १४
	१४	गुरुवार ता०	९ ,,	दीपमाला श्रीमहालक्ष्मी पूजन
कार्तिक शु०	१	शुक्रवार ता०	१० ,,	गोवर्द्धन पूजन अन्नकूट, वर्ष्टिकाकर्षण
	२	शनिवार ता०	११ ,,	चन्द्रदर्शन यम २ भाई टिक्का २ बलराज
	६	बुधवार ता०	१५ ,,	श्री पं० जवाहरलाल नेहरू जन्मदिवसोत्सव
	७	गुरुवार ता०	१६ ,,	वृश्चिक मु० ३० पुण्यकाल १८।१६ तक
	११	सोमवार ता०	२० ,,	हरिप्रबोधिनी एकादशीव्रत भीष्मपंचकारम्भ
	१२	मंगलवार ता०	२१ ,,	भौमप्रदोषव्रत चतुर्मास समाप्तिः
	१३	बुधवार ता०	२२ ,,	बैकुण्ठ १४ व्रत
	१५	शुक्रवार ता०	२४ ,,	सत्यव्रत भीष्मपंचक समाप्ति, मेला पुष्कराज और रामतीर्थ नानक जयन्ति
मार्गशीर्ष कृ०	४	मंगलवार ता०	२८ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।१५
	७	शनिवार ता०	२ दिसम्बर	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी
	१०	मंगलवार ता०	५ ,,	उत्पन्ना एकादशी व्रत
	१३	गुरुवार ता०	७ ,,	प्रदोष व्रत
	३०	शनिवार ता०	९ ,,	अमावस्याव्रत

मार्गशीर्ष शुक्ला	१	रविवार ता०	१० दिसम्बर	चन्द्रदर्शन
	६	गुरुवार ता०	१४ ,,	चम्पा ६ स्कन्द षष्ठी ललिता ६
	७	शुक्रवार ता०	१५ ,,	धनुः संक्रांति मु० ३० पुण्यकाल दूसरे दिन
	११	मङ्गलवार ता०	१९ ,,	मोक्षदा एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंकी श्रीगीता जयन्ती
	१२	बुधवार ता०	२० ,,	एकादशी व्रत वैष्णवोंके लिए
	१३	गुरुवार ता०	२१ ,,	प्रदोषव्रत
	१४	शनिवार ता०	२३ ,,	सत्यव्रत, श्रीदत्तजयन्ती
	१५	रविवार ता०	२४ ,,	पूर्णिमा
पौष कृष्ण	४	गुरुवार ता०	२८ ,,	श्रीगणेश चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ६।६
	११	गुरुवार ता०	४ जनवरी	सफला एकादशी व्रत
	१२	शुक्रवार ता०	५ ,,	प्रदोषव्रत
	३०	रविवार ता०	७ ,,	अमावस्याव्रत
पौष शुक्ल	२	मङ्गलवार ता०	९ ,,	चन्द्रदर्शन
	६	शनिवार ता०	१३ ,,	लोहड़ी (पंजाबदेशीय उत्सव)
	७	रविवार ता०	१४ ,,	मकर संक्रांति मु० ३० पुण्यकाल प्रातः ६ बजेसे सायंकाल तक, जन्मदिन श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी
	८	सोमवार ता०	१५ ,,	श्रीदुर्गाष्टमी ।

श्री कुँ० शिवसिंहजी का स्वर्गवास

"श्रीस्वाध्याय परिवारको यह पढ़कर महान् दुःख होगा कि 'श्री स्वाध्याय' के अनन्य हितैषी सहायक श्रीयुत कुँवर शिवसिंह जी सेशन जज गत भाद्रपद कृष्ण ७ रविवार ता० ३ सितम्बर को काश्मीर मेल दुर्घटनामें फँसकर शोक सन्तप्त परिवारको रोता बिलखता छोड़ स्वर्ग सिधार गये। जज साहब अत्यन्त शान्त विनम्र और प्रसन्न प्रकृतिके गुणग्राही सज्जन थे। इनका विद्या-व्यसन तो इसीसे स्पष्ट है कि श्री'स्वाध्याय' पर आपकी आरम्भ ही से ममता रही, इस पत्रके साथ आपका आत्मीयताका सा सम्बन्ध था। अनेक सद्गुणोंके कारण आपने जनताके हृदयमें एक विशेष स्थान बना लिया था। बघाट राज्यकी जनता आपको अपने मध्य पाकर फूली न समाती थी। किन्तु दैवदुर्विपाकसे ऐसे सच्चरित्र महानुभाव अकस्मात् ही हमारे मध्यसे उठ गये। विधाताकी इस वामताको देखकर भर्तृहरिका निम्न श्लोक सहसा स्मरण हो आता है—

सृजति तावदशेष गुणाकरं पुरुषरत्नमलंकरणं भुवः ।
तदपि तत्क्षणभङ्गी करोति चेदहह कष्टमपंडितता विधेः ॥

यह विधाता पहले तो अनेक गुणोंके भण्डार पृथ्वी के अलंकार व्यक्तिको उत्पन्न करता है और फिर उसे क्षण में ही उठा लेता है इससे बढ़कर विधाताकी अकुशलता और क्या होगी। अस्तु। जजसाहब तो शुभाचरण सम्पन्न होकर स्मरणीय कार्य करके चले गए। अतः अब आई हुई विपत्तिको धैर्यके साथ सहन करनेके अतिरिक्त उनके परिवारके लिए और चारा ही क्या। हम श्रीस्वाध्याय परिवारकी ओरसे जज साहबकी शोकाभिभूता माताजी उनकी धर्मपत्नी और समस्त परिवारको सान्त्वना देते हुए स्वर्गीयको आत्माको शाश्वत शांति प्राप्त होने के लिये प्रभुसे प्रार्थना करते हैं। जज साहब वास्तवमें महात्मा कबीरकी निम्न उक्तिको चरितार्थ कर गए हैं—

कबीरा जब हम आए थे तो जग हँसा हम रोए।
ऐसी करनी कर जा कि तुम हँसो जग रोए॥

———

विवाह और ज्योतिष—

कुण्डली मेलन पर एक दृष्टि

[ले०—श्री नन्दकिशोर 'गर्ग']

मानव जीवनमें विवाह एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। जीवनके १६ संस्कारोंकी गणनामें इसका मुख्य स्थान है। हमारे महर्षियोंने इस संस्कारको (वर-कन्या) दो मानव प्राणियोंका जीवनके मूल भूत उद्देश्यों धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके साधनार्थ किया हुआ पुण्य पवित्र संबन्ध माना है। आश्रम धर्मके द्वितीय परन्तु अधिक उत्तरदायित्व पूर्ण आश्रमका यह प्रवेश द्वार है। जिसके नियमोंके अनुसार चल कर दंपति उक्त फलोंकी प्राप्तिकी साधना करते हैं। धार्मिक आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य इहलौकिक विषयोंके अतिरिक्त मोक्ष, अर्थात् पारलौकिक कल्याण एवं आवागमनसे मुक्तिकी साधना भी इस आश्रम में रह कर प्राणी प्राप्त कर सकता है। परन्तु आज इन संस्कारोंकी ओर कौन लक्ष्य रखता है। आजकी पीढ़ीके गर्भाधान संस्कार प्रथम संस्कारसे ही संस्कृत नहीं मिल सकेंगे। १६ संस्कारोंमें विवाह संस्कारको तो फिर भी आज तक किसी न किसी रूपमें मान्यता दी है। देश काल व समाजके साथ-साथ इसके नियमोंमें भिन्नता चाहे हो परंतु यह तो सभी स्पष्ट मानते हैं कि सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं पारिवारिक सम्बन्धोंकी दृष्टिसे यह महान् संबंध है। इस महान् कार्यके करनेके पूर्व भावी दंपति इस महान् आश्रमका भार वहन कर सकेंगे कि नहीं उसकी योग्यताका विचार करना आवश्यक है। कुछ विषय तो बाह्य रूपसे ही प्रकट रहते हैं, परन्तु मानसिक, आध्यात्मिक तथा अन्य कई बातें जाननेके लिए परिश्रम करना आवश्यक है।

आधुनिक युगमें बाह्य दृष्टिकोण तो कुछ दिखाई देता भी है 'अर्थ' व 'काम' इन फलोंकी ओर ही समाज का प्रधान लक्ष्य दिखाई पड़ता है। उसमें भी अपनी-अपनी मनोवृत्तिके अनुसार किसी एकका ही प्रधान लक्ष्य रहता है। बिना सोच समझकर किए हुए क्षणिक प्रेमावेशके, धन लोलुपता अथवा शारीरिक सौन्दर्य मात्रके आधार पर किये हुए संबंध क्वचित् ही पार पड़ते हैं। कारण विदेशोंसे आने वाले समाचारोंमें आए दिन सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) सुनाई देते हैं। भारतकी भौगोलिक स्थिति एवं ऐतिहासिक तथा सामाजिक नियमोंने इस विषयमें तो अपने को विदेशोंसे पृथक् रखा है। हमारे ऋषिमुनियोंने वर-कन्याके भावी जीवनकी रूप रेखा जानने के लिए ज्योतिषका आधार लिया है। इसी के द्वारा वे वरके योग्य वधूका निर्वाचन करते थे। वर-कन्याके जन्म-नक्षत्रों, जन्म राशियों, तथा जन्म कालकी ग्रह स्थिति पर ही उनकी गणनाका आधार रहता है। वे यह दृढ़ धारणा रखते थे कि सांसारिक सुख व बाह्य सौन्दर्य ही नहीं वरन् मानवके उत्तम गुण पवित्रता, आत्माकी विशालता परस्पर भक्ति, प्रेम व ऐक्य शारीरिक अवयवोंकी तुल्यता, प्रवृत्ति, धर्म, धन, संतति आदि सभीका विचार योग्य निर्वाचन विवाहके लिये आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र अनेक प्रकारके विवाह-कूटोंके आधार पर इसके निर्णयमें सहायक होता है। कुछ कूट जन्म राशियोंके आधार पर विचार करते हैं व कुछ जन्म नक्षत्रोंके आधार पर। अपने अध्ययन एवं अनुभवके आधार पर कुछका यहां विवेचन किया जाता है—

मानव जातिको मुख्य १२ भागोंमें विभाजित किया जाता है। प्रत्येक राशिमें उत्पन्न जातक पर उस राशिके गुणोंका प्रभाव रहता है। 'श्रीस्वाध्याय' के अंकोंमें भिन्न-भिन्न लग्न जातकों पर समय समय पर प्रकाश डाला जा रहा है। राशियोंकी चरादि गणनाको ही लीजिये। चर राशिके जातक चंचल, प्रत्येक कार्यमें शीघ्रता

करने वाले, शीघ्र प्रभावमें आने वाले होते हैं, निश्चय भी उनका दृढ़ नहीं रहता। स्थिर राशि वाले स्थिर विचार वाले, दृढ़ निश्चयी, एकाएक प्रभावमें न आने वाले, निरंतर परिश्रमी, कार्यकी अनवरतता तथा स्थिरतामें विश्वास रखने वाले होते हैं। द्विस्वभावमें दोनों गुणोंका मिश्रण मिलता है, उनका मार्ग ही निश्चय नहीं हो पाता। दो जातकोंके सम्बन्ध तभी अच्छे सिद्ध हो सकते हैं, जबकि समान गुण वाले तथा एक दूसरेकी त्रुटियों एवं अभावोंकी पूर्ति करने वालोंमें किया जावे। जैसे चर राशिका संबंध स्थिरसे, द्विस्वभावका द्विस्वभावसे, अथवा अग्नितत्वका वायुतत्व राशिसे, भूमिका जलतत्व राशिसे सम्बन्ध अच्छा मेल खाता है। परन्तु अग्नितत्वका जल तत्वसे मेल नहीं बैठता।

वर्ण, वश्यादि कुछ कूटोंमें राशियोंके आधार पर गुणमेलन किया जाता है। जिनमें मुख्य ये हैं—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) भकूट (४) ग्रहमैत्री

वर्ण

मानव जीवनके प्रधान तत्व आध्यात्मिकता तथा आत्मिकताका विचार इसी कूटसे होता है। ये चार प्रकारके होते हैं। कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशिका ब्राह्मणवर्ण। मेष, सिंह धनुः अग्नितत्वकी सैनिक राशियां होनेसे क्षत्रियवर्ण। वृष, कन्या मकर वैश्य वर्ण तथा मिथुन, तुल व कुम्भ शूद्रवर्ण। संचालक ब्राह्मणवर्ण हुआ तो रणात्मक कार्योंमें क्षत्रियसे, बुद्धि व्यापार कार्योंमें वैश्यसे तथा सेवा कार्यसे सफलताके लिये शूद्र, सभीसे योग्य साहाय्य पर जीवन सफल बना सकता है, परन्तु समानवर्ण वालोंसे अपेक्षाकृत श्रेणि अनुसार न्यूनाधिक्य सफलता मिलती है।

इसमें प्रधान विचार यह है कि वरसे कन्याका वर्ण प्रबल नहीं होना चाहिये। वैसे तो इस युगमें, जबकि स्त्री वर्गको पुरुषोंके समानाधिकार ही क्या विशेषाधिकारकी चर्चाका जोर है, स्त्री वर्गको यह ऊपरसे कुछ बुरा लगेगा, परन्तु हिन्दू-संस्कृति तथा आध्यात्मिक दृष्टि एवं सांसारिक रूपमें वधूके सौभाग्यकी दृष्टिसे वरका वर्ण ही उच्च या प्रबल होना आवश्यक माना गया है।

वश्य

वश्यका वर्गीकरण निम्न प्रकार का है—

चतुष्पद्—मेष, वृष, धनुका उत्तरार्ध और मकरका पूर्वार्ध

जलचर—कर्क, मीन, तथा मकरका उत्तरार्ध।

मनुष्य—मिथुन, कन्या, तुला, धनुका पूर्वार्ध तथा कुंभ।

कीट—वृश्चिक कीट राशि है तथा सिंह बनचर हैं।

इनका प्रयोग वर कन्याके परस्पर प्रभाव बतानेमें हैं। एक दूसरेके वशमें होने अथवा परस्पर शुभ संबंध रहनेके लिये इसका देखना आवश्यक है, अन्यथा शत्रुता रखने वाले वश्योंका एकत्र होना कष्टमय जीवनका परिचायक होता है।

मनुष्य राशिको जलचर तो भक्ष्य ही है। तथा सिंहके अतिरिक्त सब वशमें हैं। सिंह तथा चतुष्पद् की प्रबल शत्रुता है। अतः इनका संयोग अशुभ है। जलचर तथा कीट भी इसके योग्य नहीं है। सिंहसे सिंहिनीका संबंध ही योग्य होता है। कीट राशि वशमें तो अन्य चारोंके होती है परन्तु नाम व स्वभावके अनुसारसे ठीक नहीं मानी जाती है।

भकूट

भकूट या राशिकूट राशियोंकी परस्पर दूरी तथा दृष्टिभेदोंके आधारसे देखा जाता है। परस्पर द्विर्द्वादश राशियां हुई तो मनोमालिन्य व अशांति कारक है। षडष्टक रोग व मृत्युका कारण होता है। नवम पंचम धार्मिक विचारोंमें मतभेद रखता है। इनमें भी और सूक्ष्म विचार करना चाहिये। यदि द्विर्द्वादशमें वरसे कन्याकी द्वितीय हो व कन्यासे वर राशि द्वादश हो तो दंपति दीर्घायु पाते है नवम पंचममें वरसे कन्याकी राशि पंचम में हो तो उन्नति, सुख, आनंद व संततिकी वृद्धि होती है। षडष्टक स्वास्थ्यके लिये तो अशुभ होता है पर कन्याकी राशि छठे हो तो संतति सुखमें वृद्धि करती है। समसप्तक परस्पर प्रेम, स्वास्थ्य, ऐक्य

भारतीय व्यावहारिक समय का परिवर्तन आवश्यक

[ले०—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

भारतीय विद्वज्जनों एवं माननीय स्वतंत्र भारतके उच्चाधिकारियोंके समक्ष निवेदन करना उचित समझता हूं कि स्वतंत्र भारतमें जो आजकल इण्डियन स्टेण्डर्ड टाइम प्रचलित है—वह अंग्रेजी शासन-कालकी देन है। यह सन् १६०५ के पहिले भारतमें मदरास स्टेण्डर्ड टाइमसे प्रचलित था और सन् १६०६ में अंग्रेजोंने रेल तार संचालनकी सुविधासे भारतीय स्थानिककालको अनुपयुक्त मानते हुए भारतवर्षके पृथक्काल-परम्पराको अपने ऊपर बोझ मात्र समझा, अतः उन्होंने इङ्गलैंडके स्टैण्डर्ड टाइम को भारत पर लाद दिया। इससे उनके कार्यकी व्यावहारिक असुविधा दूर हो गई। उन्होंने ग्रीनविचके समयमें—जो उनके देशका प्रामाणिक समय है उसमें साढ़े पांच घंटे बढ़ाकर भारतका समय मान नियत कर दिया। ग्रीनविच ५१-२६ डिग्री उत्तरी अक्षांश पर स्थित है। जबकि भारतवर्षके किसी भी नगरकी स्थिति ३४ डिग्री अक्षांशसे अधिक नहीं है। ग्रीनविच के ठीक १२ बजे स्टेंडर्ड मैरीडियन टाइम साढ़े पांच घंटे ८२॥ डिग्री पूर्वमें ठहरता है। यदि भारतके मानचित्र पर दृष्टिपात किया जाय तो भारतवर्षके याम्योत्तर देशांतरवृत्त पर भारतवर्षका कोई भी प्रसिद्ध नगर नहीं आता। केवल बनारसके पश्चिममें मिरजापुरके समीपमें पड़ता है, जो स्वतंत्र भारतके लिये उपयुक्त नहीं है। वास्तवमें यह प्रश्न राष्ट्रभाषाके प्रश्नसे भी अधिक महत्त्वका है और विशुद्ध रूपसे राष्ट्रीय है। स्वतंत्र भारतके गत दो वर्षोंमें अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयोंमें अंग्रेजी शासनकालकी रूढ़िके अनुसार हमारा कार्य चल लिया। अब हमें अपनी स्वतंत्रताकी भावना जागृत करती हैं कि भारतीय व्यावहारिक समयका परिवर्तन होना आवश्यक है। भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में शुद्धि 'सिद्धान्त'के आधार पर होनी चाहिये। अब प्रश्न यह है कि स्वतंत्र भारतवर्षके उपयुक्त और तर्क संगत काल साधनका केन्द्र किस स्थानको बनावें? प्राचीन ग्रन्थों व अर्वाचीन सभी ज्योतिष सिद्धान्तोंमें एकमुखसे मध्यरेखाका केन्द्रस्थान उज्जैन को सर्वोच्च स्थान माना है। पूर्व आचार्योंने सूक्ष्मयन्त्रों द्वारा वेधका ज्ञान, एवं ग्रह साधनध्रुवांकादि मध्यरेखा अवंति से साधन किये हैं। और यही स्थान महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी भी रही है। इसलिये प्रथम श्रेणीका अधिकार उज्जैनको और द्वितीय श्रेणीका अधिकार देहलीको माना जाय। क्योंकि समयभेदके अनुसार स्वतंत्र भारतकी राजधानी सबसे प्रथम दिल्लीमें स्थापित हुई है। और हमारे नेताओंको भारतके एकीकरण व विदेशोंमें ख्याति इसी स्थानसे बढ़ी है। इसलिये भारतकी राजधानी दिल्लीके मध्यम १२ बजेके टाइमको (भारतीय स्टैंडर्ड टाईम) समस्त भारतवर्षमें चालू होना निर्विवाद सिद्ध होता है। भारतीय जनताको पूर्वापर रेखांशके निर्णयमें कुछ कठिनाई आरम्भमें अवश्य होगी, परन्तु वह भी विद्वानोंके सहयोगसे हल हो सकती है। जैसेकि सन् १६०६ के पहले भारतीय जनता मद्रास स्टेंडर्ड टाईमको लेकर काल समीकरण करती थी कि नहीं? इसी प्रकार दिल्लीके स्टैंडर्ड मानसे भी हो सकेगा। भारतीय ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंसे नम्र निवेदन करना उचित समझता हूं कि जनतन्त्रीय स्वतंत्र भारत की राजधानी दिल्लीको अपना गणनाकेन्द्र मानकर काल-गणनाका श्रीगणेश करना चाहिये। इसके बिना वास्तविक स्वतन्त्रताकी भावना सिद्ध न होगी। और न भारतीय ज्योतिर्विदू,

---

व सुख बताता है। इसके अतिरिक्त ३-११, ४-१० ये कूट भी शुभ माने गये हैं। राशि कूटमें सर्व प्रधान विचारणीय बात यह है कि कन्या राशिसे वर तक तथा वर राशिसे कन्या तक गिननेमें प्रथम गणना अधिक व दूसरी कम हो तो कूट शुभ माना जाता है। अशुभ भकूट हो और ग्रहमैत्री हो तो दोष नहीं गिना जाता। (क्रमशः)

अन्य विदेशी ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंके समक्ष अपनी गणना पद्धतिका परिचय ही दे सकेंगे।

नई दिल्लीमें महाराजा जयसिंहकी बनाई हुई एक प्राचीन वेधशाला भी जन्तर-मन्तर नामसे विद्यमान है। इसका जीर्णोद्धार गतवर्ष जयपुरके राजज्योतिषी श्रद्धेय श्री पं० केदारनाथजी महाराजके तत्वावधानमें जयपुर राज्यकी ओरसे प्रारम्भ भी हुआ था। किन्तु, अभी वह पूर्ण नहीं हो पाया है। हम केन्द्रीय सरकारसे सानुरोध निवेदन करेंगे कि वह भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके प्रतीक इस वेधशालाके जीर्णोद्धार कार्यको अपने हाथमें लेकर शीघ्रातिशीघ्र इसे पूर्ण करवाकर राजधानीका गौरव बढावें। हम तो यह भी चाहते हैं कि राजधानीमें ही एक ज्योतिष विश्व-विद्यालय और अनुसन्धान-संस्था भी सरकार एवं श्रीमन्त लोगोंकी सहायतासे स्थापित हो, उसमें उच्च शिक्षणकी व्यवस्था हो और उस संस्थाके द्वारा प्रामाणिक व्यक्ति ही ज्योतिषका व्यवसाय कर सकें। ताकि अनधिकारी निरक्षरभट्टाचार्योंको इस शास्त्रको कलङ्कित करनेका अवसर न मिल सके।

★



असमञ्जस



कहो कहो री मौन साधने किस किस को अपनाऊं मैं।
मादक सौरभ सना चतुर्दिक्
धीर समीर सरसता है
अहो तितलियोंके चुम्बनसे
प्रमद पराग बरसता है
उजड़ी-सी बगिया जो कल थी
बनी आज उद्यान वही।
मादकता की सुषमा की है
मदकल आज बहार यहीं।
खिली अधखिली कलियों में से
किन का हार बनाऊं मैं।
कहो कहो री०

[२]

कुछ मुसकातीं, कुछ इठलातीं
मृदुल समीर झकोरों से
उर अन्तर अरमान लिए कुछ
जकड़े बैठी डोरों से।
कुछ हैं जिन पर मद के लोभी
भंवरे रहते मंडराते
कुछ हैं यौवन मद से जिनके
मुखड़े रहते मदमाते
खारे जल से अरमानों के
किस का उर नहलाऊं मैं।
कहो कहो री०

[३]

मूक भावनाएं उठ उठ कर
फिर विलीन हैं हो जाती।
थकी हुई सी, छकी हुई सी
उर मन्दिर में सो जाती
जगने पर फिर वही निकलता
असमञ्जस के हलकोरे
'रसिक' तुम्हारा नाम किन्तु तुम
फिर भी कोरे के कोरे
ऐसे भोले पंथी को फिर
किस विध हा! बहलाऊं मैं
कहो कहो री०

[४]

अम्बर में स्वर्णिल साड़ी फैलाए ऊषा जब आई।
खगकुल ने हो मुदित रागनी
स्वागत में मानो गाई।
मृदुल रश्मियों ने दिनकर की
कमल वनों को विगसाया।
चक्रवाक ने मिल चकवी से
फिर अपना हर्ष जताया
चिर सञ्चित इन उद्गारों की
गाथा किसे सुनाऊं मैं
कहो कहो री मौन साधने किस किस को अपनाऊं मैं।

"रसिक"

सेक्यूलर (धर्मनिरपेक्ष) राज्य

[लेखकः—श्री नरेन्द्रकुमार एम० ए०, बी० टी०]

शब्दकोषके अनुसार अंग्रेजी शब्द 'Secular' का अर्थ होता है-- Disassociated with religious principles, not bound not by monastic views Pertaining to this present world or to things spiritual.

"धार्मिक सिद्धान्तोंसे असम्बन्धित, धार्मिक सम्प्रदायों के विचारोंसे न बंधा हुआ, इस लोकसे या इसकी वस्तुओं से सम्बन्धित, न कि आध्यात्मिक वस्तुओंसे।"

विभाजित भारतके सूत्रधारोंने देशके साम्प्रदायिक कटु वातावरणको सुधारने, संसारपर अपनी उदार मनोवृत्ति, बुद्धिमत्ता और साधुताकी मोहर लगाने,भारतीय सभ्यता और संस्कृति जिसकी मूलभित्ति ही अध्यात्मवाद पर स्थित है—उसके प्रतिकूल सेक्युलर राष्ट्रकी घोषणा की।

संसारमें केवल साम्यवादी रूस ही एक ऐसा राष्ट्र है जहां धर्म या ईश्वर जैसी किसी वस्तुका कोई स्थान नहीं। क्योंकि वहांका तानाशाह ही जनताका भगवान् होता है। किंतु, अमेरिका और इग्लेंड जैसे अग्रगण्य प्रजा सत्ताके राष्ट्रोंमें भी इस सेक्युलरवादको कोई स्थान नहीं है। महान् आश्चर्य तो इस बातका है कि जिस भारत देशमें सभ्यता और संस्कृतिने सबसे पहले अपनी पलकें खोलीं, जहांसे मानवता अध्यात्मताका स्रोत समस्त संसारमें बहा, जिस देशने अनेक विडम्बनाएं सहन कर, अनेक झंझावातों का सामना कर दासताके दुःखी और दरिद्री युगमें भी अपनी धार्मिक भावना और ईश्वरप्रेमकी पवित्र ज्योति को बुझने न दी, जिस धर्म प्रधान देशका प्रत्येक नागरिक हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई सभी धर्मपरायण हैं, क्या उसी भूभागके भावुक कर्णधारोंने मुट्ठीभर लोगोंकी खुशामदार्थ सेक्युलर राज्यकी घोषणा कर देश, जनता और अतीतके गौरवमय इतिहासकी उपेक्षा नहीं की है?

स्वतंत्रता संग्रामके युगमें निःसंदेह कांग्रेस भारतीय जनताकी एक मात्र प्रतिनिधि संस्था थी, जिसके आदर्श, नेतृत्व, साहस और बलिदानके फलस्वरूप भारतको स्वतंत्रता मिली, किन्तु हमारे वर्तमान सूत्रधारोंको यह नहीं भूलना चाहिए कि इस सफलताका श्रेय उन असंख्य किसान मजदूर और मध्यमवर्गके नरनारियोंको ही हैं जिन्होंने अभूतपूर्व बलिदान कर स्वतन्त्रताके पौदेको अपने रक्त से सदैव सींचा था। जनताने अनेक यातनाएं सहनकर कांग्रेस को सहयोग दिया था। भारतकी दासताको दूर करने, विदेशी सत्ता का नाश करने, गरीबी और शोषण को समाप्त कर समानता और सुराज्य स्थापित करने, न कि देश को विभाजित कर उसे अधार्मिक घोषित करने के लिए उन्होंने उक्त बलिदान किये थे।

धर्म--प्रधान पवित्र भारतभूमिमें सेक्यूलर राष्ट्र घोषित करना, जनता से विश्वासघात करना है, भारतीय परंपरा को ठुकराना है, भारत की आत्मा पर कुठाराघात करना है। केवल भारत ही नहीं संसारका कोई भी राष्ट्र तब तक सुखी नहीं हो सकता, संसारमें तब तक अशान्ति कायम रहेगी! जब तक कि संसारके सभी राष्ट्रोंका शासन अध्यात्म पर निर्भर न हो। विश्व की समस्त समस्याओं का एकमात्र हल अध्यात्मवाद ही है। भारतवर्ष जिसकी एकमात्र पूंजी ही धर्म परायणता है, उसे 'सेक्यूलर' घोषित करना केवल भारतवासियोंके लिये ही नहीं, सम्पूर्ण मानव समाजके लिए घातक और अहितकर है।

मुख्य वस्तु तो यह है कि संसारका कोई भी राष्ट्र,धर्म-संकुचित नहीं। न कोई मत स्वार्थता, अन्याय, अहिंसा, मानव-शोषण या संकीर्ण मनोवृत्तिका प्रचार करता है। कुछ लोगोंकी यह धारणा है कि धर्म मनुष्यमें बदलेकी भावना और संकुचितता उत्पन्न करता है, आपसमें कटुता और विरोधकी भावना बढ़ाता है, मानवको अत्याचारी

और अन्ध भक्त बनाता है, और मानव-प्रगति रोकता है, ये बिलकुल ही गलत और भ्रमात्मक है। इतिहास यह अवश्य बतलाता है कि संसारके सभी प्रमुख राष्ट्रोंमें किसी न किसी युगमें धर्मके नाम पर रक्तकी नदियां बही हैं, रक्तसे होली खेली गई है, धर्मकी आड़में नाना प्रकारके अत्याचार हुए हैं और कई वीरोंको फांसीके फूलेका आलिंगन करना पड़ा है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि 'इस्लाम खतरेमें है' इस नारेको बुलन्द करके ही पवित्र भारतके अप्राकृतिक टुकड़े किये गए। किंतु इन दुष्परिणामों का कारण धर्म प्रेम नहीं धार्मिक अज्ञान ही है। धर्मके नाम पर स्वार्थी संकुचित मनोवृत्तिके कूटनीतिज्ञ पुरुषोंने अपनी राजनैनिक अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिए धर्मके नाम भोली भावुक जनताको बहकाकर नाना प्रकारके अमानुषिक अत्याचार करवाये हैं। इसकी पुनरावृत्ति न हो इस लिये सच्चे धार्मिक तत्वोंके विस्तृत प्रसारकी आवश्यकता है, न कि 'सेक्युलर' राष्ट्रोंकी।

संसारके सभी धर्मोंके सिद्धान्तोंका विश्लेषण करनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी धर्म मानव-कर्तव्य और मानव-प्रेमके आदर्शोंसे ही ओतप्रोत हैं। सनातन आर्य धर्मका अर्थ है नागरिकता, उन्नति, कल्याण और कर्तव्य। इस्लामका अर्थ है ईमान। जैनधर्म-त्याग। बुद्धधर्म-अहिंसा ईसाईधर्म—भाईचारा, पारसीधर्म—ज्योति और सिक्ख धर्म—वीरताके प्रतीक हैं। सबका हेतु मानवताका प्रचार और मानवकर्तव्यका ज्ञान प्रदान करना है। धर्मके ज्ञान से ही मानव अपने कर्तव्योंको जान, आदर्श जीवन व्यतीत कर, संसारमें सुख और शांति स्थापित करनेमें सहयोग प्रदान कर सकता है।

सनातन वैदिक धर्मका ध्येय ही विश्व बन्धुत्व और विश्व शांति, स्थापित करना है। वेद मन्त्र विश्व प्रेम, समृष्टि भावना, भद्र भावना, आशावाद, निर्भयता श्रद्धा और सौमनस्यके महान् आदर्शोंसे ओतप्रोत हैं। वेदमें—

'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (यजु० ३६।१८)
'पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः' (ऋ०६।७५।१४)
'यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधिः'
(अथर्व १७।१।७)

"मैं सबको मित्रकी दृष्टिसे देखूं, और सब मुझे मित्र की दृष्टिसे देखें, मनुष्य परस्पर एक दूसरेकी रक्षाका पूरा ध्यान रक्खें, जिन्हें देखता हूं और नहीं देखता उन सबके प्रति मेरी सद्भावना रहे"—जैसे विश्वबन्धुत्व और—

'शंनः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ऋ० ७।३५।८

"हम सबके लिये सूर्यका उदय कल्याणकारी हो और संपूर्ण दिशायें हमारे लिए मङ्गलमय हों" जैसे विश्वशांतिके भाव भरे पड़े हैं। वेद उपदेशका सार ही है।

'ईशावास्यमिदं सर्वं'

यह सारा विश्व एक परमपिता परमात्माके भीतर समाया हुआ है।

'एकं सत विप्राः बहुधा वदन्ति, एकं वा वि बभूव सर्वम्'

जैसे वेद वचनोंसे ज्ञात होता है कि वास्तवमें एक परमात्माके अतिरिक्त स्वतन्त्र सत्तायुक्त कोई वस्तु है ही नहीं, इस कारण मानवोंको यही उचित है कि विभिन्नता मय एकतामें ही (Diversified Unity) अखंड साम्राज्य विराजमान होनेसे सर्वत्र साम्यभावके अविषम ढंगसे मानवोंका व्यवहार चलता रहे। वास्तवमें वेदका यही सर्वोपरि श्रेष्ठ आदेश है जो कि किसी भी अन्य धर्म व सम्प्रदाय या ग्रन्थमें देखनेको नहीं मिलता और यही वैदिक आध्यात्मिक साम्यवाद (Spiritusl and Divine Communism) है, जिसके सार्वत्रिक प्रचार होनेसे ही पीड़ित, व्यथित, व्याकुल, अशान्त संसार में अखण्ड शांति और सुखका साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

वर्तमान युग विकास और विज्ञानका युग है। यह सच है कि वैज्ञानिक उन्नतिके फलस्वरूप मनुष्यने वायु, जल और प्रकृतिको अपना दास बना लिया है, अनेक सुन्दर और आश्चर्यजनक वस्तुओंकी खोजने संसारका बाह्य रूप ही बदल दिया है, किन्तु इतनी रोमांचक प्रगतिके पश्चात् भी संसारमें सच्चे प्रकाशका अभाव कायम ही है। आज भी धनकुबेर अमेरिका साम्राज्यवादी ब्रिटेन और साम्यवादी रशिया शांतिकी खोजमें थपेड़े खा रहे हैं, न मानव शोषण का अन्त हुआ, न रंग-भेद नीति व असमानता का।

❀ त्रैमासिक राशिफल ❀

[लेखकः—श्री नन्दकिशोर 'गर्ग']

मेष

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे आपके ये तीन मास साधारण रहेंगे। दिसम्बरके प्रथम सप्ताहमें कुछ पित्त एवं वायु संबंधी पीड़ा हो सकती है। नवम्बर आरंभसे २६ दिसम्बर तक गुरुकी मास दशा आर्थिक दृष्टिसे सुखी रखेगी, परन्तु पश्चात् राहुकी दशा अत्यंत व्यय कारक है। इन तीन मासोंमें स्त्री एवं संतान पक्षसे चिंता होगी, विशेषकर दिसम्बर मासमें। जहां तक सम्भव हो यात्राओं को टालना चाहिये। राज्यपक्ष निर्बल है,। अतः स्थाई-संपति सबंधी मामलोंमें जोखमका काम करना हानिकारक रहेगा। व्यापारी वर्गके लिये तीनों मास लाभकारक हैं। नौकरी पेशा व्यक्तियोंको प्रथम दो मास चिंता व अशान्ति कारक हैं। स्त्रीवर्ग गुप्त रोगों व पेट दर्दकी पीड़ा का अनुभव करेगा। अग्नि व धातु व्यवसाई लोग इस समयमें अच्छा लाभ लेंगे। शत्रुका नाश सर्वाधिक सुख प्रद है।

संसार एक भयङ्कर विनाशकारी क्रांतिकी ओर अग्रसर हो रहा है।

अशांति, दुःख, दरिद्रता, असमानता, संकीर्णता और हिंसक भावनाओंको दूर कर संसारमें सुख, शांति और विश्वबन्धुत्वकी भावना स्थापित करनेका कार्य केवल धर्म के प्रचारसे ही संभव है। मानवको उन्नत बनाने वाली वस्तु संसारमें केवल धर्म ही है। मानवसे धर्म कभी पृथक् नहीं किया जा सकता। धर्म राज्यकी स्थापनासे ही मनुष्य में शांति, राष्ट्रमें शांति और संसारमें शांति संभव है। गलती करना मनुष्य स्वभाव है, और गलतीको समझ उसे सुधारना बुद्धिमानी है। क्या भारतके वर्तमान कर्णधार इस पर पुनः विचार करेंगे? अनादिकालसे भारत विश्वका आध्यात्मिक तथा धार्मिक गुरु रहा है, धर्मराज्यकी घोषणा में ही भारत एवं विश्वका कल्याण है।

वृषभ

ये तीन मास स्वास्थ्य की दृष्टिसे मध्यम है। विशेषतः १० दिसम्बरसे २ जनवरी ५१ तकका समय घात-पात अथवा रोगोपद्रव की ओर संकेत करता है। आर्थिक पक्ष बलवान रहेगा, स्थाई संपति एवं राज्यपक्ष से भी लाभ होने की संभावना है। कौटुम्बिक दृष्टिसे साधारण हैं। वादविवाद एवं वैमनस्यके योग बनेंगे अतः स्वयंको शांति रखना ही लाभप्रद रहेगा। व्यापारीवर्ग विशेषकर के मिलमालिक तथा अन्य कारखानेदार या लोह व्यवसाई लोग अच्छा लाभ लेंगे। वृषभ राशिके विद्यार्थियोंके लिये समय कुछ चिंताजनक रहेगा।। मानसिक अशांति अभीगत षड्ग्रहीके परिणामसे इन तीन मास तक रहेगी। गर्भवती स्त्रियोंको पीड़ा होगी तथा अनेकोंको प्रसवकाल में विशेष कष्ट होगा। नौकर पेशा एवं मजदूर वर्ग सुखी रहेगा। विद्या जीवीवर्ग असंतोषका अनुभव करेगा।

मिथुन

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे इस राशि वालेको यह समय शुभ रहेगा। कौटुम्बिक सुख साधारण, माता तथा पुत्रादि कोंसे आरम्भमें कुछ चिंता रहेगी धीरे धीरे सब दूर होगी। स्त्री सुख उत्तम रहेगा। व्यापार व्यवसाय एवं आर्थिक दृष्टिसे भी समय अच्छा है, उत्तरोतर उन्नति योग ही बनते जा रहें हैं। नौकरी पेशा एवं मजदूरवर्ग को स्थान भ्रष्ट होने की सम्भावना दिखाई देगी, अतः पूर्ण सावधानी अपेक्षित है। स्त्री वर्गको पतिसे मनोमालिन्य का योग न आने देना चाहिये, वरना दिसम्बर मास अशांतिकर बन जावेगा। इस राशिवालोंको प्रेमीके बिछुड़ने का संयोग उपस्थित होगा। राज्यपक्ष बलवान् नहीं कहा जा सकता। पातीदारसे झगड़ा होगा। यात्रामें कष्ट उठाना पड़ेगा। किसीको ऋण उधार देना हो तो

देखकर देवें वरना द्वेष उत्पन्न होगा। सट्टेका व्यवसाय भी हानिकारक है।

कर्क

शनि की साढ़े सातीसे तो अब छुटकारा पा चुके हैं, अतःस्वास्थ्य अब ठीक होगा। आगामी उन्नतिके लिये प्रयत्न आरम्भ हो जावेंगे। षड्ग्रही तृतीय स्थान में होनेसे यद्यपि बन्धु से चिंता हुई हो, परन्तु योग पराक्रम वृद्धि के हैं। यात्रा के योग विशेष रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से तो समय शुभ रहेगा, परन्तु यात्रामें अस्वस्थ होना या अधिक व्यय होना भी सम्भव है। जहां तक संभव हो नवम्बर प्रथम पक्षमें यात्रा न करें। दिसम्बर मासमें सन्तान की उन्नति हो, परन्तु आपको मानसिक अशान्ति के योग बढ़ेंगे। व्यापारी एवं विद्याजीवी वर्ग सुख संतोष का अनुभव करेगा श्रमजीवी नवीन कार्यारंभ एवं आयमें वृद्धि पायेंगे। महिला वर्ग भी सुखी रहेगा, परन्तु जनवरी मास अशांतिकर रहेगा। नौकर पेशा व्यक्ति यद्यपि वेतन वृद्धि, सम्मान वृद्धि पा सकेंगे परन्तु अधिकारियोंके कोपसे बचनेकी सावधानी रखनी चाहिए।

सिंह

इस राशि वालोंको समय लाभ प्रद रहेगा। आरम्भ में ही मंगलकी दशा यद्यपि कौटुंबिक अशान्तिकी सूचक हैं, परन्तु आर्थिक उन्नतिकारक रही है। पद वृद्धि एवं सम्मान प्राप्ति भी हो तो कोई आश्चर्य नहीं। ऊष्ण वस्तु एवं अग्निसे सावधानी नवम्बर मासमें रखना चाहिए। दिसम्बर जनवरी मास अत्यन्त शुभकारक दिखाई दे रहे हैं। साढ़ेसातका यद्यपि ढैया तीसरा है परन्तु दूसरे कठोर-तक ढैयेकी कठिनाइयोंसे आपने जो छुटकारा पाया है उसके फलस्वरूप आर्थिक लाभ व शांति होगी। शत्रु पक्ष उठेगा परन्तु परास्त होगा। व्यापारी वर्गका व्यवसाय अच्छा चलेगा, श्रमजीवी कष्टका अनुभव करेंगे, अपनी मांगोंके लिये झगड़ना, पड़ेगा महिलाओंको भी समय श्रेष्ठ रहेगा, परन्तु स्वास्थ्यकी सावधानी रखना अभीष्ट है। विद्याजीवी वर्गको अपने प्रयत्नोंमें समय रहते संलग्न हो जाना चाहिए। नौकरीपेशा व्यक्ति भी आर्थिक उन्नति करेंगे। जनवरी मास उन्हें लाभ कारक सिद्ध होगा।

कन्या

कन्या राशि वालोंको ये तीन मास स्वास्थ्यकी दृष्टिसे कष्टकारक रहेंगें। लाभेशकी दशा यद्यपि धन प्राप्तिमें सहायक हो परन्तु स्वास्थ्य, शत्रु-उपद्रव एवं राजकीय अकृपासे असंतोष रहेगा। दिसम्बर मासका प्रथम पक्ष विशेष कष्ट कर रहेगा। शासकीय सेवा वाले को स्थानान्तर योग है, कृषि कर्म वालोंको भी हानि प्रद है अतः साव धानी रखें। आगेका समय बुध दशा होने व बुध शुक्रके शुभ गोचरसे शांति एवं उन्नतिकर रहेगा। विशेषकर जनवरी मास शुभ रहेगा। व्यापारी वर्गको भी पिछले समय से जोखमका काम नहीं करना चाहिये, सट्टा व्यव-सायी एवं विद्याजीवी वर्ग जनवरी मासमें अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। श्रमजीवी वर्गको अभी शुभ समयमें कुछ विलंब है। यद्यपि अशुभ भी नहीं हो सकेगा। महिलाओं को स्वास्थ्यका विशेष ध्यान रखना चाहिये, कौटुंबिक कष्टसे भी बचते रहना लाभ प्रद रहेगा।

तुला

आरम्भके कुछ दिन लगभग एक सप्ताह स्वास्थ्यको हानि-प्रद हैं। पश्चात् शनैः शनैः स्वस्थ हो जावेंगे। व्ययस्थान की षड्ग्रही विशेष व्यय, नेत्र पीड़ा व धन हानिकारक है पर पारलौकिक कल्याण साधनाके लिये शुभ अवसर है। प्रयत्न कीजिएगा तो सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टिसे समय लाभ दाई है। व्यापार, जीविकादि क्षेत्रमें संतोषजनक लाभ होंगे। केतु लाभ स्थानमें २३-१२-६० से जा रहा है। जो आर्थिक लाभ करेगा, किंतु पंचमकी ओर राहुका जाना सन्तानको कष्ट एवं मानसिक अशांति कारक रहेगा। १४-१-६१ से रा० मं० व गुरु तीनों पंचम में एकत्र हो जाते हैं, उस समय विशेष सावधानीकी आवश्यकता रहेगी। व्यापारी वर्गके लिये समय सामान्य है। श्रमजीवी वर्ग लाभमें रहेंगे। महिलाओंमें जो गर्भ-वती हैं या नवप्रसूता हैं उन्हें जनवरी मास कष्ट प्रद रहेगा। विद्या जीवी वर्ग यद्यपि अन्तिम जनवरीमें स्वास्थ्य कष्ट का अनुभव करेंगे उनके विद्याभ्यासादिके लिये शुभ

समय है। सरकारी कर्मचारीगण दिसम्बर पश्चात् कष्ट मुक्ति पा सकेंगे।

वृश्चिक

इस राशि वालों को प्रथम दो मास स्वास्थ्यकी दृष्टि से शुभ नहीं रहेंगे, नेत्र पीड़ा व कफ सम्बन्धी व्याधियां कष्ट देंगी। व्यापार जीविका क्षेत्रमें रुकावटें तथा राजकीय अप्रसन्नता रहेगी। कोर्टके कामोंमें विपरीत फैसले होंगे। जनवरी मास आर्थिक एवं राजकीय दृष्टि से शुभ हो जावेगा। दिसम्बरमें यात्राके भी अवसर आवेंगे परन्तु दिसम्बर अर्ध तक टालिये, अन्यथा चोरी होने, गिर पड़ने आदि का भय रहेगा। व्यापारी वर्गको अपना काम सावधानीसे करना चाहिये। श्रमजीवी लाभमें रहेंगे। विशेषकर राजकीय कर्मचारी सन्तप्त दिखाई देंगे। किसी को स्थानभ्रष्ट योग, किसी पर अधिकारियोंका कोप तथा सामान्य अवनतिके चिन्ह कष्ट प्रद रहेंगे। कौटुंबिक दृष्टि से भी आरम्भिक समय अशान्ति प्रद है। कृषि कर्म वाले लोग जनवरीमें कुछ अशान्त रहेंगे। महिलाओंको भी स्वास्थ्य तथा कौटुंबिक चिंता किसी न किसी मात्रामें सताती ही दिखाई दे रही है।

धनुः

इस राशि वालोंको नवम्बरमें मंगल लग्न पर होनेसे रक्तमें उष्णता, खाज, अग्निभय आदि कष्ट होते हुए भी समय उन्नतिकारक रहेगा। आर्थिक दृष्टि से तीनों ही मास शुभ दिखाई देते हैं। पिछला ऋणका बोझ कुछ हल्का होता दिखाई देगा। दिसम्बर मासमें राज्यसे भी कुछ लाभ होनेकी सम्भावना है। कौटुंबिक दृष्टिसे कुछ अशान्ति दिखाई देती है, क्योंकि किसीके अशुभ या मृत्युकी सूचना प्राप्त होगी। मित्र वर्गसे सहयोग मिलेगा। व्यापारीगणके व्यापार की वृद्धि होगी, यद्यपि कुछ रुकावटों के साथ। श्रमजीवी वर्ग आनन्दमें रहेगा, नई मजदूरी-वह भी ऊंचे दामोंकी मिलेगी व प्राप्ति अच्छी होगी। शासकीय सेवक भावी चिंताओंमें रहेंगे, परन्तु अन्त सफलता में ही रहेगा। शत्रु उपद्रव होंगे पर विजय निश्चित है। महिलाओंकी पैतृक घरसे आमदनी होगी। शुभ कार्योंमें सम्मिलित होनेके अवसर हैं, परन्तु खान पान व अग्नि से सावधानी रखना चाहिए। विद्यार्थी वर्गके लिये उन्नति का समय है, धार्मिक पुरुष कष्ट पावेंगे।

मकर

शनिकी लघुकल्याणीका उतरना व हालकी षड ग्रही भविष्यकी उन्नतिकी सूचना देती है। चिरकालकी अभिलाषाओंको पूरा करनेका समय आ रहा है। परन्तु स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना नवम्बर मास तक तो आवश्यक है। घातपातका भय है। नवम्बर मास काम काजकी दृष्टि से भी साधारण है। आगेके दो मास लाभकारी हैं। जनवरी द्वितीयपक्षमें यात्राके अवसर आवें तो सावधानी रखिये, ऐसा न हो कि विशेष लोभ धोखेमें डालकर दुगनी हानि कर देवे। कौटुम्बिक दृष्टिसे समय शुभ है परन्तु २३ दिसम्बर ६० से कुटुम्बस्थान पर मंगलका आना तथा १४ जनवरी ६१ से मंगलका आगे जाना फरवरी मास तक कुछ अशांति उत्पन्न करेगा। व्यापारी वर्गको समय सामान्य है। श्रमजीवी अवश्य उन्नति करेंगे। शासकीय सेवकोंको नवम्बर मासमें सावधानी रखनी चाहिए। महिलाओंको स्वास्थ्य सम्बन्धी पीड़ा हो सकती है। विद्याजीवी वर्ग भी सुखका अनुभव करेगा।

कुम्भ

इस राशि वालोंको ये मास अशांतिप्रद ही दिखाई दे रहे हैं। षड्ग्रहीका अष्टम स्थानमें होना घात-पातका डर। ऋण तथा शारीरिक कष्टका संकेत कर रही है। लग्नका गुरु यद्यपि कष्टका अनुभव न होने देगा फिर भी जनवरीके द्वितीयपक्षसे सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। कौटुम्बिक कष्टोंसे मुक्ति होना ही चाहिये है। स्त्री, संतान, शिक्षण आदिको दृष्टिसे सुखी रहेंगे। आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। ऋण उधार लेना व देना दोनों ही हानिकारक हैं। धार्मिक कार्योंमें मन लगाना चाहिए। इसके लिये दिसम्बरका द्वितीयार्ध तथा जनवरी का प्रथमार्ध यह समय लाभदाई है। विद्यार्थी एवं विद्याजीवी वर्ग विशेष आनन्दमें रहेंगे। व्यापारी वर्गको जनवरी मास अशुभ है, श्रमजीवी विशेष कष्टका अनुभव करेंगे।

महिलाओंमें अशांति रहेगी। शासकीय सेवक उन्नति वेतनवृद्धि व सम्मान प्राप्त करेंगे। इस राशि वालोंको जनवरी मासमें यात्रा नहीं करना चाहिए।

मीन

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे नवम्बर मास आधा कष्टप्रद है। पशु या वाहनसे भय तथा पित्त व्यथाके साथ स्थानान्तर विदेश गमनकी सूचना मिल रही है। आर्थिक दृष्टिसे समय क्रमशः उन्नतिकारक दिखाई दे रहा है, अग्नि-सम्बन्धी काम करने वाले, फौजके सिपाही व मिल वालोंको विशेष लाभ होगा। संतान सम्बन्धी शुभ रहेगा। स्त्रीकी ओरसे चिंता अभी पीछा नहीं छोड़ेगी। नवम्बर उत्तरार्ध व दिसम्बर यात्राकारक है। परन्तु उपरोक्त सावधानी अवश्य रखिये। राहु लग्नसे हट रहा है व व्ययमें आ रहा है जो व्ययकी मात्रा बढ़ावेगा। संभवतः संतानके विवाह सम्बन्ध तय होंगे, तथा इसी कारण व्यय दिखाई दे रहा है। व्यापारी वर्ग को समय सामान्य है। शासकीय सेवकोंने शत्रु से सावधानी रखी तो समय उन्नतिप्रद रहेगा। विद्यार्थीगणको सफलता प्राप्त होगी। महिलाओंको मानसिक अशांति आरम्भमें तो अवश्य रहेगी परन्तु संतान के कारण सुख रहेगा। पतिको अप्रसन्न करने वाले कामोंसे बचें। धार्मिक कार्यों के लिए शुभ समय है।

'श्रीस्वाध्याय' प्रश्न पत्रिका (कूपन)

१५ दिसम्बर १९५० तक उपयोगी

नवम्बर के ग्रहयोगों द्वारा तेजीमंदी

[ले०--श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]

[विद्वान् लेखकने इस लेखमें प्रति दिनके ग्रहयोगानुसार जूट, पाट, शेयर, इण्डियन आयरन, डिफर्ड शेयर्स, चांदी, गुड़, रंग, सोडा, मिर्च आदि की प्रति दिन की तेजीमन्दी लिखी है । आरम्भमें ग्रहयोग अशादि अन्तर में दिया गया है, जैसे ता० १ नवम्बर को सू० ० बु० अर्थात् सूर्य बुध की युति है। इसी प्रकार ६० अंश से केन्द्र योग, १८० से प्रतियोग आदि समझने चाहिएं। श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषी श्रीस्वाध्याय के पाठकोंके चिरपरिचित विद्वान् लेखक हैं, इस प्रकार का गवेषणापूर्ण लेख व्यापारियोंके लाभार्थ प्रत्येक अंकमें देनेका निश्चय किया है। अभी परीक्षणार्थ आरम्भमें एक मास नवम्बरका ही इस अंक में दिया जा रहा है। यदि व्यापारियोंने पसन्द किया तो उनकी सूचना आने पर आगामी अङ्कसे पूरे तीन मासका प्रकाशित किया जावेगा। ज्योतिषीजी ने सन् १६५१ की दैनिक ग्रहपंजिका (भारतीय एफेमरीज) हिन्दी अंग्रेजीमें निर्माण की है। वे दोनों शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं। मूल्य एक प्रति का १॥) होगा, किन्तु श्रीस्वाध्यायके ग्राहकों को १) में प्राप्त हो सकेगी।

—संपादक]

ग्रहयोग	ता०	घं०	मि०	ग्रहयोग का व्यापार पर प्रभाव — समय दिल्ली स्टेण्डर्ड टाइम
सू० ४० श०	१	८	३६	अलसी सरसों तिल-तेल बारदाना जूट खरीदो सप्ताह में लाभ।
चं० ६० नै०	१	१०	५७	चांदी, सोना, रूई, ११ बजे खरीदो दो बजे नफा लो मंदी में ४ बजे फिर खरीदो।
बु० ४० श०	१	१४	३६	टाटाडिफर्ड ड्राईंग स्टील शेयरों में तेजी का उछाला, घटे भाव खरीदो।
सू० ० बु०	१	२२	५	अरहर मसूर गुवार की खरीद आठ घंटे में नफा पेश करेगी।
चं० १२० रा०	२	६	२०	ऊनी कम्बल रेशमी कपड़े गुड़ बिनौला अरंडा की नरमाई खरीद की समझें।
बु० १२० ह०	२	७	४१	तोरिया, तारामीरा, गुवार, पाट, किराना खरीदो, ४ दिन में लाभ।
गु० ३० रा०	२	१०	६	चांदी सोना दो बजे बेचने का चांस होगा। ६ घंटे की मंदी।
सू० १२० ह०	२	१३	३७	गुवार, गुड़, सक्कर रंग सुर्ख, पारा, दालचीनी सोडा में तेजी।
बु० ८० प्लु०	२	१३	३६	विदेशी खबरों से बाजारों में तेजी का वातावरण रहेगा।
सू० बु० समक्रां०	३	०	०	इंडियन आयरन, कोयला बंगाल, टेक्सटाटिल, डिफर्ड में तेजी १ बजे से।
चं० ६० शु०	३	०	१८	चांदी सोना रूई में तेजी सुबह खरीदो श्याम को लाभ।
चं० ६० सू०	३	६	६	ऊन सूत कपड़ा गुवार गुड़ बारदाना ११ बजे खरीदो दो दिन में लाभ।
चं० ६० बु०	३	८	०	अरहर मूंग मसूर दाल के भावों में मदरास की खरीद से तेजी।
मं० ६० रा०	३	६	६	बादाम नारीयल लालमिर्च किराना की मारकीट में तेजी।
मं० ६० गु०	३	११	३८	अलसी अरंडा कालीमिर्च का संग्रह १५ दिन में लाभ देगा।
चं० ० प्लु०	४	०	३१	रंग तेजाब सोडा बारनिस के भावों में विचित्र तेजी रहेगी।
शु० गु० समक्रां०	४	२	०	चांदी, सोने में ॥=) ॥।) का मंदी का झटका, बेचो २ बजे।
शु० ४० श०	४	३	३६	गुवार में मंदी, दो बजे चढे हुए भावों में बेचो, ६ बजे लाभ।

ग्रहयोग	ता०	घं०	मि०	व्यापार पर प्रभाव
बु० १३५ रा०	४	८	२४	पाट ऊनी बने हुवे सूटर वगैरा, फल सवजी में तेजी रहेगी।
मं० ६० श०	४	६	६	चने को दाल मूंग की दाल किराना गुड़ लालमिर्च तेज।
चं० सू० समक्रां०	४	१२	५४	चांदी की चाल में टेलीफोन वाले घंटे-घंटे के कोल से कमा लें।
चं० १८० गु०	४	१५	२७	आयरन ड्राइंग डिफर्ड मोटर शेयर्स के भावों में नरमाई।
चं० १२० मं०	४	१७	५	कालीमिर्च अरंडा सरकी तिल-तेल घृत के भावों में तेजी।
शु० १२० ह०	४	२०	४६	चांदी, देसी शक्कर, गुवार के भावों की मंदी खरीद का मौका देगी।
बु० ४५ श०	४	२१	१०	बराबर सुगन्धी वस्तु, विदेशी पाऊडर्स के थोक माल में तेजी।
बु० ४५ मं०	५	५	२६	मिठाई रसादिक की बनी हुई वस्तुओं के भावों में तेजी।
शु० ८० प्लु०	५	६	२४	चांदी घटे भाव खरीदो, २। दिन में अच्छा मुनाफा हो जायगा।
चं० ६० सू०	५	१८	५	मसाले, फल, किराना के भावों में तेजी, खरीदो ४ दिन में लाभ।
सू० १३५ रा०	५	१८	३६	चावल, तारामीरा, तमाखु के भाव में तेजी खरीदो १॥ बजे।
मं० ७२ नै०	६	१३	२६	ठीक १।२६ मिनट पर चांदी, रूई, सोना खरीदो २४ घंटे में लाभ।
चं० १८० रा०	६	२०	०	गुड़, गुवार, की खरीद घंटे घंटे में नफा पेश करेंगी।
सू० ४५ श०	६	२१	५५	डिफर्ड, आयरन, कोयला, बंगाल स्टील, शेयरों में तेजी।
चं० ० श०	६	२२	६	सन सूतली, टाट की बनी हुई वस्तु १० दिन में अच्छा नफा देगी।
चं० ६० मं०	७	१	०	चांदी गुवार की मंदी २ बजे बेचो ६ बजे लाभ उठावो।
बु० १३५ रा०	७	६	६	तेल, सरसों, तिल्ली, मूंगफली, असली महुवा के टीन डामों में ३) की तेजी।
चं० ६० ह०	७	१५	५१	चांदी, गुवार, सोना में ठीक ३।५१ स्टैं० टा० पर तेजी होगी।
बु० ३० नै०	७	१८	१०	डिफर्ड ड्राइंग, आयरन, कोयला के शेयरों में खासा तेजी।
चं० ० नै०	८	६	४४	चांदी, सोना, बारदाना जूट के भावों में घंटे घंटे में तेजी मंदी।
शु० ४५ श०	८	११	४२	ठीक ११।४२ स्टैं० टा० पर चांदी खरीदो श्याम को नफा लो।
बु० ६० प्लु०	८	२०	८	जूट, ऊनी कम्बल, रेशम, किराना के भावों में तेजी।
चं० १२० गु०	८	२२	२३	कालीमिर्च, गुड़, घृत, फल, मेवे, सफेद वस्तु मोती खरीदो।
चं० सू० समक्रां०	६	११	५३	अमावस्या में समक्रांति योग से सर्व वस्तुओं में तेजी।
चं० १२० ह०	६	१६	१८	दीपावली के शुभ अवसर पर समय ४।१८ पर चांदी व चांदी के वर्तन घर में संग्रह करना शुभ होगा।
चं० ० शु०	१०	२	५२	प्राईवेट में ठीक २।५२ मिनट पर प्रत्येक वस्तु संग्रह करने से लाभ।
चं० ० सू०	१०	४	३४	इस योग में जूट, बारदाना, कागज, लोहे के समान तेज होंगे।
चं० ६० प्लु०	१०	६	१	विदेशी खबरों से न्यूयार्क कॉटन के भावों में विशेष तेजी।
चं० ० बु०	१०	१३	१६	कार्तिकी संवत्सरारम्भ के नये सौदे चालू १-१६ पर करो।
चं० १२० रा०	१०	२०	४०	चांदी गुवार, बारदाना स्टील शेयर्स में मंदी की सूचना है।
चं० ६० गु०	१०	२२	७	चांदी व अमरीकन काटन के भावों में मंदी लगाओ २४ घंटे की।
बु० ४० मं०	११	५	६	आयरन, डिफर्ड, स्टील लालमिर्च गर्म कपड़ों में तेजी।
सू० ३० नै०	११	६	४३	चांदी, अरंडा, गुवार की १५ दिन की मंदी लगाना शुभ होगी।
बु० १३५ ह०	११	१४	३६	ठीक २।३६ मिनट पर चांदी की मंदी खरीद का मौका देगी।
रा० ८० ह०	११	२२	६	कपूर, जूट की बनी हुई वस्तु तोवा तेजाब गंधक तेज होगी।

ग्रहयोग	ता०	घं०	मि०	व्यापार पर प्रभाव
बु० ३० नै०	११	२३	२०	तिल-तेल अरहर मूंग मसूर के भावों की मंदी की सूचना है।
मं० १३५ प्लु०	१२	६	४४	गुवार गुड़ चांदी अमरीकन कोटन के भावों में ६।८।१४ की तेजी।
चं० ६० रा०	१२	१६	५८	प्राईवेट में बराबर चांदी रुई सोने पर तेजी रहेगी।
चं० ६० श०	१२	२३	२७	तिल-तेल अलसी अरंडा स्टील शेयरों में नरमाई होगी।
सू० ६० प्लु०	१३	०	१७	राजनैतिक विदेशी वातावरणों से गिरे हुवे बाजार उठेंगे।
शु० ६० प्लु०	१३	५	५४	चांदी सोना, रुई देशी ११ बजे खरीदो ५।५४ पर लाभ।
सू० ४५ मं०	१३	८	२	टाटा डिफर्ड सिक्यूरीटियां स्टील कोयला शेयरों में तेजी रहेगी।
चं० ० मं०	१३	६	०	दाल लालमिर्च गुड़ घृतके भावोंमें तेजी खरीदो।
बु० १२० रा०	१३	११	६	कलकत्ता वीर भूमि वेस्टर्न बंगाल कापर शेयर्सों में तेजी।
शु० ४५ मं०	१३	१८	१३	देशी रुई चांदी अमरीकन काटन में तेजी ३।६।८ की चाल।
सू० ० शु०	१४	४	२६	विदेशी खबरों से चांदी ठीक ४।२६ पर तेती में रहेगी।
बु० ९० गु०	१४	६	३	जौ चना मसूर दाल हल्दी के भावों में मंदी।
बु० ४० नै०	१४	६	२४	तिल-तेल सरसों अलसी गिरी के तेलों से १)२) की मंदी।
चं० ९० नै०	१४	६	३७	चांदी देशी रुई सोना में तेजी खरीदो ११।३६ स्टैं० टा०
चं० ६० सू०	१४	११	३६	गुवार की दैनिक घटाबढ़ी में ११ से ३ तक तेज फिर मंदी।
बु० ६० श०	१५	०	१३	स्टील आयरन डिफर्ड ड्राईंग शेयरों में तेजी खरीदो १२ बजे।
चं० १२० श०	१५	१	३२	मूंग बाजरा जुवार गुड़ खरीदने का चान्स है।
मं० ८० रा०	१५	१५	६	ऊन कम्बल लालमिर्च तेजाब पारा गंधक खरीदो।
चं०सू० समक्रां०	१६	६	२७	स्टील शेयरों कलकत्ता शेयरों में तेजी का रुख रहेगा।
चं० १२० नै०	१६	१०	४०	चांदी सोना गुवार ११ बजे बेचो श्याम को नफा छोड़ो नहीं।
चं० १८० प्लु०	१६	१३	१८	चन्द्रप्लुटों का प्रतियोग सू० शु० बृश्चिक में जाने से चांदी में ७)८) की तेजी मंदी करते हैं दो तरफा लगावें।
शु० १३५ ह०	१६	१४	३२	चांदी टीक २।३२ पर खरीदो २४ घंटे में १।)२) तक तेजी जानें।
चं० ९० शु०	१६	२०	१५	गुवार बारदाना मिल स्टील कोयला शेयरों में ३)४) की तेजी।
चं० ९० शु०	१६	२१	३६	चांदी की चाल में घटे भाव खरीदने की राय है।
सू० १३५ ह०	१७	४	३०	बराबर आयरन स्टील शेयर्सों में ५)७) की घटबढ़।
गु० ० चं०	१७	५	५	चांदी व सफेद कपड़ा व सफेद वस्तु मंदी में जाने की सूचना हैं।
बु० ४५ नै०	१७	१३	१६	समय मिले तो गुवार मूंग उड़द मिर्च घृत खरीदो।
चं० ९० बु०	१७	१४	१५	कार्त्तिकी फसल की वस्तुओं के संग्रह व कोठा भरने का मुहूर्त है।
मं० ८० नै०	१७	१५	४६	धनीया मिर्चलाल, गुड़ बारदाना के भाव मंदे होंगे ८ दिन में।
चं० १२० ह०	१८	०	३६	तेल सरसों अलसी नारीयल के भावों में मंदी की सूचना।
मं० १८० ह०	१८	६	३६	तांबा पीतल जस्ता कपूर रंग लाल पारा गंधक तेज होंगीं।
शु० १२० रा०	१८	१६	६	चांदी ठीक ४।६ पर बेचो २४ घंटे में लाभ होगा।
चं० १२० सू०	१६	६	३३	घृत रुई देशी, गुवार मूंग गुड़ खरीदो ६।३३ से १२ तक।
चं० ० रा०	१६	१०	१३	गुड़ देशी शक्कर गर्म कपड़ा सुगन्धी विदेशी वस्तु तेज होगी।
चं० १२० शु०	१६	१२	२६	चांदी सोना पट रुई घटे भाव १२ से ५ तक लेना लाभ देगा।

ग्रहयोग	ता०	घं०	मि०	व्यापार पर प्रभाव
चं० १८० श०	१९	१६	३८	टाटा डीफर्ड आयरन कोयला कापर शेयरों में तेजी ३ दिन में।
सू० १२० रा०	१९	१६	३९	क्रीम पाउडर मशनरी मोटर टार्च के भावों में ८ दिन में तेजी।
बु० ४० नै०	२०	३	५४	चावल तारामीरा तोरीया खरीदो ११ से २ तक २॥ दिन में लाभ।
चं० १२० बु०	२०	८	५२	चांदी अमरीकन कोटन में मंदी ११ से ३ तक १)२) की।
शु० ३० गु०	२०	३	४८	गुवार अरहर मसूर दाल मूंग बाजरा उड़द जुवार खरीदो।
चं० ६० ह०	२०	१०	२३	चांदी १०।२३ से १२ तक खरीदो श्याम को ६ बजे तक लाभ।
चं० ३० मं०	२०	१३	४२	कालीमिर्च लाल मिर्च गुड़का संग्रह वा कोटा भरना उत्तम है।
सू० बु० समक्रां०	२०	१७	५५	सफेद वस्तु चांदो रुई घृत कपड़े में तेजो होती है।
बु० ८० गु०	२१	१	३४	मूंग मसूर तिल्ली तेल सुगंध पदार्थों में तेजी।
बु० १५० ह०	२१	३	३६	स्टील आयरन आर्डनरी शेयरों में तेजी।
चं० १८० नै०	२१	५	२१	ऊन कम्बल रेशमी वस्त्रों में मंदी कम बिक्री से।
शु० ६० श०	२१	८	५२	बाजरा, जुवार, मूंग, मोठ, उड़द, सरसों में मंदी।
सू० ४० नै०	२१	१५	५४	जूट, बारदाना, लाख, चांदी, चपड़ा, तांबा, पीतल, तेज होगा।
सू० ३० गु०	२२	०	४८	विदेशी समाचारों, शेयर मारकीट में तेजी रहेगी।
बु० १८० ह०	२२	२	३९	मिर्च, गुड़, देशी शक्कर, कोयला, लकड़ी तेजी की ओर।
चं० १२० मं०	२३	५	५२	लाख रङ्ग व उसकी वस्तुओं के भावों में तेजी।
सू० ६० श०	२३	६	५८	तिल, तेल, तिल्ली, सरसों अलसी मूंगफली में मंदी।
बु० ७२ श०	२३	७	३	हरे रङ्ग को वस्तु मूंग, घास भूसी तेज होवे।
चं० सू० समक्रां०	२३	१२	७	इस योग में चांदी व बालकों की खाद्य वस्तु तेज हो।
बु० चं० समक्रां०	२३	१२	१९	अलसी, तारामीरा अरहर, विनोला में मंदी हो।
चं० ३० प्लु०	२३	२०	१७	विदेशी मशीनरी मोटर, बिजली के सामान मन्दे होंगे।
शु० ४० मं०	२३	२१	०	चांदी सोना ठीक १२।७ पर खरीदो ६ बजे रात्री नफा उठावो।
सू० ३० मं०	२४	०	४०	अरंडा, गुवार, चांदी, अमरीकन काटन मे। १।२।६ क्रम से मंदी।
शु० ४५ नै०	२४	५	१३	डिफर्ड, आर्डनरी, स्टील शेयरों में १।१३ से मंदी।
चं० ३० गु०	२४	१५	८	मूंग, चना, अलसी व तिलहनों में मंदी।
चं० १२० श०	२४	१७	२७	जूट, बारदाना, चांदी, गुवार की मंदी खरीदना बताती है।
चं० १८० सू०	२४	२०	२३	तिल्ली, जुवार, बाजरा, मूंग संग्रह करो १॥ मास में लाभ।
मं० १३५ रा०	२५	०	३३	प्राईवेट में तिलहन का स्टाक निकालना शुभ है।
चं० १८० शु०	२५	२	२१	चांदी, सोना, रुई पर तेजी की सूचना दे रहा है।
मं० ४५ गु०	२५	३	०	हल्दी, लाल मिर्च, गुड़ का स्टाक करने से लाभ।
बु० १३५ गु०	२६	२	०	जौ, चना, मूंग पर तेजी आने वाली है, घटे भाव खरीदो।
चं० १२० नै०	२६	३	३२	चांदी, सोना ११।३२ पर खरीदो २४ घंटे में लाभ।
शु० १३५ गु०	२६	१७	४५	गुवार की खरीद १२ बजे बाद करो २॥ दिन में लाभ।
सू० ४५ नै०	२६	१७	५१	टाटा डिफर्ड आयरन कोयला के शेयरों में तेजी।
चं० ३० रा०	२६	२१	३	सुगंधी वस्तु, कागज, किराने, लोहे के सामान में तेजी।
चं० १२० गु०	२७	४	१६	गुड़, देशी शक्कर, खूब के भाव मंदे जायेंगे स्टाक कम करो।

ग्रहयोग	ता०	घं०	मि०	व्यापार पर प्रभाव
चं० ९० श०	२७	६	२५	चांदी सोना रुई में क्रम से ३) १) ८) की मंदी दो दिनमें होगी।
बु० ९० नै०	२७	१४	३९	जूट, तेजाब, गंधक, तेल, साबुन, सोडा में तेजी।
बु० १६० ह०	२७	१५	३९	आज चांदी; मूंग, तिल्ली गुड़ खरीदो ४ दिन में लाभ।
चं० ० ह०	२७	२२	५२	चांदी, सोना में एकतरफा १०) १५) की घट-बढ़ का प्रभाव आरम्भ।
श०रा०सक्रमां०	२८	०	०	आर्डनरी, डिफर्ड ड्राइंग आयरन शेयरों में विशेष तेजी।
शु० १५० ह०	२८	६	२२	चांदी की मंदी अच्छी कमाई की सूचना दे रही है, देखो दिसम्बर में।
बु० १२० प्लु०	२८	९	४०	गुड़, सक्कर, तारामीरा में ३) ४) फी मन की तेजी में।
चं० १८० मं०	२८	१५	७	चांदी ठीक ३।७ पर लो २४ घंटे में लाभ उठाओ।
चं० ९० नै०	२८	१८	५५	गुवार की मंदी खरीद का मौका दे रही है।
बु० १८० श०	२८	२२	९	ऊन कम्बल रेशम रंग लाख दालचीनी खरीदो।
शु० १८० गु०	२९	०	३९	चांदी सोना रुई के चान्स दिसम्बर में २०)२५) की तेजी मंदी।
चं० १२० रा०	२९	८	३२	चांदी ११ बजे खरीदो रात्रि के ९ बजे लाभ उठावो।
चं० १२० सू०	३०	७	३०	तिल बारदाना गुवार अलसी सरसों बेचो।
चं०सू० समक्रां०	३०	१०	३५	ठीक ११।३५ पर चांदी बेचो १० बजे रात्रि को लाभ।
मं० ह० समक्रां०	३०	११	४४	टाटा डिफर्ड आयरन के शेयरों में मंदी।
चं० १२० शु०	३०	१६	८	आखरी योग अगहन सुदी १५ तक चांदी में २०) की घटा-बढ़ी बता रहा है।

सूचना—आकाश में अंशात्मक होने वाले ग्रह योगों का समय राजधानी दिल्ली स्टैंडर्ड टाइम से दिया है। इस टाइम से विविध स्थानों का समय परिवर्तन करने के लिये मुख्य व्यापार स्थानों के मिनटांक नीचे दिये जाते हैं, उनको धन + ऋण — दिल्ली के टाईम में करने से इष्ट स्थान का स्टैंडर्ड समय होगा। जिस स्थान का समय बनाया जावेगा उसी समय पर जिस वस्तु की घट बढ़ लिखी गई है। वह उसी स्थान के घंटे मिनटों पर तेजी मंदी होने का वा व्यापार करने का समय समझें।

व्यापार स्थान के नाम— मि०

हापुड़	+	१	मेरठ	+	२	गाजीयाबाद	+	१
साहरनपुर	+	२	मथुरा	+	२	आगरा	+	३
कासगंज	+	३	चंदौसी	+	५	कोसी कलां	+	२
इन्दौर	—	६	जोधपुर	—	१६	हाथरस	+	४
मैनपुरी	+	४	फर्रुखाबाद	+	८	कानपुर	+	१३
प्रयाग	+	१८	पटना	+	३१	बनारस	+	२३
कलकत्ता	+	४६	बम्बई	—	१८	अमृतसर	—	३
गवालियर	+	४	जैपुर	—	५	इंग्लैण्ड	—	५।८
अहमदाबाद	—	१८	सूरत	—	१८	न्यूयार्क	—	३।४४
मदरास	+	१२	मुरादाबाद	+	६	अमरीका वाशिंगटन	—	१५।०
पूना	—	१३						



दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

राक्षसगणमें शुक्रास्तोदयका संसार पर प्रभाव

भारतीय गणराज्यके राष्ट्रपति और प्रधानमंत्रीका वर्षलग्न

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

गताङ्कके इसी स्तम्भमें हम षड्ग्रही योगका प्रभाव और विश्वयुद्ध तथा दैवी आपत्तियोंके मूल कारणों पर पर्याप्त रूपेण प्रकाश डाल चुके हैं। कोरिया युद्ध प्रारम्भ होते ही जनताने यह धारणा बना ली थी कि अब तीसरा विश्वयुद्ध हुआ ही चाहता है, परन्तु हमने ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर भयग्रस्त संसारको सूचित किया था कि अभी विश्वयुद्ध नहीं होगा। पहले (कन्याके मंगलमें) उत्तरी कोरियाका दक्षिणमें बढ़ना और अमेरिकाका भयंकर विनाश तथा आगे स्थितिमें परिवर्तन हो जानेकी सूचना दी थी, वह पाठकोंको हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष हो चुकी है। इसी प्रकार 'श्रीविश्वविजय-पंचाग'में भारतके पूर्वी तट पर जलप्लावन और आषाढ़से कार्तिक तक भूकम्प और प्राकृतिक उत्पात अधिक होने, नदियोंमें बाढ़ें आनेकी जो भविष्यवाणी गत वर्ष की गई थी वह भी प्रत्यक्ष घटित हो चुकी है। पंचग्रह षड्ग्रह योग का प्रत्यक्ष फल "प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा" के अनुसार गत भाद्रपद मासमें सर्वत्र अतिवृष्टि, पंजाब, अहमदाबाद आदिके भयानक जल-प्लावन (बाढ़) और आसामके प्रलयङ्कर भूकम्प एवं विनाशकारी बाढ़के रूपमें उपस्थित हुआ। रेल्वे दुर्घटनाएं और अग्निकांडोंमें भी इन्हीं दिनों जन-धनका भयानक विनाश हुआ है। इस प्रकारके भयानक विनाश एवं प्रकृति प्रकोपका मूल कारण जैसा कि हम गताङ्कमें भगवान् आत्रेयके वचनानुसार 'अधर्म' और मनुष्योंका प्रज्ञापराध (बुद्धिका बिगड़ जाना) बता चुके हैं—ठीक उसीका परिणाम हमारे सामने आ रहा है। चारों ओर अधर्म, अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचारकी वृद्धि हो रही है। फलतः समस्त राष्ट्रका वायुमण्डल, जल, प्रकृति और काल (समय) दूषित—विकृत हो चुका है। इनके विकृत होनेसे ही संसारमें भयानक उत्पात उत्पन्न होते हैं। काल वा समयको भला बुरा बनानेमें राजा (शासन) का विशेष हाथ होता है—"राजा-कालस्य कारणम्" यदि धार्मिक शासन होगा तो वहां की प्रजा भी धार्मिक होगी और राजा अधार्मिक होगा तो प्रजा भी अधार्मिक बन जायेगी।

राज्ञि धर्मणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः ।
लोकास्तदनु वर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा ॥

अध्यात्म-प्रधान धर्मप्राण भारत को 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' घोषित कर देनेमें हमें तो शासकोंका प्रज्ञापराध ही दिखाई दे रहा है। इस प्रज्ञापराधका फल हमें आगे भी भोगना पड़ेगा। आने वाली ग्रहस्थिति हमें यही बता रही है। 'इस वर्षका उत्तरार्ध भारतके लिए विशेष अनिष्टप्रद रहेगा।' यह हम गताङ्कमें और वर्तमान वर्षके अपने पंचाङ्गमें स्पष्ट बता चुके हैं। अब इन तीन मासोंमें जो विशेष शुभाशुभ योग बन रहे हैं, उनका दिग्दर्शन मात्र यहां ज्योतिर्विज्ञानके आधारसे किया जा रहा है।

राक्षसगणमें शुक्रास्तोदयका प्रभाव

आश्विन शुक्ल पक्षमें राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रास्त हो रहा है। यह आर्य देशोंमें विग्रह, संसारमें युद्धभय, अन्नका नाश, मारवाड़ और सिन्धमें दुर्भिक्ष, समुद्रमें

जहाजोंका नाश, विदेशो (अंग्रेज यवनादि) राष्ट्रोंमें विग्रह, विराट पांचाल, सौराष्ट्र और मालव देशमें कष्ट व जन नाश कारक है। इसी अवधिमें नवीन मुद्रा प्रचलन भी होगा। यथा—

शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दुदेशेषु विग्रहः।
खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्।
यानपात्र विनाशोऽब्धौ फिरङ्गाणाञ्च विग्रहः॥
विराट दुंढ पाञ्चाल सौराष्ट्रेषु च रौरवम्।
तथा राज्य परावर्तो मालवेषु जनक्षयः॥
जीर्णं दुर्गे भयं भङ्गः पत्तनेऽन्न महर्घता।
नव्य मुद्रा प्रकाशः स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः॥

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें राक्षसगणमें ही यह शुक्र उदय होगा। इसका परिणाम ६ मास तक राष्ट्रके लिए अनिष्टकर सिद्ध होगा। देशमें अशान्ति, विग्रह, पारस्परिक मतभेद और अनार्यता बहुत बढ़ेगी। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात होंगे। दुर्भिक्ष, अर्थसंकट और बेकारी से श्रमिक-वर्ग एवं बुद्धिजीवी तथा विद्यार्थी वर्गमें असंतोष बढ़ कर भयंकर काण्ड होंगे। सौराष्ट्र, मालव, सिन्ध, बंगाल, आसाम, नेपाल, बिहार, पंजाब, और मध्यदेशमें उत्पात विग्रह तथा राजा-प्रजामें संघर्ष होगा। किसी व्यापारिक केन्द्रमें ३ दिन तक अराजकता से व्यवसाय बन्द रहे और किसी श्रेष्ठ महापुरुषकी मृत्यु होना भी संभव है। यथा –

गुर्जरे मुद्गलभयं दुर्भिक्षं द्रव्य हीनता।
पञ्चवर्णं पट्टसूत्रं मूल्येनापि च दुर्लभम्॥
श्रीफलं दुर्लभं मृत्युः श्रेष्ठपुंसश्च कस्यचित्।
उत्पातादिषु देशेषु सिन्धुदेशेऽति विग्रहः।
दिनत्रयमवाणिज्यं विग्रहो मालवादिके॥
गुरुशुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गमासके।
देशान्तरं च गच्छन्ति तदा क्षुत्पीड़िता जनाः॥

दीपमालासे आगे अन्न, धान्य वस्त्रादिमें महर्घता और कई देशोंमें दुर्भिक्ष तथा उत्पातोंके समाचार सुनाई देंगे। सुवर्ण, चांदी, शेयर, जूट आदिका बाजार भी तेजीकी ओर रहेगा। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षमें तिथित्रय और धनुः संक्रांति का होना प्रजापीड़ा, दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग कारक है। यथा—

मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथित्रयः।
छत्रभङ्गं प्रजा पीड़ां दुर्भिक्षञ्च समादिशेत्॥
मार्गशीर्षे धनुषि हि यदा याति दिवाकरः।
तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं विपरीतात्सुखं भवेत्॥

इन तीन मासोंकी अपेक्षा पौषसे आगेका समय हमें संसार और भारतके लिए विशेष अनिष्टप्रद प्रतीत होता है, उसका विवेचन आगामी अंक और हमारे सं० २००८ के 'श्रीविश्व-विजय-पंचाङ्ग'में देखिये।

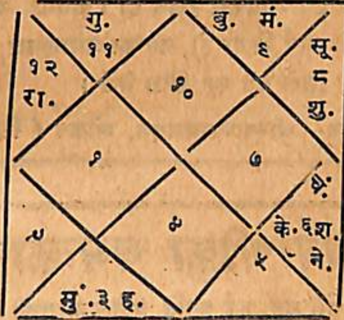
राष्ट्रपतिका ६७वां वर्ष

हमारे देशके महान् रत्न श्री राजेन्द्रप्रसादजीका स्थान सबसे निराला और निर्लिप्त नरोंमेंसे है। वे सच्चे अर्थोंमें देश-रत्न हैं। मालवीयजीके बाद यदि कोई पुरुष सभी पक्ष भेदोंसे ऊपर समान सम्मानका भाजन है, तो वे केवल राजेन्द्र ही हैं। वे अजात शत्रु, असाधारण मानव हैं। राजेन्द्र बाबूकी जिन्होंने जन्म-कुण्डली देखी है वे इस बातको स्वीकार करेंगे। गुरु, मंगल, शुक्रने ही उन्हें राष्ट्रपतिका महान् सम्मान प्रदान किया है। गतवर्ष इसी आश्विन मासमें 'श्रीस्वाध्याय'के शरदङ्कमें हमने ही श्री राजेन्द्रबाबूका ६६ वां वर्ष लग्न देकर इक्कबाल योगके आधार पर सर्वप्रथम राष्ट्रपति बनने की घोषणा की थी। वह पाठकोंको विदित ही है। अब ६७ वां वर्ष लग्न और उस पर कुछ संक्षिप्त विचार पाठकोंको भेंट कर रहे हैं। श्री राजेन्द्र बाबू और श्री नेहरू जी राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं और इस समय राष्ट्रका भविष्य उनसे सम्बन्धित है, अतः इनकी शुभाशुभ ग्रहस्थिति पर विचार करना ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंका प्रधान कर्त्तव्य है।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० भौमवार ता० ५ दिसम्बर १९५० ई० को इष्ट घट्यादि ६-५३ पर मकर लग्नमें भारतीय गणराज्यके प्रथम राष्ट्रपति महामान्य डा० श्री राजेन्द्रप्रसादजी को ६७ वां वर्ष प्रवेश हो रहा है। इस शुभावसर पर हम श्रीस्वाध्याय - परिवारकी ओरसे

आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए दीर्घायुकी मंगल कामना करते हैं।

वर्ष लग्नम्



लग्नेश शनि नवममें चन्द्रमा केतु और नेपच्यूनके साथ है, षष्ठेश बुध लग्नेशसे इत्थशाल कर रहा है, तथा चन्द्रमा पापाक्रान्त है, अतः यह ६७वां वर्ष राष्ट्रपतिके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यके लिए उत्तम नहीं कहा जा सकता। वर्षके उत्तरार्धमें श्वास, हृद्रोग, उदर विकार एवं वायु विकारसे पीड़ित होना पड़ेगा। राज्येश शुक्र निर्बल (अस्तङ्गत) और मुंथा छठे तथा मुंथेश भी व्ययमें होनेसे राष्ट्रकी विषम परिस्थितियां आपके मानस पर बुरा प्रभाव डालेंगी। चतुर्थ माससे आगे अपनेको अनेक उलझनों में घिरा पायेंगे। छठा मुंथा अकारण शत्रु उत्पन्न करती है। राष्ट्रमें वैमनस्य और दलबन्दियां उग्र रूप धारण करनेसे आपके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यको हानि पहुँचेगी। किसी प्रिय-जन का वियोग होनेकी भी सम्भावना है।

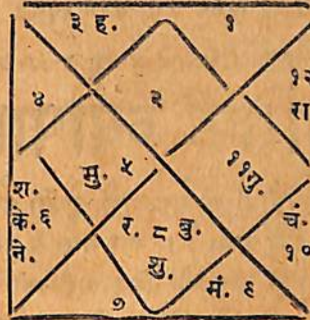
कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेत्सद्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतेऽनुपातः॥

वर्षके उत्तरार्धमें आपको स्वास्थ्य वा अन्य कारण वशात् कुछ विश्राम करना पड़ेगा। अरिष्टनिवृत्यर्थ वर्षारम्भमें ही मुंथा शनि बुध मंगल चन्द्रमाका पूजनार्चन और भगवान् मृत्युञ्जयका आराधन विशेष हितावह सिद्ध होगा। जन्म कुण्डलीमें बुध महादशामें सूर्यान्तर इसी मार्गशीर्षमासमें ता. २० नवम्बर ५० से प्रारम्भ होगा। १० मास ६ दिन का यह अन्तर है। सूर्य व्ययस्थ है अतः इसमें भी आपकी राष्ट्र सम्बन्धी चिन्ताएं बहुत बढ़ेंगी, परन्तु सूर्य भाग्येश होकर मित्र क्षेत्रमें बैठा है अतः आशा है कि आप अपनी नीति कुशलता एवं मित्रोंके सहयोगसे राष्ट्र की डगमगाती नौकाको पार लगानेमें यशस्वी होंगे।

श्री नेहरूजीका ६२वां वर्ष

कार्तिक शु० ७ गुरुवार ता० १६ नवम्बर १९५० को इष्ट घट्यादि २८।३७ पर वृषभ लग्नमें प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू को ६२वां वर्ष प्रवेश होगा। इस शुभावसर पर हम श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए राष्ट्र-कल्याणकी शुभ कामना करते हैं।

वर्ष लग्नम्



पराक्रमेश चन्द्रमा भाग्यमें और राज्येश शनि पंचम में है, इन दोनोंका त्रिकोणयोग जहां आपके पराक्रम एवं प्रभावको बढ़ाने वाले हैं, वहीं चतुर्थ मुंथा और लग्नेशका निर्बल (अस्त) होना तथा अष्टममें मंगल का जाना आपको अनेक विषम परिस्थितियोंमें उलझाकर शत्रुओंसे संघर्ष कराने वाले भी हैं। चतुर्थ माससे आगे एक दो बार तो ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जायेगी कि आप अपने विवेकका संतुलन व्यवस्थित न रख सकेंगे। लग्नेश षष्ठेश शुक्रकी सप्तम में सूर्यके साथ स्थिति सूचित करती है कि राजनैतिक मतभेद और सिद्धांतके प्रश्नको लेकर आपको बाह्य एवं आन्तरिक व्यापक विरोधका सामना करना

पड़ेगा । स्वजनोंसे भी मनोमालिन्य और लोकापवाद होने की सम्भावना चतुर्थ मुंथा सूचित कर रही है ।

"शरीरपीड़ा रिपुभीः स्ववर्गं वैरं मनस्ताप निरुद्यमत्वम् । स्यान्मुथहायां सुखभावगायां जनापवादामय वृद्धि दुःखम् ॥"

विशेष परिश्रम और राष्ट्रकी चिन्ताओंसे आपका स्वास्थ्य भी निर्बल रहेगा । ज्योतिष वेदका नेत्ररूप एक प्रत्यक्ष विज्ञान है । अतः समय आते ही उक्त विषम परिस्थितियोंका सामना अवश्य करना होगा । किसी एक प्रियजनका वियोग भी मंगलके कारण हो जाना सम्भव है। यदि वर्षारम्भमें ही मुंथा मंगल शनि केतुका पूजनार्चन और भगवान् शिव वा महाशक्ति जगदम्बाका विशेष रूप से विधिविधान पूर्वक आराधन कराया जावे तो हमें विश्वास है कि पण्डितजीके व्यक्तिगत लाभकी अपेक्षा राष्ट्रका भी बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। जन्म कालमें प्रबल राजयोग कारक मंगलकी महादशा अभी चल रही है, अतः हमें विश्वास है कि श्री नेहरूजी आई हुई सभी आपत्तियों पर विजय प्राप्त करते रहेंगे।

तीसरी बार　　　　महामहिम आचार्य　　　　छप गया

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रांतिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिये जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र होते हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रांति किंक्राति है, संक्रांति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शोंका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये। मूल्य ॥) मार्गव्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्गके स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिए। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा।

मूल्य २) रु० मार्ग व्यय ।=) अलग।

सूचना

श्रीपञ्चस्तवी श्रीपरशुरामस्तोत्र और श्रीसप्तपदीहृदय की अब कोई भी प्रति कार्यालयमें शेष नहीं है। अतः इन के लिए कोई ग्राहक अब मार्गव्यय (टिकट) न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री पण्डित दयानन्दजी जोशी समोसागली

(२) गोयल ब्रदर्स बुकसेलर, दरीबाकलां

(३) नारायणदास जयदयालमल बुकसेलर दरीबा०

बम्बई—भावीरुख कार्यालय राममन्दिरबिल्डिङ्ग कालबादेवी

कानपुर—बम्बई पुस्तक एजेन्सी चौकबाजार

जयपुर—भृगुज्योतिषकार्यालय, गोविन्दराजियोंका रास्ता

उज्जैन—श्री प० रामचन्द्रजी त्रिवेदी मारुतीगंज

भरतपुर—श्री डा० आर० सी० गुप्ता गंगामन्दिर

मुरार—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य

प्राप्तिस्थान—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

अमेरिकन बाजार भाव

[लेखक--श्री पं० विष्णुप्रसादजी उपाध्याय]

इस माससे 'श्रीस्वाध्याय' में अपनी नवीन खोज जन-कल्याण की भावनासे भेज रहा हूं। विगत सन् १९४४ से मैं अपने सहयोगी गणक बन्धुओंके साथ अमेरिकन फीचर्स संग्रहों पर अथक प्रयत्न करता रहा हूं। तथा अपने इस गहन अभ्यासके फलस्वरूप असंभवको भी संभव कर सकने जैसी कुछ पंक्तियां निश्चित की हैं। जिनके आधार पर उक्त बाजार भावोंका गणित किया जा सकता है। ऋषि प्रणीत अर्घशास्त्र, प्रकृति-शास्त्र, 'कीरो' का तथा भारतीय अंकशास्त्र एव बाजार भावोंके गंभीर अध्यवसाय ही इनका आधार भूत है। यदि इनसे व्यापारी वगका कुछ कल्याण हो सका तो मैं अपने व संबंधित गणकोंक प्रयत्नका धन्य समझूंगा। इनको सीधे प्रयुक्त करनेके स्थान पर पहिले अभ्यास किया जाना आवश्यक है। संभव है कि इनमेंसे कुछ गलत भी हों।

इन तीन मासोंके विशिष्ट चांस ही दिये गये हैं। जो महानुभाव स्पष्टतया स्पेशल चाहते हों वे सीधा पत्र व्यवहार करें। 'श्रीस्वाध्याय' जन सेवाके लक्ष्यको लेकर ही चल रहा है। इसमें योग देनेके हेतु यह विषय बढ़ाया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि 'श्रीस्वाध्याय के उद्देश्य में यह सहायक होगा। मैं धीरे धीरे यदि समय मिलता गया तो उन सिद्धांतोंको ही प्रकाशित करूंगा। अतः 'श्रीस्वाध्याय' के अभीसे ग्राहक बन जाइये, ताकि लाभ से वंचित न रहना पड़े।

त्रैमासिक भाग्यांकों का विशेष स्वरूप

ता० २० या २१ अक्तूबर को ५
ता० २५ या २६ ,, को ३।०
ता० २५ या २७ ,, को ७।२।६
ता० ३१-१०-५० या १-११-५० को २।७
ता० ८ या ९ नवम्बर को डबल या ५
ता० १३।१४ ,, को ११४
ता० १५।१६ ,, को ५
ता० २४ या २५ ,, को २।७
ता० २८ या २९ ,, को ७।२
ता० १२ से १४ दिसम्बर तक डबल अथवा ५
ता० १५।१६ ,, को ११४
ता० १८ या १९ ,, को ९
ता० २६ या २७ ,, को ५।६
ता० २८ से ३० ,, तक ९।५
ता० १० या ११ जनवरी को ९ आवें।

श्री सेठ सत्यनारायणजीकी धर्मपत्नीका गोलोकवास

हमारे परम स्नेही देहलीके सुप्रसिद्ध विद्यानुरागी रईस श्री० सेठ सत्यनारायणजी गोयनकाकी अ० सौ० धर्मपत्नी श्रीमती धापांदेवी का आश्विन कृ० २ ता० २८ सितम्बर को गोलोकवास हो गया। सेठजी सपरिवार पृथ्वीके गोलोक की यात्रा कर रहे थे कि गोवर्द्धन धामके पावन स्थल पर श्रीमतीजी अक्षय गोलोक सिधार गईं। अपने पति एवं पुत्र के कन्धों पर चढ़कर उनका इस प्रकार भगवद्धामको प्रस्थान पूर्वपुण्योंका ही सूचक है। सेठजी स्वयं विज्ञ विद्वान् हैं अतः उनके लिए श्री भगवान् के —

जातस्य हि ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे नत्वं शोचितुमर्हसि॥
"अथवाऽब्द शतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवम्।"

के सिद्धान्तानुसार 'सम दुःख सुख स्वस्थ' रहना स्वाभाविक ही है।